# शंखनाद

[ वीर रस की कविताओं का संग्रह ]

प्रकाशक :

**लोक-सम्पर्क विभाग, पंजाब**

प्रकाशक :

निदेशक, लोक-सम्पर्क, पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्य, तथा
उप-सचिव, पंजाब शासन, चण्डीगढ़

१८८८ शकाब्द
(१९६६ ई०)

मुद्रित प्रतियां
१०,०००



मुद्रक :
नियंत्रक मुद्रण एवं लेखन-सामग्री, पंजाब, चंडीगढ़

---

कला—चमनलाल चक्रवर्ती एवं सोहनलाल दीवान; निष्पादन—क्षेमेन्द्र गुलेरी ;
सहायक—श्रुतिप्रकाश वाशिष्ठ

# धन्य धरा पंजाब की

○

प्रागैतिहासिक काल से ही पंजाब भारतीय संस्कृति और सभ्यता का केन्द्र रहा है। जिस समय सारा संसार अंधकार में डूबा हुआ था उस समय इसी धरती से द्यु-लोक के अनन्त अन्तराल में ज्ञान के सुपर्ण बहुत दूर तक उड़े। इस काल में वैदिक ऋषियों ने ज्ञान के नए क्षितिजों का निर्माण किया। रामायण काल ने राष्ट्र को काव्यपुरुष और मर्यादाएं प्रदान कीं और महाभारत काल ने गीता जैसा अमर ग्रंथ और क्षात्र धर्म की नई परिभाषा प्रस्तुत की।

इस प्रकार इतिहास के प्रारम्भ का सप्तसिन्धु और आज का पंजाब सदा से एक वीरप्रसू धरती है। इतिहास साक्षी है कि भौगोलिक स्थितियों ने पंजाब पर देश की रक्षा का दायित्व डाला हुआ है और इस प्रदेश को देश का खड्गबाहु होने का गौरव प्राप्त है। इसी लिए यहां के जुझारू वीरों ने विदेशियों के प्रत्येक आक्रमण को अपने वक्ष पर झेला और देश की हरावल में रह कर शौर्य के नए मानदण्ड स्थापित किए।

ईसा से ३२६ वर्ष पूर्व मकदूनिया के महान विजेता सिकन्दर की विकराल सेनाएं एक के बाद दूसरे राष्ट्रों को पद-ललित करतीं, कला भवनों का विध्वंस करतीं और मानव का सर्वसंहार करती हुई पंजाब आ पहुंचीं। पंजाब की धरती पर सिकन्दर की पहली टक्कर सिंह-पुरुष महाराजा पुरु से हुई। हिमालय से शौर्य वाले महाराजा पुरु और भारतीय वीर वाहिनियों द्वारा प्रदर्शित अप्रतिम वीरता से रणोन्मत्त सिकन्दरी सेनाओं के भारत विजय के स्वप्न खंड खंड हो गए। मद दलित सेनाएं जब वापिस लौटीं तो मालव, क्षुद्रक, सौभूति, शिवि, कठ, भूषिक आदि आयुध-जीवी गणतंत्रों ने सिकन्दर और उसकी सेना का रहा सहा गर्व भी उतार दिया।

इस के बाद खंडित यूनानी गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस ने किया। विजय दर्प से उन्मत्त सेल्यूकस को पंजाब की धरती पर अर्थशास्त्र के रचयिता महामति चाणक्य के नेतृत्व में चन्द्रगुप्त मौर्य की सेनाओं से न केवल मुंह की ही खानी पड़ी अपितु उपहार में अपनी प्राण-

प्रिय पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से करना पड़ा और गांधार तक का प्रदेश चन्द्रगुप्त को दहेज में प्राप्त हुआ ।

इस के बाद शक, पार्थियन, कुषाण और हूणों ने भारत पर प्रबल आक्रमण किए। पंजाब के युद्धप्रिय वीरों ने इनके आक्रमणों का अदम्य साहस से प्रतिरोध किया। महाराजा हर्ष के काल में यह प्रदेश धन्य धान्य और वैभव की दृष्टि से बहुत ही समृद्ध था।

हर्ष की मृत्यु के साथ ही उसका साम्राज्य बिल्कुल छिन्न-भिन्न हो गया और उत्तर भारत में छोटे छोटे राज्यों की स्थापना हुई। लाहौर में शाहिया राजवंश अस्तित्व में आया। इस वंश के राजाओं ने लगभग चार शताब्दियों तक बड़ी योग्यता और कुशलता से शासन किया। इस वंश के महाराजा जयपाल और महाराजा अनंगपाल ने भारत की मान मर्यादा और अखंडता की रक्षा की और महमूद गजनवी जैसे आक्रांता का अपूर्व बल-विक्रम से सामना किया तथा पेशावर तक के प्रदेश को उससे मुक्त करवाया।

इस के बाद का समय राजपूत काल नाम से विख्यात है। इसी काल में मुहम्मद गौरी से पानीपत के समरांगण में कई बार जान-लेवा संघर्ष हुए और लोगों ने अपने विलक्षण युद्ध-कौशल, व्यूह-रचना और शौर्य का परिचय दिया। हिन्दी के आदि महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के अनुसार महाकवि चन्द्रवरदाई ने अन्त में भारत के गौरव को अक्षुण्ण रखा तथा गौरी को सदा की नींद सुलाया। इन्हें जन्म देने का गौरव भी इसी धरती को है।

इस के बाद समानता, बन्धुत्व का प्रसार और भेदभाव का उन्मूलन करने वाले सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का प्रादुर्भाव हुआ। इन्होंने लोगों में व्याप्त कुसंस्कारों और कुरीतियों से मुक्ति प्रदान की और उन्हें स्वतन्त्रचेता और साहसी पुरुषों में परिवर्तित कर दिया। इनके परवर्ती गुरुओं ने गुरु नानक द्वारा संस्थापित परम्पराओं को न केवल आगे बढ़ाया अपितु गुरु अर्जुन देव जी और गुरु तेग बहादुर जी महाराज ने जातिहित आत्म-बलिदान दे करके इन्हें और समुज्ज्वल बनाया।

सन्त सिपाही गुरु गोबिन्द सिंह ने कर्मक्षेत्र में अवतरित होते ही निस्सत्व भारतीयों को दहाड़ते सिंहों में बदल दिया। उन्होंने भक्ति को शक्ति से संयुत करके पंजाब की वीर परम्पराओं को चार चांद लगा दिए। इनके बाद का काल

घोर अशांति का काल है। इस समय में पंजाब के लोगों को नादिर शाह, अहमद शाह अब्दाली आदि कई आततायियों से लोहा लेना पड़ा।

महाराजा रणजीत सिंह के सत्तारूढ़ होते ही पंजाब की वीर धरा दर्प से एक बार फिर गर्जना करने लगी। इससे अंग्रेज़ी शासन, जिसका आधिपत्य इतर भारत पर था, कांप उठा। महाराजा रणजीत सिंह के काल में पंजाब की सीमाएं उत्तर-पश्चिम में खैबर दर्रे, उत्तर में तिब्बत और पश्चिम में बलोचिस्तान तक जा पहुंची। वीर पंजाबियों की हुंकृतियों से भारत के शत्रुओं को स्वप्न में भी सुख की नींद नहीं आती थी। यह काल पंजाब के इतिहास का स्वर्णकाल था परन्तु महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु होते ही पंजाब अंग्रेज़ी कूटनीति का शिकार हो गया।

इस के बाद १५ अगस्त, १९४७ तक का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास है। इस सौ वर्ष से कुछ कम अवधि में पंजाब ने अपनी वीर परम्पराओं को और आगे बढ़ाया। वहां के लोग मन-प्राण से स्वाधीनता संग्राम में जूझते रहे।

वर्ष, १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में देश के अन्य भागों की तरह ही अम्बाला, फिरोज़पुर, सियालकोट, जेहलम, मियांमीर, थानेसर आदि स्थानों में सिपाही विद्रोह हुए। इस अवसर पर दिल्ली लौटते हुए अंग्रेज़ी सेना ने पंजाब के लोगों पर अकथ अत्याचार ढाए और लाहौर के किले में जिन भारतीय सैनिकों से शस्त्र रखवा लिए गए थे उन की बड़ी निर्ममता से हत्या कर दी गई। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से हो जाती है कि ३६,००० में से लगभग ३ हज़ार सिपाही ही अपने घरों को लौट पाए। फ्रैडरिक कूपर द्वारा लिखित "क्राइसिस इन दी पंजाब" और तत्कालीन ज्यूडीशल कमिश्नर राबर्ट मिंटगुमरी के आदेशों से उस समय के अंग्रेज़ी अत्याचारों और पंजाब के वीरतापूर्ण कृत्यों की झांकी मिलती है। 'काल्यां दा खूह' और 'काल्यां दा बुर्ज़' में हुए हत्याकांड ने "ब्लैक होल" को भी भुला दिया।

स्वाधीनता संग्राम में कूका अभियान ने एक नई चेतना जागृत की। इस आन्दोलन के संचालक नामधारी सम्प्रदाय के सतगुरु राम सिंह थे। इस अभियान के अहिंसक योद्धाओं ने सतगुरु-बाबा राम सिंह के नेतृत्व में अंग्रेज़ी साम्राज्य को भारत की धरती से निर्मूल करने के लिए अनुपम बलिदान दिए। परिणामस्वरूप गुरु जी और उन के प्रमुख १२ साथियों को देश से निर्वासित कर दिया गया।

जैसे जैसे अंग्रेज़ों का दमन चक्र बढ़ता गया वैसे वैसे पंजाब की धरती पर

स्वातंत्र्य चेतना भी बढ़ती गई। 'पगड़ी संभाल श्रो जट्टा', 'बब्बर अकाली लहर', 'भारतीय क्रांतिकारी', जैसे आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। इस के साथ ही विदेशों में रह रहे पंजाबियों ने स्वाधीनता के महायज्ञ में हँसते हँसते अपना बलिदान दिया। जापान, बेंकॉक, कैलिफोर्निया, पैरिस, बर्लिन, काबुल आदि स्थानों में इन स्वातंत्र्य प्रेमियों ने अपने केन्द्र स्थापित किए। कामा गाटा मारू और गदर पार्टी का संघर्ष भारतीय स्वाधीनता संग्राम का एक स्वर्णिम परिच्छेद है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में जलियांवाला बाग के निर्मम हत्याकांड ने आग में घी का काम किया। इस दुर्घटना ने ब्रिटिशशाही के कुकृत्यों पर से सदा के लिए पर्दा उठा कर रख दिया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय और अमर शहीद सरदार भगत सिंह तथा उन के साथी राजगुरु और सुखदेव आदि के अनुपम बलिदानों ने राष्ट्र के कण कण में एक नए ओज, एक नए साहस और एक नए बल-विक्रम का संचार किया।

इस प्रकार ज्ञात अज्ञात शहीदों के बलिदानों और अपूर्व तप-त्याग से १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्र-प्रभात का उदय हुआ। आज़ादी की सुवास से देश का घर-आंगन महक उठा, स्वतंत्रता की ज्योति से देश का कोना कोना जगमगाने लगा। परन्तु पंजाब की परीक्षा की घड़ियां अभी शेष थीं। इस प्रदेश को विभाजन का निर्मम आघात सहना पड़ा। शस्य-श्यामल यह प्रदेश एक बार फिर क्षत-छिन्न हो गया। भारत का 'अन्न भंडार' कहलाने वाला पंजाब अन्न के लिए दूसरों की ओर ताकने लगा। परन्तु साधुवाद है इस प्रदेश के लोगों को कि वे न केवल अपने पैरों पर ही खड़े हो गए अपितु पंजाब को एक बार फिर देश का 'अन्न भंडार' बना दिया। स्वातंत्र्यकाल में भाखड़ा-नंगल, चंडीगढ़ जैसे भारत के नए मंदिरों का निर्माण हुआ। जिससे देश भर ने नई प्रेरणा और नया उत्साह प्राप्त किया।

पंजाब की इन्हीं विलक्षण सफलताओं को देख कर राष्ट्र नायक श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, **मैं भारत के किसी एक भाग की दूसरे भाग से तुलना करना नहीं चाहता, परन्तु इतना जरूर कहूंगा कि पंजाब और पंजाबवासियों का उदाहरण हम सब भारतवासियों के लिए शक्ति तथा प्रेरणा का स्रोत है।**

इसी संदर्भ में वर्ष १९६२ में रणोन्मत्त चीन ने एकाएक जब भारत पर आक्रमण किया उस समय भारत ही नहीं, सारा संसार आश्चर्य-चकित रहगया। पर भारत की यह स्तब्धता बहुत देर तक नहीं रही और (शेष पृष्ठ १० पर)

# भारत के सजग कर्णधार

राष्ट्रपति डा० एस० राधाकृष्णन्

भू० पू० नौसेनाध्यक्ष बी० एस० सोमन
नौसेनाध्यक्ष ए० के० चटर्जी

सारा राष्ट्र एक राष्ट्र-पुरुष के रूप में उठ खड़ा हुआ । यह ठीक है कि उस समय सारे राष्ट्र ने जी जान से राष्ट्र रक्षा के महायज्ञ में आहुतियां डालीं । परन्तु पंजाब की जनता ने दूसरी रक्षापंक्ति के रूप में और इसके जुझारू सूरमाओं ने नेफा और लद्दाख के दुर्गम क्षेत्रों में जिस अप्रतिम शौर्य, विलक्षण साहसिकता और उदात्त देश भक्ति का परिचय दिया, उसका अन्यत्र उदाहरण मिलना असंभव है। परम-वीर चक्र विजेता सर्वश्री धन सिंह थापा और जोगिन्दर सिंह, शहीद ब्रिगेडियर होशियार सिंह एवं सिंह-शावक केवल सिंह जैसे शतशः सूरमाओं की कीर्ति-कथा भारतीय इतिहास में सदा सर्वदा स्मरणीय और अनुकरणीय रहेगी ।

पंजाब की वीर परम्पराओं की परिसमाप्ति यहीं ही नहीं हो जाती । विगत भारत-पाक संघर्ष में पंजाब की जनता और डोगरा, सिख और जाट वीरों ने अपने लहू से देश के इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय लिखा ।

जैसे ही उस पार के पड़ौसी ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन करके भारत पर खुला आक्रमण किया । बारमेड़ से लेकर हाजी पीर तक के समरांगणों में शत्रु के प्रत्येक प्रहार को अपने वक्ष पर झेला । सैबर संहारक नैट चालकों और वीर सैनिकों की शौर्य गाथाएं हर घर में दुहराई जाने लगीं । शत्रु के हवाई आक्रमण और छाता सैनिकों की धर-पकड़ यहां के लोगों के लिए एक विनोद का साधन बन गई । इस संघर्ष में पंजाब का हर गांव एक दुर्ग और हर व्यक्ति एक सिपाही के रूप में सन्नद्ध हो गया । इस प्रदेश की वीर प्रसू माताएं अच्छे से अच्छा भोजन पका कर और दूध की मटकियां सिर पर उठाए बमों और तोपों के गोलों के धमाकों और गोलियों की धारा-सार बौछारों में अन्तिम मोर्चे तक सीमान्त की रक्षा कर रहे जवानों को भोजन पहुंचाने लगीं, दूध पिलाने लगीं । लोगों में जवानों के स्वागत-सत्कार की होड़ लग गई । ड्राईवर, मकैनिक आदि सभी व्यक्ति देश-रक्षा के महायज्ञ में भय के बिना इस प्रकार जुट गए मानों उनका यह सब दैनिक कृत्य है ।

पंजाब के इस अप्रतिम साहस, समर्पित कर्त्तव्य परायणता, और उद्दाम देश भक्ति को देख कर भारत के यशस्वी सेनापति श्री जयन्तनाथ चौधरी ने कहा था कि **पंजाब के लोगों ने जिस कार्य क्षमता का परिचय दिया उसने स्टालिन-ग्राड के समरांगण में प्रदर्शित रूसियों की यशोगाथा को भी धूमिल कर दिया है ।**

ये हैं यशस्वी धरा पंजाब की कुछ झांकियां । धन्य है यह धरा और धन्य हैं इस के निवासी ।

—**श्रुतिप्रकाश वाशिष्ठ**

स्वतंत्र भारत के निर्माता जवाहरलाल नेहरू

हमारे मन में अपने देश की हिफाजत की बात है, लेकिन न्याय के साथ, इन्साफ़ के साथ हम सचाई से काम करना चाहते हैं। हमें बड़े धीरज और शान्ति के साथ, अभिमान से नहीं, काम लेना है। हम शान्ति बनाए रखते हुए इस बात का भी मन में पक्का इरादा रखेंगे कि हमारे देश पर कोई संकट आए तो हम सब मिल कर एक आवाज़ से बोलें, एक साथ खड़े हों। फिर हम जानते हैं कि हमारे देश का कोई बाल बांका नहीं हो सकता।

—लाल बहादुर शास्त्री

मेजर सोम नाथ शर्मा

परमवीर चक्र (अग्रभाग)

सैकिण्ड लैफ्टिनेंट आर० आर० राणे

हवलदार पीरू सिंह

लैंसनायक करम सिंह

नायक जदुनाथ सिंह

झंडा ऊँचा रहे हमारा

राष्ट्र का गौरव—तिरंगा झण्डा हाजीपीर पर

कुछ ग्रामीर जन भारत सेवकों

## सीमान्त के सतत सजग प्रहरी

खूब लड़े
भारत के मरदाने

नगाधिराज हिमालय के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर लहराता हुआ भारतीय तिरंगा

उद्वीक्ष्य को भुवि न विस्मयते नगेशम्

—माघ

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥
यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे ।
भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम् ॥
यज्ञाङ्गयोनित्वमवेक्ष्य यस्य सारं धरित्रीधरणक्षमं च ।
प्रजापतिः कल्पितयज्ञभागं शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत् ॥

—कालिदास
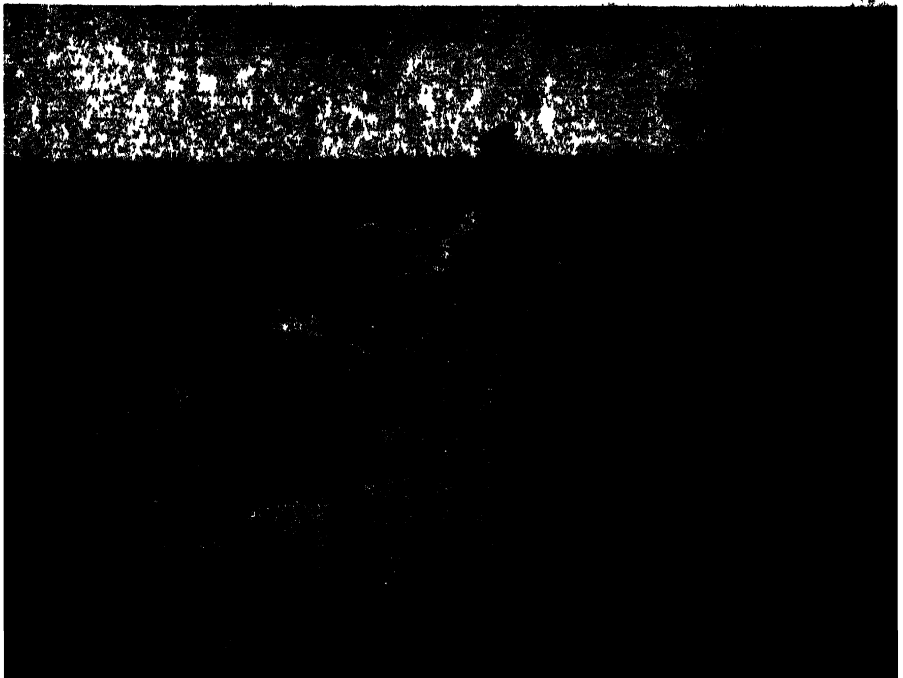
# वन्दे मातरम्

श्री अरविन्द

अपनी थल-जलधाराओं से हे श्रीशोभित !
फलापन्न-घन-उद्यानों से आभामंडित !
आनन्दोर्मिल पवनों से अपनी चिर शीतल !
अहरह पुलकित, कम्पित, घन-शस्यों से श्यामल !
कम्पित-तरु-शाखाओं औ' रजतिम ज्योतों पर,
चन्द्र-प्रभा के सपनों की महिमा वाणीतर,
चिरअभिराम-मुकुलित-वन-वैभव से आभूषित,
मंगलमयि, हम तव सरसिज-चरणों पर आश्रित,
हे मृदु-हासिनि, हे मितभाषिणि, भारत माता तुम्हें प्रणाम !

चमकीं जब तलवारें चालिस कोटि करों में,
गूंज उठीं हुंकारें चालिस कोटि उरों में,
कौन तुम्हें तब कहता दीना और मलीना ?
कौन तुम्हें कहता है अकर्मण्य, बलहीना !
पूरब-पच्छिम उत्तर-दक्खिन छोर-छोर तक,
देश-देश में दारुण नाम तुम्हारा व्यापक,
महती वीर्य-संचिता-सुशक्तियों की स्वामिनि,
हम पुकारते तुम को मां, राज्ञी, वरदायिनि,
परम-रक्षिके, परम-पालिके, भारत माता तुम्हें प्रणाम !

जिसने दिया न कभी डालने अरि को डेरा,
जल की थल की सीमाओं से सदा खदेरा,
फिर फिर करली अपनी भूमि स्वतंत्र दुलारी,
उसके चरणों में अर्पित सब प्रणति हमारी।
अरे तुम्हीं हो प्रज्ञा, नियम विधान तुम्हीं हो,
तुम्हीं हृदय औ' आत्मा, जग का प्राण तुम्हीं हो,
यम पर भी जय पाने वाले अंतर का बल,
दिव्य-प्रेम औ' अपराजेय महाभय-केवल,
काल कराला, प्रीति विह्वला, भारत माता तुम्हें प्रणाम !

तुम्हीं हाथ की नाड़ी और नसों का बल हो,
और तुम्हीं आकर्षण सुन्दरता केवल हो,
तुम माथे का चन्दन, आंखों का काजल हो,
काया की सुख-शय्या, आत्म-निलय जल हो !
जनम-जनम के मेरे पातक को गंगाजल,
मेरी सब कायरता को गीतामृत उज्ज्वल,
मन्दिर की सब दिव्य मूर्तियों में बस अविचल,
मिलती एक तुम्हारी ही झांकी है झिल-मिल,
हे वेदज्ञा, हे मंत्रज्ञा, भारत माता तुम्हें प्रणाम !
तुम दुर्गा हो, कुलांगना हो सब की रानी,
शत्रु-नाशिनी और क्रांति की खड्ग-वाहिनी,
अरे तुम्हीं कमल सीना माता लक्ष्मी हो,
औ' सहस्र-स्वरलहरी जननी सरस्वती हो !
दूर्वादल-श्यामल-तन-शोभे ! अतुलनीय हो,
आत्मा की अमला आभे ! तुम अद्वितीय हो,
दो हम को अब जननी अपनी पावन श्रुति दो !
दो हम को जननी अपनी निस्सीमा धृति दो !
हे शुद्धा, शुभ्रा, परिपूर्णा, भारत माता तुम्हें प्रणाम !
अपनी बल-जल-धाराओं से हे श्री शोभित !
फलापन्न-धन-उद्यानों से आभा-मंडित !
अरण्यकेशी, मरकतवेशी, किरण-झल्लरित !
उन्नतभाल-हिमालय, आत्मप्रभा से ज्योतित !
संस्कृति का कण-कण है जिस की स्मिति से दीपित,
जन-जन का अंतर जिस की ममता से पुलकित,
औ' समुद्र धोता है जिसके चरण-कमल नित,
सेवा में चालीस कोटि हैं सदा उपस्थित,
हे महीयस , हे गरीयसी, भारत माता तुम्हें प्रणाम !
दोनों हाथों अर्थ-अन्न बरसाने वाली,
नित वाणी से प्रेम-सुधा सरसाने वाली,
सब देशों से प्यारी हम को सब से न्यारी,
परम माधुरी, परम-सुन्दरी, जगत-दुलारी,
हे अभिरामा, विद्युद्दामा, जनम जनम के तुम्हें प्रणाम !

[ भावानुवाद : श्रीमती विद्यावती कोकिल ]

# सज्जाः भवन्तु अयि भारत-भू-सुपुत्राः

○

डा० देवीदत्त शर्मा

लंकेश्वरः खलु पुरा परितोष्य शम्भुं,
सम्प्राप शक्तिमतुलामतिमानवीयाम् ।
संरब्धवान् तुलयितुं शिखरं तमेव,
यत्र स्वयं वरमवाप महेश्वरात् सः ॥

सुना जाता है कि लंकेश रावण ने पहले तो भगवान् शंकर को प्रसन्न करके उन से अप्रतिम और अतिमानवीय शक्ति का वरदान प्राप्त कर लिया और फिर हिमाद्रि के उसी शिखर पर अपनी शक्ति को आजमाने लगा जहां उसने महेश्वर से उस शक्ति का वरदान प्राप्त किया था ।

चीनोऽप्ययं समभवत्प्रथमं तु शिष्यः,
कालान्तरे प्रियसुहृत्पदमभ्यतिष्ठत् ।
यस्माच्च शक्ति पदवीश्यमवाप्तमेवं,
तस्मिन्नहो ! क्षिपति सम्प्रति लुब्धदृष्टिम् ॥

इसी प्रकार चीन भी पहले भारत का शिष्य बना, फिर कालान्तर में 'प्यारा मित्र' बन गया । किन्तु आश्चर्य होता है कि जिसकी कृपा से उसने अपनी महती शक्ति, महान् पद तथा सुख सम्पत्ति को प्राप्त किया, अब उसी गुरु और मित्र देश को हड़पने के लिए गृद्ध दृष्टि डाल रहा है ।

जानाति वञ्चकसख : न कृतावमानी,
यल्लक्षकोटिरिह सन्ति भवांश जन्माः ।
तेष्वेकक : प्रखररौद्रस्वरूपमेत्य,
कोपानलेषु परिधक्ष्यति तस्य वर्गम् ॥

उस धोखेबाज दोस्त और कृतघ्न को शायद पता नहीं कि यहां पर भगवान् शकर के अंश से ही उद्भूत लाखों और करोड़ों मानव हैं, जिन में से हरेक भगवान् शंकर के रौद्ररूप को धारण कर के समूचे शत्रु दल को अपने क्रोध की धधकती हुई ज्वाला में भस्म कर डालेगा ।

पृथ्वी-प्रताप-रजिया-शिवराज-नाना-
लक्ष्मी-सुभाष-हरि-वल्लभ-लाल-तात्याः ।
पश्यन्तु बद्धनयनाः नरपुंगवास्ते ।
सज्जाः भवन्तु अयि भारतभूसुपुत्राः ।।

ऐ ! भारतमाता के सपूतो ! अब तैयार हो जाओ । पृथ्वीराज चौहान, राणा प्रताप, रजिया बेगम, शिवा जी, नाना फड़नवीस, लक्ष्मी बाई, हरि सिंह नलवा, तात्या टोपे, नेता जी सुभाष, वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपत राय, जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री आदि सभी नर-पुंगव तुम्हारी ओर आशा-भरी दृष्टि से देख रहे हैं ।

कर्पूर-गौर-शिखरं नु नगाधिपस्य,
पापीयसा कलुषितं निजपादचिह्नैः ।
संक्षालयन्तु पयसा रिपुघातिनस्तत्,
तस्यैव पामरकुलस्य शरीरजेन ।।

पर्वताधिराज हिमवान् के कर्पूर जैसे श्वेत शिखरों को पापी शत्रु ने अपने दूषित चरण-चिह्नों से कलंकित कर डाला है । हे शत्रुनाशक वीरो ! उठो और उस शत्रु के शरीर के रक्त से ही इन कलंकचिह्नों को धो डालो ।

अस्त्राणि यान्तु प्रलयानलसन्निभानि,
वर्षन्त्वजस्रमरिमूर्धनि बम्बधाराः ।
भूयाद् भवस्य नव ताण्डव नृत्यमेतत्,
दीर्यन्तु शत्रुहृदयानि जयाट्टहासैः ।।

हे वीरो ! तुम्हारे दूर-मारक अस्त्र प्रलय की आग की सी ज्वालाएँ उगलने लगें, शत्रुओं के ऊपर निरन्तर बमों की मूसलाधार वर्षा होने लगे, भगवान् शंकर का इस प्रकार का एक नया ताण्डव नृत्य होने लगे और तुम्हारी विजय के अट्टहास से शत्रुओं की छातियां ही दरक जाएं ।

# संकेतिका

पृष्ठ

पृष्ठ

पृष्ठ

# आभार प्रदर्शन

हम उन सभी कवियों के आभारी हैं, जिन्हों ने इस संकलन में प्रकाशनार्थ, बिना कोई भेण्ट लिए, अपनी ओजस्वी रचनाएं भेजने की कृपा की।

हमने कुछ कविताएं भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित "गूंजे जय जयकार" से ली हैं। एतदर्थ हम उक्त संकलन के सम्पादक श्री मन्मथनाथ गुप्त के आभारी हैं।

संकलक

# तुमने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है !

○

**श्री अंचल**

एक बार फिर अन्यायी पर तुमने भुजा उठायी है !

सीमाओं पर घिरे शत्रु को फिर तुमने ललकारा है,
आज तुम्हारे कंठ-कंठ में बलिदानों का नारा है,
ऐसा है इतिहास हमारा, ऐसा देश हमारा है,
यहां न जीता पापी अब तक, धर्मी कभी न हारा है,
फिर दुनिया को यही दिखा देने की बारी आयी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

जब-जब बजा युद्ध का डंका तुमने रक्त बहाया है,
रचे अजेय व्यूह ऐसे, बैरी भय से थर्राया है,
तुमने बारूदों के महलों में अंगार लगाया है,
बिछा तड़फ़ती लाशें तुमने आगे कदम बढ़ाया है,
तुमने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

ओ वीरों के महाद्वीप, ओ महाशौर्य की संतानो,
विश्व-शांति के ओ विश्वासी, मानवता के जयगानो,
आक्रान्ता अत्याचारी के सर्वनाश के अभियानो,
जननी के हिमवन्त भाल की महिमा के ओ आह्वानो,
नरभक्षी हूणों ने बर्बरता की आग लगायी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

खून हमारा ले-लेकर तुम बनो अजय औ अभयंकर,
हमें यहां से ज्योति तुम्हारी प्रतिक्षण दिखती दीपंकर,
आततायियों को दहलाता रहे तुम्हारा तेज प्रखर,
यह सत्ता का नहीं, स्वत्व की रक्षा का जयनाद अमर,
आज तुम्हीं में जन-जन के जीवन की ज्योति समायी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

तुम संगीनों की नोकों पर उगी अमरता के भागी,
महावीर्य के सोये सागर में बाड़व ज्वाला जागी,
मां के चरणों पर अर्पित तुमने जीवन-तृष्णा त्यागी,
कब आज़ादी के बन्दों ने शोलों से पनाह माँगी ?
फिर अन्यायी ने स्वदेश सीमा पर घात लगायी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

बढ़ो हथेली पर सिर लेकर हम भी पीछे आते हैं,
विजय-पताका नहीं झुकेगी यह विश्वास दिलाते हैं,
घर-घर में उभरे साहस के ज्वालागिरि अकुलाते हैं,
क्षुब्ध, छिन्न-मस्तक मां की सौगन्ध तुम्हें पहुँचाते हैं,
अपनी मुंडमाल तुमने जय-श्री पर सदा चढ़ाई है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

# रक्त गंध

●

श्रीमती अमृता प्रीतम

मैत्री के उस एक फूल से देखो भभक खून की आई।
चढ़ी त्यौरिया स्वाभिमान की,
देह पसीना हुआ, सभ्यता, शील, आन की
और शान्ति ने दांतों तले ज़बान दबाई।
रक्त गंध है श्याम रात में, रक्त गंध गोरे प्रभात में।
विश्वासों का खून गिरा जो, नस-नस में अब खौल उठेगा
मिट्टी को चूमेगा मिट्टी के कन-कन से बौर उठेगा।
रक्त गंध माटी में मिल कर कनक-फसल में भर जाएगी
रक्त गंध माटी से उठ कर लेखनियों में रच जाएगी।
इतिहासों की साँसों में यह गंध रहेगी
आघातों की थाती बन कर क्या न कहेगी
इतिहासों की छाती पर यह नक्श उभर कर रह जाएगी,
रक्तपात के इस कुकर्म से सदा भविष्यत् शरमाएगा।
यह जो इनसानी हाथों का खून बहा है
यह जो इनसानी हाथों पर ज़ख्म लगा है।
सुन्दर हाथ वही हैं ये जो फूल उगाते।
प्रणयी हाथ वही हैं ये रूप मदमाते
ये हैं हाथ कला के, जो संगीत जगाते
ये हैं कृती हाथ, जो सपने पूर्ण बनाते
ये हैं वही हाथ जो पानी, हवा, अग्नि पर बाँध उठाते
जो सूरज को बना अंगीठी फूंक जलाते

पृथ्वी की अलकों को हाथों से सँवारते ।
कसम तुम्हें फूलों-अलकों की ज़ख्मी हों न हाथ ये प्यारे ।
ये रचना के हाथ न बन पाएँ हत्यारे
हाथों की रक्षा में, साथी अपने-अपने हाथ उठाओ
अत्याचारी हाथ हुए जो उन्हें आज मोड़ते जाओ
हत्यारे जो हाथ बने हैं उन्हें आज तोड़ते जाओ ।।

रूपान्तरकार : श्री गिरिजाकुमार माथुर

# नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई

○

**श्री आनन्दनारायण शर्मा**

शब्ददान दे चुके बहुत अब रक्तदान की बेला आई !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

आततायियों के दल ने फिर
सीमाओं पर कदम बढ़ाया,
गर्वीले मस्तक को मर्दित
करने का साहस दिखलाया,
हिमशिखरों पर आग लगी है
धधक उठी है सघन बनानी,
लिए रक्त का खप्पर कर मे
नाच रही उन्मत्त भवानी:
संगीनें ले खड़ा शत्रु जो करनी है उस की पहुनाई !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

यह सीमा-संघर्ष नहीं है,
प्रश्न आज सारे भारत का,
पली सदा जो बलिदानों में
उस आज़ादी की इस्मत का,
आज़ादी पाने से मुश्किल
लू-लपटों से उसे बचाना,
लिए हथेली पर सिर अपना
बढ़कर उसका मोल चुकाना;

आँख निकालो उस दुश्मन की, जिस ने तुम को आंख दिखाई !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

भारत पर आक्रमण न केवल
पावन संस्कृति पर हमला है,
समता, सत्य, न्याय, करुणा को
शत्रु आज रौंदने चला है,
उपकारों का तलवारों की
भाषा में प्रतिदान मिला है,
दुनिया देखे दिया मित्र ने
मैत्री का कैसा बदला है !
मानवता के शांति सदन पर, दानवता की हुई चढ़ाई !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

जागो राम-कृष्ण के वंशज,
चन्द्रगुप्त के असिव्रतधारी,
जागो ओ अशोक के अविजित
प्रबल पराक्रम के अधिकारी,
राणा की दुर्धर्ष वीरता
और शिवा के कौशल जागो,
शेरशाह अकबर के तेवर,
कुँवर सिंह के भुजबल जागो;
हो प्रतिकार अनय का ऐसा, पास न फटके फिर अन्यायी !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

○

# मत समझ लेना कि गंगा में भँवर आते नहीं हैं !

○

**श्री आनंद मिश्र**

शान्ति के वातावरण में युद्ध की आवाज़ कैसी ?
गोलियों की गूँज से काँपी हिमालय की तराई,
यह सृजन के द्वार पर विध्वंस की ललकार क्यों है ?
बीन बजने के समय किसने यहां भेरी बजाई ?

विश्व-मानव के उपासक, सृष्टि-रचना में लगे हम,
कौन सीमा पर हमारी आन को ललकारता है ?
कौन यह सोए हुए तूफान को ललकारता है?
जागरण के दूत, हिन्दुस्तान को ललकारता है !

चीन ! विस्मय है, दिया हमने सदा जिसको उजाला,
चीन ! जिसका दर्द, अपना दर्द ही हम जानते थे,
चीन ! जिसकी हर समस्या थी हमारी ही समस्या,
चीन ! भाई की तरह जिसको सगा हम मानते थे।

विश्व सारा जानता है, चीन पर जब आँच आई,
कौन था जिसने तपन को शीश-माथे ले लिया था ?
कौन था जिसने बिछाए मित्रता के फूल पथ पर,
कौन था जिसके हिमालय ने इसे आँचल दिया था ?

और केवल चीन क्या ! इस सृष्टि के पहले चरण-से,
चाहते हैं हम, सदा फूले-फले संसार सारा,
चाहते हैं हम कि हर क्यारी बने जग का बग़ीचा,
मानते हैं हम कि यह सारी धरा है घर हमारा।

मानवी-सम्वेदना के देश भारत के हृदय ने,
एक अपने घर नहीं, हर द्वार पर दीपक जलाया,
आग चाहे जिस कुटी के जीर्ण-छप्पर में लगी हो,
आँसुओं की धार से हमने उसे बढ़कर बुझाया।

मानवी-सम्वेदना के देश भारत ने अभी तक,
क्या दिया संसार को ? यह बात कहने की नहीं है,
धर्म, दर्शन, कर्म, समता, ज्ञान की गंगा सनातन,
इस घटा के प्यार की बरसात कहने की नहीं है।

स्वार्थ, लिप्सा, भूमि का विस्तार, सत्ता की पिपासा,
कौन-सी यह भूख, भारत की तरफ उंगली उठाओ !
कौन-सा यह दम्भ तुमको आज अन्धा कर गया है ?
और हम चुप हैं कि शायद भोर तक घर लौट जाओ।

युद्ध से उतनी घृणा हमको, अमन से प्यार जितना,
हम सृजन की बाँसुरी की तान को पहचानते हैं,
किन्तु इतनी बात सुन लेना सजग होकर ज़माने !
हम किसी अन्याय के आगे न झुकना जानते हैं।

बूंद-से जापान ने आधी-सदी जिसको डुबाया,
आज भारत का महासागर उसे खलने लगा है ?
तो उठाकर आंख देखो, एक दिल्ली की कहें क्यां,
आज सारा देश यह बारूद बन जलने लगा है।

तुम समझते हो कला रण की तुम्हीं बस जानते हो ?
युद्ध का सन्देश भारत के लिए कोई नया है ?
तो बतायें हम तुम्हें, यह भ्रान्ति का परदा उतारो,
व्यूह का भेदन यहां पर गर्भ में सीखा गया है।

खून की होली जिन्हें दिन-रात रागों की दिवाली,
व्योम से पूछो कि जिनकी गर्जनायें सुन चुका है,
आग से खेली जवानी, मौत से जूझा बुढ़ापा,
दाँत शेरों के यहां सौ-बार बचपन गिन चुका है।

इस तरह सपना न देखो, पार करना है असम्भव,
तुम बहुत बौने, हिमालय का बहुत ऊँचा शिखर है,
आज भी गाण्डीव की टंकार में उतना वज़न है,
आज भी इस देश की तलवार में उतना ज़हर है।

वे हठी, मानी मरहठे वीरवर उठकर खड़े हैं,
शूर-बलिदानी शिवा-का खड्ग पंजों में दबाए,
और ये रजपूत जिनकी आन दुनिया जानती है,
बिजलियाँ जिनकी कटारें, वज्र-सा भाला उठाए।

पिल पड़े हैं तो, न मरकर भी कि जो पीछे हटे हैं,
लाडले 'गोविन्द' के दौड़े कहीं लेकर दुधारे,
एक चीनी तक न दर्शन को मिलेगा भूमि-भर में,
कौन-से नक्षत्र जाने पड़ गए पीछे तुम्हारे ?

खुखरियां लेकर चले ललकारते गुरखे दिवाने,
आयतें पढ़ने लगे हैं, ये मुहम्मद के बली हैं,
हम तुम्हें समझा रहे हैं, आज भी घर लौट जाओ,
रोष की चिनगारियां, देखो, मशालें बन चली हैं !

दुधमुंहे बच्चे जहां के चुन गए दीवार तक में,
मुस्कराहट भी न जिनकी छीन पाया था ज़माना,
लाल ऐसे ही हमारी वीर-मिट्टी ने जने हैं,
सिर कटाना ठीक है जिनको, ग़लत गर्दन झुकाना ।

और मां-बहनें हमारी, शक्ति का अवतार जैसे,
देश के सम्मान पर निर्भीक मिटना जानती हैं,
मुण्डमाला से किए शृंगार दुर्गा बन गईं तो,
खून मेंहदी सिर्फ, ज्वाला सिर्फ उबटन मानती हैं ।

मत समझ लेना कि गंगा में भंवर आते नहीं हैं,
यह जगी है तो समन्दर की तरह लहरा गई है,
मत समझ लेना हिमालय के पहरुए सो रहे हैं,
आज 'भूषण' की कलम मेरे करों में आ गई है ।

ये गरजना नहीं, केवल बरसना ही जानते हैं,
ये बढ़े तो मूढ़! 'पीकिंग' को प्रलय का गान देंगे,
ये बढ़े तो शान्तसागर को तली तक छान देंगे,
चीन की दीवार पर सौ-सौ तिरंगे तान देंगे।
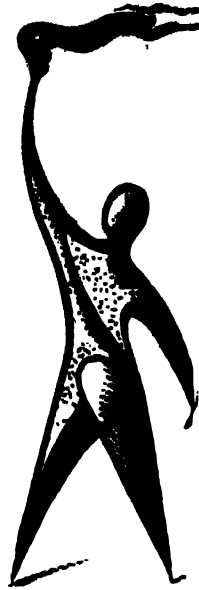
# झूम-झूम कर आयी पावन वेला है बलिदान की

श्री आरसीप्रसाद सिंह

झूम-झूम कर आयी पावन
वेला है बलिदान की ।
ओ भारत के वीर, लगा दो !
बाज़ी अपने प्राण की ।
वेला है बलिदान की ।।

सीमा से ललकार उठी है,
घाटी आज पुकार उठी है ।
टकराने दो तुम तलवारें !
शपथ तुम्हें भगवान की !
वेला है बलिदान की ।।

मातृ-भूमि की आन बचाओ !
रणचण्डी की प्यास बुझाओ !
मर-मिट जाओ, अगर ज़रा भी,
लाज तुम्हें अपमान की !
वेला है बलिदान की ।।

ओ भारत के वीर, लगा दो !
बाज़ी अपने प्राण की ।
वेला है बलिदान की, वेला है बलिदान की ।।

# अक्षर अक्षर बोल रहा है अपनी अमर कहानी

○

**श्री इंद्रजीत सिंह 'तुलसी'**

ज़ख्मी होकर आज हिमालय ने है हमें पुकारा,
होशियार हो ! वीर सिपाही तू ही एक सहारा !

जाग जगा दे सारा,
जागे देश दुलारा ।
जीने देश हमारा ।।

शीश हथेली रख के निकलो आखिर जीत हमारी है,
हमें कूद जाना होगा यदि आग का दरिया जारी है;
कितनी बार बियाहा इसको फिर भी मौत कुँआरी है,
चला ब्याहने आज दुल्हनियाँ अपना इश्क कुँआरा ।

पंजाबी, रजपूत, मराठे, लड़ना इनकी आदत है,
नरमुंडों की माला से ही करनी आज इबादत है;
गुरुओं के बेटों ने फिर से पानी आज शहादत है,
शीश कटा कर नाच भांगड़ा बाँके सिख सरदारा ।

तर ऊँचे मन्दिर के यह किसने कलश उतारे हैं,
गिरजा के गिरवाने को यह किसने हाथ पसारे हैं;
मस्जिद के गुम्बद हैं घायल, ज़ख्मी गुरु के द्वारे हैं,
सावधान ! बचने नहिं पाए गौतम का हत्यारा ।

दुनिया के कुल पर्वत लेकर वज़न करें कुर्बानी का,
फिर भी पलड़ा भारी होगा, अपनी जोश-जवानी का;
अक्षर-अक्षर बोल रहा है अपनी अमर कहानी का,
युग-युग के इतिहासों का है हमने रूप निखारा ।

वह कवियों की कलम चली है रूप धार तलवारों का,
तूफानों में नौका डाली किसको फिक्र किनारों का;
शीश कटाने की बेला में किसको होश नज़ारों का,
फूलों के होठों से निकला शबनम और शरारा ।

साम्राज्य का हर-इक हल्ला पहले हाथ पछाड़ेंगे,
हमलावर की लाश-लाश पर नरसिंघे चिंघाड़ेंगे;
दुश्मन के सीने में करके छेद तिरंगा गाड़ेंगे,
दाँत तोड़कर अजगर के अब करना बन्द पिटारा ।।

ज़ोर लगा दे सारा, जागे देश दुलारा । जीते देश हमारा ।।
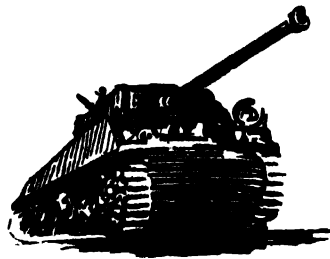
# भड़क उठे हैं मंदिर, मस्जिद, गरज उठा गुरुद्वारा है

○

**श्री उदयभानु 'हंस'**

दिन आया बलिदान का,
लोभ न करना प्राण का,
उठो जवानो कूच करो रण का बज रहा नगारा है,
दुष्ट चीनियों ने भारत के पौरुष को ललकारा है।

तुम को अपने उपवन की रक्षा करनी है आग से,
सावधान रहना है हर क्षण उस ज़हरीले नाग से।
तीखी छुरी बग़ल में उसके, मुंह में रहता राम है,
सारी दुनिया से कड़वा है फिर भी 'चीनी' नाम है।
पड़ो न उस की चाल में,
कुछ काला है दाल में,
'हिंदी-चीनी भाई-भाई', उस का झूठा नारा है,
वह बौद्धों का वंशज है, पर गौतम का हत्यारा है।

याद करो तुम वीर शिवा, राणा प्रताप की आन को,
तांत्या टोपे, लक्ष्मी बाई औ' टीपू सुलतान को।
तुम सुभाष तुम भगत सिंह के सपनों की तसवीर हो,
सवा लाख के साथ अकेले लड़ने वाले वीर हो।
हिंदू सिख ईसाइयो,
जागो मुस्लिम भाइयो,
आज तुम्हारे नील गगन पर छाया 'लाल सितारा' है,
भड़क उठे हैं मन्दिर, मस्जिद, गरज उठा गुरुद्वारा है।

पालन आज ज़रूरी है नेताओं के आदेश का,
जो अनुशासन नहीं मानता, वह दुश्मन है देश का।
तुम स्वार्थी भ्रष्टाचारी घरफोड़ों को फटकार दो,
दुश्मन से पहले उन ग़द्दारों को गोली मार दो।

सुनो क्रांति के राहियो,
बाँके वीर सिपाहियो,

शक्ति एकता की, संकट में सब से बड़ा सहारा है,
भीषण तूफानों में भी मिल जाता स्वयं किनारा है।

आज समय है मांग कर रहा हर मज़दूर किसान से,
अधिक अनाज उगाना है अब तुम्हें खेत-खलिहान से।
कवियो! नभ से उतर पड़ो, लो धरती का आधार भी,
सिर्फ़ लेखनी नहीं, चलानी है तुम को तलवार भी।

तन मन धन सब वार दो,
माँ का कर्ज़ उतार दो,

तुम्हें देख माँ की छाती से बही दूध की धारा है,
तुम हो भारतवर्ष देश के, भारतवर्ष तुम्हारा है।

आज देश के संकट में सब भारतवासी एक हैं,
क्या पंजाबी, क्या बंगाली, क्या मदरासी एक हैं।
काले बादल बिखर रहे हैं निकल रही फिर धूप है,
कंकर-कंकर भी अब शंकर-प्रलयंकर का रूप है।

कह दो उस नादान से,
रहे दूर हिमवान से,

सीमा के उन अमर शहीदों से मिल चुका इशारा है,
पाँव बढ़ा कर देख लिया, यह बर्फ़ नहीं, अंगारा है।

# हम से बैर ठानना, मौत को बुलाना है !

○

श्री उदयशंकर भट्ट

यद्यपि हम सत्य के, अहिंसा के,
उदारता के, दया और क्षमा के,
सच्चे ज्ञान-साधक हैं, किसी को नहीं बाधक हैं ।
यद्यपि हम जीने के,
जीवनीय तत्वों के.
सत्य के महत्वों के नायक अनुगायक हैं,
यद्यपि हम वंशज हैं निज अस्थि-दाता के
दधीचि के, दिलीप के, शिवि से महीप के,
किन्तु हैं अकारण दुष्ट खल-दल के त्रासक हम
वैरी के विनाशक हम ।
काल हैं क्रूर के, मौत के विधाता हम,
मौत लिए फिरते हैं मुट्ठी में खिलौने सी,
हम से बैर ठानना,
हमारी भूमि छीनना,
हम को दबाना, गुर्राना, दिखलाना बल,
सुप्त सिंह को जगाना है,
मौत को बुलाना है ।
हम अपरिहार्य हैं
हम हैं अजेय अरि,
मृत्यु है हमारे लिए
'मात्र वस्त्र-परिवर्तन'
परिवर्तन 'बचपन का जवानी में'

हम नहीं डरते हैं
हम नहीं मरते हैं,
मृत्यु नहीं हम को है,
आत्मा अमर है, अमर के गीत गायक हम,
जीवन के धाता हम
विधाता निज भाग्य के हैं,
मृत्यु संग खेलते, किसी से नहीं हारते,
हम अनादि और हम अनन्त अविनाशी हैं,
आत्म-विश्वासी,
कर्म-ज्ञान के विलासी,
पतझड़ में वसन्त प्राणवन्त कुसुमाकर हैं,
तम में दिवाकर,
घूप अंधेरी के निशाकर हैं,
मेघों में गर्जन हैं,
बड़वा हैं सागर के,
आँधी में उपजे हम—
वज्र प्राण-वाहक हैं,
क्रोध है हमारा, काल—
शम्भु-व्याल फूत्कार,
हाड़ मांस वाले पर, वज्रदेह वाले हम,
सोतों को जगाया है, देखो परिणाम अब
देखो, नि:शेष नाम,
शांति में शिव हैं हम,
अशान्ति में प्रचण्ड रुद्र,
क्रुद्ध विषपायी,
मृत्यु-भक्षी हम भारतीय ।

# बलशाली के लिए जगत में कुछ भी तो प्रतिकूल नहीं

○

**श्री ओमप्रकाश आनंद**

पतझर की घबराहट से ही झर जाए वह फूल नहीं ।

चंचल नदियाँ नहीं पूछतीं, अपनी राह किनारों से,
झंझा का झोंका कब रुकता पर्वत की मनुहारों से ।
तांडव को गति में जो बाँधे ऐसा कोई दाव कहो,
जो बहाव के उलट चले उसको ही सच्ची नाव कहो ।
जो साधारण झोंकों से ही टूट रहे मस्तूल नहीं,
लहरों की टकराहट से ही गिर जाए वह कूल नहीं ।

कोमल किरण सवेरे की जब आ जाती है तीर पर,
अपनी राह बना लेती गहरा अन्धेरा चीर कर ।
नन्हा अंकुर उग आता धरती की छाती फाड़ कर,
नन्हे-नन्हे डग भरता सैलानी चढ़े पहाड़ पर ।
बलशाली के लिए जगत में कुछ भी तो प्रतिकूल नहीं,
पतझर की घबराहट से ही झर जाए वह फूल नहीं ।

संध्या के सुन्दर रंगों पर रजनी को अभिमान कहां,
अनखीले रेतीले थल को बादल का सम्मान कहां ।
मत्त शलभ के जल जाने की दीपक को परवाह नहीं,
मंज़िल तक बढ़ने वाले की रुकती कोई राह नहीं ।
ठोकर खाकर भी सिर पर जो चढ़ न सके वह धूल नहीं,
पतझर की घबराहट से ही झर जाए वह फूल नहीं ।

# अभी समय है चेत अरे चाऊ-माऊ

○

**श्री ओमप्रकाश वर्मा**

अभी समय है चेत अरे चाऊ-माऊ, फिर ऐसा मौका शायद हाथ न आयेगा

जिनका सर रहता है हर वक्त हथेली पर,
ये राजस्थानी शेर बड़े मरदाने हैं ।
जिनसे टकरा कर गोली टुकड़े हो जाती,
पंजाबी छाती फौलादी चट्टानें हैं ।
यदि फिर प्रताप, गोविन्द, भगतसिंह जाग गए,
तो दुनिया भर में कोलाहल मच जाएगा ।।

हैं राम-भरत के वंशज अभी अयोध्या में,
धरती को निशिचर दल से मुक्त कराने को ।
कान्हा का चक्र सुदर्शन फिर चल सकता है,
दुःशासन, दुर्योधन का दर्प मिटाने को !
सेल्यूकस की हरकत का मजा चखाने को,
हर पटना वासी चंद्रगुप्त बन जाएगा ।।

हैं असम, असम के लोग नहीं रखते सानी,
नागाओं को है नाज़ निशंक जवानी पर ।
कितने सुभाष बंगाल अभी दे सकता है,
गर्वित दक्षिण टीपू की अमर कहानी पर ।
फिर कहीं भड़क उट्ठा मरहट्ठी खून अगर,
'चव्हान' शिवा का रूप स्वयं बन जाएगा ।।

फिर आज फतेहगढ़ की दीवारें बोल उठीं,
लाखों अजीत ज़ोरावर बलि हो जायेंगे ।
फिर तोड़ चीन के चक्रव्यूह के दरवाज़े,
अर्जुन के बेटे पीकिंग में घुस जायेंगे ।
भारत के बच्चे बड़े हठी यदि बिगड़ गये,
किसकी हिम्मत जो इनसे आँख मिलायेगा ।।

जा लौट ! अगर भारत की नारी जाग उठी,
लक्ष्मीबाई का क्रोध न रुकने पायेगा ।
जब कदम कदम पर दुर्गा गर्दन माँगेगी,
छोटे-छोटे पाँवों से भाग न पायेगा ।
जब गंगाजल की तरफ बढ़ाया कदम अगर,
तो चीन तुम्हारा चीनी सा घुल जायेगा ।।

सिर चढ़ा-चढ़ा आज़ादी के दीवानों ने,
जो उजड़ गया था फिर से बाग़ लगाया है ।
इस शान्त तपोवन में उत्पात मचाने को,
रावण संन्यासी-वेश बनाकर आया है ।
मत पंचवटी में घुसने की कर नादानी,
यह लक्ष्मण-रेखा पार न कर, पछतायेगा ।।

# पीत ज्वर

○
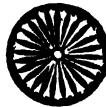
**श्री ओलम्पमण्णा सुब्रह्मण्य नंबूद्रिपद**

बिना किए भोजन की चिन्ता,
बिना किए निद्रा का ध्यान,
अडिग खड़े लद्दाख क्षेत्र में
हे भारत के वीर जवान!
देख-देख कर धैर्य तुम्हारा कांप रहे हैं अरि के प्राण,
दहकाती चलती रिपुओं को भारत की यह अग्नि-कृपाण।
मन में भर उत्साह, राह हम देख रहे हैं विकल अधीर,
तभी मनाएंगे हम 'ओणम्' जब तुम लौटोगे हे वीर।
मण्णर काट-निवासी हूं मैं तुच्छ जीव, पर मेरी आँख,
देख रही है, अपने पुर की सीमा आज बना लद्दाख।
गिरता वायुयान से भोजन, किन्तु कहाँ है तुमको भूख,
झटपट थोड़ा-सा खा के तुम हाथों में लेते बन्दूक।
सम्मुख भोजन, फिर भी तुमको दीख रहा है अरि खूँख्वार,
राज्य-प्रसार-मोह का जिस पर चढ़ बैठा है आज बुखार।
कठिन शीत में जब पल भर को चादर से लेते मुंह ढाँप,
ध्यान शत्रु का करके तब भी वीर हृदय में उठता ताप।
बिना किए भोजन की चिन्ता, बिना किए निद्रा का ध्यान,
डटे हुए हो जब तुम रण में, हे भारत के वीर जवान!
तो फिर चाहे दीवाली हो, या हो होली का त्योहार,
तो फिर चाहे 'ओणम्' आए, या 'पोंगल' की नई बहार।
पर हम कैसे खुशी मनाएं, कैसे भूलें यह अवसाद,
कैसे हम बिसरा दें तुमको, जो पल-पल पर आते याद।

शीत-मृत्यु से टक्कर लेते, अरि के सम्मुख सीना तान,
जब तुम जूझ रहे हो तब क्या हम गाएं उत्सव के गान ?

छलनी हो जाती जब छाती झेल शत्रु का गोली-बार,
पर्वत की चोटी से तब भी कहते हो तुम यही पुकार।

वीर नहीं डरते मरने से, मरण हमें है मात्र विनोद,
नहीं बर्फ़ की सेज, मिली है हमें उष्ण माता की गोद।

बंधु, तुम्हारे मुख से सुनकर वीर-वीर ये स्वर अम्लान,
मेरे मानस में बैठा कवि गा उठता है गौरव गान।

धन्य-धन्य हे बन्धु मिली जो तुम्हें मृत्यु यह दिव्य महान्,
महावीर तुम, अमर रहेगा सदा तुम्हारा यह बलिदान।

मातृभूमि के हेतु बहाई तुमने जो शोणित की धार,
वही हमारे तन में प्रतिपल उठा रही है नूतन ज्वार।

और तुम्हारे वीर श्वास हे बन्धु आज बन कर तूफ़ान,
जन-जन के मन में भर जाते हैं मर मिटने का अभिमान।

पंद्रह साल पूर्व भी ऐसा ही उमड़ा था वह तूफ़ान,
भारतीय वीरों ने जीता सत्याग्रह का समर महान्।

महाराज्य वह जिसमें सूरज कभी नहीं होता था अस्त,
तम के शासन ने उस को ही लील लिया था करके त्रस्त।

मुक्ति मन्त्रदाता गाँधी ने आत्मिक बल की जला मशाल,
सत्य-अहिंसा के बल पर तब मेटा तम-शासन-विकराल।

उदित हुआ सौभाग्य-सूर्य फिर, बची देश जीवन की लाज,
उसी लाज की रक्षा में तुम वीरो ! डटे हुए हो आज।

भारत की उस मुक्ति-कथा का साक्षी है सारा इतिहास,
उसके ही स्वर दुहरा करके करता हूं मैं शान्ति प्रयास।

सावधान करता हूं रिपु को, लेकर मन में नई उमंग,
हटो मुक्त भारत की भू से, हटो धरा के बर्बर व्यंग।

दीन-हीन ओ चीन, बढ़ाओगे
यदि पुण्यभूमि पर पैर,
तो निश्चित है पतन तुम्हारा,
तो फिर नहीं तुम्हारी खैर।

हिमगिरि हिले, किन्तु हिमगिरि पर
डटे हुए जो सीना तान,
कभी नहीं विचलित होने के
वे भारत के वीर जवान।

रूपान्तरकार : श्री भारतभूषण अग्रवाल

# ललकार

○

**डा० कन्हैयालाल सहल**

कभी-कभी उसका यौवन-शिशु
मचल-मचल उठता था चंचल
"मरण-महोत्सव व्यर्थ तुम्हारा जीवन का सुख भोगो अविचल।"

कुल की मर्यादा तब आकर
उस को निज कर्त्तव्य बताती
भाँवर लेते वेदी मे भी अश्व-पीठ का पथ दिखलाती।

चलता-फिरता स्तम्भ विजय का
अगणित प्राणों का जीवन-धन
कभी धराशायी होता था रो उठते तब कोटि-कोटि मन!

जो मृत्यु-मुकुट सिर पर रख कर
भुज-पाश काल से भरता था
गिरिराज-सरिस जिस की गरिमा धरती का कण-कण धरता था।

जब था यह नभ गिरने लगता
वह अपना स्कन्ध लगा देता
उसका यह अनुपम शौर्य सैन्य में जीवन-ज्योति जगा देता।

रोप अंगदी चरण युद्ध में प्रभु को भी ललकार लगाता
"अगर भगाना हाथ ईश के देखूं कैसे मुझे भगाता!"

# शपथ तुम्हें गंगा की

○

**श्री कमलाकर**

आज शत्रु की रक्तधार से हिमगिरि को नहलाओ,
महाकाल की मुण्डमाल में चीनी मुण्ड चढ़ाओ ।

पंचशील की और शांति की बातें बहुत भली हैं,
पर वे क्या समझें जो बिल्कुल जाहिल हैं, जंगली हैं,
भाषा नहीं अहिंसा की समझें खूंखार दरिंदे—
प्रलयंकरी भवानी का कुछ चमत्कार दिखलाओ ।

हिन्द-सपूतो उठो दृष्टि डालो निज गौरव-धन पर,
अंगुलि पर गिरिराज उठाया नचे नाग के फन पर,
अरे तुम्हीं हो वे कि जिन्होंने अनगिन दैत्य पछाड़े,
कलि-युग के रावण कंसों को फिर यमपुर पहुंचाओ ।

कितनी बार मुहम्मद गौरी तुम से ही हारा था,
और सिकन्दर को तुम ने ही पुरु बन ललकारा था,
अस्सी घावों के गहनों से सज कर तुम्हीं लड़े थे,
बलि की बेला आई फिर से जूझो कीर्ति कमाओ ।

बापू की आत्मा पुकारती आज़ादी मत खोना,
भामाशाह स्वर्ग से कहते दे-दो सारा सोना,
बढ़कर मारो दुश्मन को कहती झांसी की रानी,
कहते शिवा, प्रताप बैरियों पर बिजलियां गिराओ ।

भगत सिंह कह रहा "वतन पर मर जाओ हँस हँस कर",
"युद्ध करो" गीता कहती "तुम आत्मा हो अजरामर",
आन हिमालय की है तुम को शपथ तुम्हें गंगा की,
वीर जवानो उठो शत्रु पर प्रलय मेघ बन छाओ।

आज चीन ने फौजी ठोकर दी है वेद-ऋचा पर,
रे, अधर्म ने हमला बोला है गंगा-यमुना पर,
संकट आया पुरी, अवध पर, वृन्दावन, काशी पर,
फिर गांडीव उठाओ अरि पर अंगारे बरसाओ।

क्या लद्दाख और नेफा क्या, बढ़कर शौर्य दिखाओ,
चीन-भीत तक दुष्ट चीनियों को तुम मार भगाओ,
सिंहनाद कर उठो वज्र बन कर टूटो दुश्मन पर,
अरिदल हाहाकार करे ऐसा संग्राम मचाओ।

# ओ भारत मां के लाल, उठो !

श्री कुलदीप 'सिन्धु'

यह न्याय नहीं, ले चला हमारा गेंद छीन कलिकाल ! —उठो !
घनश्याम उठो ! गोपाल उठो ! ओ भारत माँ के लाल, उठो !
कर में ले भाले-ढाल, उठो ! अन्यायी का बन काल, उठो !
भारत के उन्नत भाल, उठो ! ओ भारत माँ के लाल, उठो !

हमको मुस्काता हृष्ट-पुष्ट लख,
और जान बेखबर, चीन,
इस क्रीड़ा में बन कर बाधा,
ले चला हमारा गेंद छीन,
पर तुम भी फेंको बाँसुरिया,
ले चलो तमंचे तोप बीन,
दिखला दो सुत नरसिंहों के,
हैं नहीं अबल, हैं नहीं दीन !
अपनी धरती को छीन, चीन
को देंगे तुरत निकाल, उठो !
मत देना अवसर टाल, उठो !
ओ भारत मां के लाल, उठो !

यह भोला भूल किधर आया
खा धोखा वंशी के स्वर से ?
वह समझ रहा गोपाल-बालकों
को नट और कलंदर से

तुम खेल दिखा दो नए, किन्तु,
उसको निज धनुष और शर से
मरघट की राह दिखाओ गर्दन
थाम सबल अपने कर से !
ओ मधुसूदन ! ओ कंस-दमन ! !
दुश्मन की खींचो खाल, उठो !
फिर चलो शूर की चाल, उठो !
ओ भारत माँ के लाल, उठो !

परिवार ताड़का का उद्धत
चीनी दानव का धार वेश
उत्पात मचाता बढ़ आया
दूषित करने फिर आर्य देश
मुनि विश्वामित्र पुकार रहे,
ओ राम-लखन के वंश शेष !
बन वज्र दानवों पर टूटो
चल सके न उनकी तनिक पेश !
करने को यज्ञ सफल मुनि का,
दशरथ के बाँके बाल, उठो !
लेकर जंगी स्वर ताल, उठो !

ओ भारत माँ के लाल, उठो !
माता पर छाया कष्ट-क्लेश
ओ माता के प्रतिपाल, उठो !
शोणित का लिए गुलाल, उठो !
जननी के काटो जाल, उठो !
ओ भारत मां के लाल, उठो !

# शिव को बुलाओ रे !

श्री कृष्णकुमार शर्मा

सीमा की ओर चलो,
सीमा पे शोर है,
उमड़ा घन-घोर है,
आंधी चलाओ रे,
तूफान लाओ रे !
बिजली गिराओ रे !
सीमा की ओर चलो !
माऊ की ताकत का
भालू नकेल दो,
नेफा क्या तिब्बत से
बाहर धकेल दो ।
शिव को बुलाओ रे,
तांडव रचाओ रे !
सीमा की ओर चलो !
देश का सवाल यह,
आप का सवाल है,
आन का सवाल है,
मान का सवाल है ।
अपने जवानों की
रग-रग में खून है,
उमड़ा जनून है,
दुश्मन को मार कर,
ऊंचा जय नाद कर,
मिल-जुल के खून की
होली मनाओ रे !
सीमा की ओर चलो !
राघव का देश यह
अर्जुन का देश यह,
चन्द्रगुप्त चाणक्य विक्रम
का देश यह ।
वीरों के देश की
सीमा के शत्रु को
गोली से दाग़ दो,
गोलों की आग दो !
सीमा की ओर चलो !
जीतेंगे हम ही कि
हम हैं सचाई पे,
हर इक लड़ाई में
जीती सचाई है ।
दुश्मन की चाल को,
ताकत से मोड़ दो,
रुख है जो इस तरफ
उस रुख को तोड़ दो !
सीमा की ओर चलो !

# वतन पर अब तो नक़दे-जाँ लुटा देने का वक्त आया

O

**बाबा कृष्णगोपाल 'मग़मूम'**

वतन की हद से दुश्मन को भगा देने का वक्त आया,
जवानो ! कुव्वते-बाजू दिखा देने का वक्त आया ।

अगर दुश्मन हमें कमजोर समझा तो ग़लत समझा,
रफ़ीको ! अब ग़रूर इसका मिटा देने का वक्त आया ।

सरे-मैदां सफ़े-दुश्मन पे जो बिजली गिराती थी,
उसी तलवार के जौहर दिखा देने का वक्त आया ।

हमारा दोस्त बन कर खुद हमीं से की दग़ा इसने,
इसे इस जुर्म की आखिर सजा देने का वक्त आया ।

जहाँ में इत्तेहादे बाहमीं ताकत सी ताकत है,
हमां-हंगी-ओ-यक-जहती दिखा देने का वक्त आया ।

ज़रो-सीमो-गोहर तो हैं बहुत अदना से नज़राने,
वतन पर अब तो नक़दे-जाँ लुटा देने का वक्त आया ।

बहर कीमत बचाना है हमें अकदारे इंसानी,
हिमाला की बलन्दी से सदा देने का वक्त आया ।

वतन के ज़र्रे ज़र्रे की हिफ़ाज़त के लिये यारो !
लहू का कतरा-कतरा अब बहा देने का वक्त आया !

वतन की आन पर कुर्बान हो जाना है हँस-हँस कर,
वतन को आज यह कौले-वफ़ा देने का वक्त आया ।

न छोड़े थे, न छोड़े हैं, न छोड़ेंगे उसूल अपने,
इन्हीं पर जान की बाजी लगा देने का वक्त आया ।

अमल की दौड़ में 'मग़मूम' ! अब साबित कदम रह कर,
जो हम कहते हैं वो कर के दिखा देने का वक्त आया ।

# बलि के पथ पर चलने वालो ! मेघों-सा हुँकार करो !

श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

बिगुल बजा, जल उठे दीप, तूफानों में पलने वाले,
बलि का पथ पहचाना था, चल पड़े चमक चलने वाले;
भ्रम था, विभ्रम था यहां शांति बसती है हरे दुकूलों में,
वह संकेत उधर करती शोणित-सरिता के कूलों में;
शांति चाहते तो शोणित-सरिता की लहरें पार करो।
फूलों के बदले शूलों से जीवन का शृंगार करो ।।

बिगुल बजा, जल उठे दीप, बलि की तैयारी रुके नहीं,
झुकने वाले झुकें, तुम्हारा मस्तक किंचित् झुके नहीं;
इस बलिदानी बेला में रुकना कैसा, झुकना कैसा,
झूठा मोह मिटा तो फिर जय-यात्रा में रुकना कैसा ?
सत्य सामने खड़ा बिखेरे ज्वाला-कण स्वीकार करो।
अंगारों को चुनो, उन्हीं से जीवन का शृंगार करो ।।

इस अभियानी बेला में व्यवधान न कोई आने दो,
लक्ष-लक्ष बढ़ रहे वीर प्राणों की भेंट चढ़ाने दो;
यह पवित्र बलिदान, रक्त से फूटेगी जो चिनगारी,
पीकर उसका तेज खिल उठेगी भविष्य की फुलवारी;
बलि के पथ पर चलने वालो ! मेघों-सा हुंकार करो।
आज शक्ति की वह्नि-शिखा से जीवन का शृंगार करो ।।

अंधकार मानव-मूल्यों का किस युग में उपमान हुआ,
किस युग में अभिशाप मनुज के लिए मधुर वरदान हुआ;
विष विष ही है, अमृत नहीं, वह मधु का भी पर्याय नहीं,
अंधकार की पुस्तक में आलोक-लिखित अध्याय नहीं;
अनल-कणों से, ज्वलन-कणों से दीप्त मरण-त्योहार करो।
ओ संकल्पी ! अंशुजाल से जीवन का शृंगार करो।।

अणु-परमाणु मांगते तुम से, शीश दान देना होगा,
जलावर्त्त में निर्भय अपना यान तुम्हें खेना होगा;
नियति तुम्हारे लिए चिह्न लेकर विराम का जहां मिले,
वहीं तुम्हारी गति का गौरव गरज उठे, संसार हिले;
परिवर्तित आलात-चक्र में शैल-शृंग दुष्पार करो।
ज्वालामुखियों की ज्वाला से जीवन का शृंगार करो।।

त्विषा तुम्हारी ही तारों में, उन्हें निहार रहे हो क्यों ?
तुम्हीं मरुत्पथ के निनाद, फिर उसे पुकार रहे हो क्यों ?
झंझा तुम्हीं झकोरों की फिर क्यों कर आज प्रतीक्षा है ?
तुम्हीं तेज वह जिसने रवि को दी जलने की दीक्षा है;
बड़वानल के फण पर बैठो मंथित सिंधु अपार करो।
आज प्रलय की मुस्काहट से जीवन का शृंगार करो।।

महाज्वार जब बन जातीं शोणित की लहरें मतवाली,
रक्त, रक्त, सब ओर रक्त, सब ओर रक्त की ही लाली;
संधिकाल तब भीख मांगने हाथ पसारे आता है,
महाशक्ति के चरणों में श्रद्धा से शीश झुकाता है;
बलि के पथ पर बढ़ो और बल की दिनरात पुकार करो !
बल से, बलि की चिनगारी से जीवन का शृंगार करो ! !

# मुझे नींद नहीं आती !

○

श्री कैलाश वाजपेयी

मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !
कहाँ हो तुम ?
इस विस्तृत परिवार के धड़कते सदस्यो !
मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं,
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

यह मेरे माथे पर जो
चोट का निशान है
यह मेरी माँ के घायल मन की पहचान है
बर्फ़ का कम्बल लपेटे
इस पेंचदार खाई में
मैं टूटे पंख सा भटकता हूं
मेरे नीचे अनय की कीचड़ है
और शीश पर
बर्बर इतिहास की ओछी चट्टान है !
कहाँ हो तुम ?
इस भरे-पूरे उद्यान के महकते वृक्षो !
क्या सचमुच मेरा स्वर
तुम तक पहुँचता है

मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं—
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

तुम, जिनकी आंखों से शंक्वाकार रोशनी निकलती है ।
तुम, हवा जिन से दो कदम पीछे चलती है ।
तुम, जो धरती से ऊपर कुछ ऊपर रहते हो ।
तुम, जो तरुणाई के चौड़े राजमार्ग पर चक्राकार बहते हो ।
तुम, जिन से पूर्व कभी सूर्य नहीं डूबता ।
तुम, जिन से जीवन कभी नहीं ऊबता ।
पार्क की बेंचों, सड़कों, फुटपाथों पर—
क्लबों, नृत्यघरों या
समुद्री तटों पर—
जहां कहीं हो तुम
मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

सुनो, सुनो !
मृत्यु में भी सौन्दर्य होता है
लाशें भी आकर्षित करती हैं ।
एक प्यास रक्त से भी बुझती है
'गनों' में भी संगीत होता है ।
कालिदास के श्लोक और
नानक की वाणी
ग़ालिब की ग़ज़लें—

सोहनी महिवाल की कहानी
सूर के पद और शंकर के दर्शन
ढोला-मारू और
रवीन्द्र के गुंजन--
इन सब की रक्षा के लिए
मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं !

अविवाहित रह जाने दो बहनों को
अन्धी हो जाने दो राधा को
सुनो, सुनो !
यह सब कल के लिए छोड़ दो--
नीचे से ऊपर तक युद्ध को
नहीं, नहीं--आवश्यक बुराई को ओढ़ लो !

कहाँ हो तुम ?
इस विस्तृत परिवार के धड़कते युवको !

कहाँ हो तुम ?
इस भरे पूरे उद्यान के महकते वृक्षो !

क्या सचमुच मेरा स्वर तुम तक पहुंचता है
मैं तुम्हें दो बार आवाज़ नहीं दूंगा--
सुनो,
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

○

# चीनी विस्फोट

○

**श्री कोस मंगलम् 'सब्बु'**

धनुष लाओ, बंधु मेरे, धनुष लाओ ।
विजय-मणि-अनुगूंज-मंडित धनुष लाओ ।।

देश बढ़ता वीरगति से, धनुष लाओ
ताल पर दे ताल, पगध्वनि को सजाओ ।
चीन के कटु दर्प का चूरा बनाओ,
वीरता के पाँव में पायल जगाओ ।

शूल हाथों में सजाए हैं षडानन !
शपथ लेते हैं तुम्हारे शूल की हम !
शपथ आज त्रिशूल की है, हे महाशिव !
लाज रखना नित्य निज स्वातंत्र्य की तुम ।

गगन-चुम्बी देवमन्दिर शुभ्र गोपुर,
वेंकटाद्रि, महान् कावेरी हमारी ।
हे जननि, मुग्धे मनोन्मणि नित मनोरम,
मोहिनी पूर्णोपमा कन्याकुमारी ।

जननि की शुभ कोख में आए तभी से,
सुन रहे हैं हम सदा वह वेदवाणी ।
शपथ है उस वेद की अब, नित्य जिसमें
थी निनादित काव्य गरिमाएँ हमारी ।।

भक्ति से करते रहे यदि ईश अर्चन,
प्रीति ले जाते रहे यदि मंदिरों में ।
और यदि है सत्य, हम पढ़ते रहे हैं—
महाभारत की कथा पावन स्वरों में ।

तो सदा हम धर्म की रक्षा करेंगे,
युद्ध के मैदान में डट कर लड़ेंगे ।
है हमें निज देवताओं की शपथ,
प्राण कर अर्पित अमर बन कर रहेंगे ।
चढ़ रहे, जो बढ़ रहे, हिमगिरि शिखर पर
लड़ रहे, लड़कर चढ़ाते प्राण अपने
उन जवानों के सदा बढ़ते चरण की,
शपथ हमको, जो हमारे अंग अपने ।

चरण जो उठकर गिरें, गिरकर उठें फिर,
घोर सर्दी में ठिठुरकर नित्य बढ़ते ।
रक्त लथपथ, पत्थरों से हुए घायल,
चरण जो पर्वत शिखर पर नित्य चढ़ते ।
उन पगों की शपथ हमको आज है फिर,
वह भुजा जिसने कि अब बन्दूक धारी ।
शपथ है उन सुदृढ़ कंधों की, जिन्होंने—
प्राणप्रिय स्वातंत्र्य रक्षा की हमारी ।

शपथ खाते आज बापू की जिन्होंने,
स्वर्णमय स्वाधीनता हमको दिलाई ।
शपथ उन अनगिनत वीरों की जिन्होंने,
सीख बापू की सदा ले, की लड़ाई ।
जब तलक अरि को न सीमा से भगा दें,
सेज के बदले धरा पर शयन होगा ।
जब तलक हिमगिरि हिमालय को न ले लें,
तब तलक हमको न क्षण भर चैन होगा ।

गो-वृषभ क खेल म जैसे अकारण,
गाय को बंदी बना लूटा किसी ने ।
ठीक वैसे छिप-छिपा कर चीन आया,
लूट ली धरती हमारी है उसी ने ।
जिस तरह से धूप में निश्चिन्त होकर,
मनुज कोई वस्त्र अपने है सुखाता ।
लूट ले कोई उसे चुपचाप आकर,
और साहूकार बन कर डर दिखाता ।

जिस तरह अंगना उगे तरु नारियल को,
लूट कर कोई उसे अपना बनाए ।
खेत-सीमा-चिह्न को बल से हटाकर,
रोब से अधिकार अपना ही जताए ।
जो सदा से मान्य थी अंग्रेज़ द्वारा
युग-युगों से ही रही सीमा हमारी ।
कह रहा है चीन, "क्यों मानूं उसे मैं?"
युद्ध फिर करने लगा हमसे अनाड़ी ।

चींटियों के दल सदृश सेना बना कर,
आ गया वह सरसराता देश भीतर ।
जिस तरह से आग धक-धक फैलती है,
उस तरह से फैलता ही गया सत्वर ।
जिस तरह डाकू धड़ाधड़ घुस रहे हों,
हाथ में थामे हुए जलती मशालें ।
उस तरह उसने हमारी धरा लूटी,
और अब भी चल रहा है कुटिल चालें ।

किन्तु हमने भी मज़ा उसको चखाया,
चोट ऐसी दी कि फिर वह सकपकाया।
दौड़कर इकरार का संदेश लाया,
युद्धबन्दी का कुटिल धोखा दिखाया।

पूछते हैं हम, बिना पूछे भला वह—
क्यों हमारे देश भीतर आज आया?
पास उसके प्रश्न का उत्तर नहीं है,
है निरंकुश, इसलिए बस चला आया।

किन्तु भारत भूमि पर जिसने धरा पग,
कुचलने को शीश उसका चलो वीरो।
की हिमालय पर घिघौरों ने चढ़ाई,
कमर उनकी तोड़ने को, बढ़ो वीरो!

धर्म पर अन्याय करने जो बढ़ा है,
गर्व उसका भस्म करने, बढ़ो आगे।
नमक खाया जिस धरा का नित्य हमने,
अब उसी का मान रखने बढ़ो आगे।

इस घड़ी में जो निरा आराम चाहे,
वे निठल्ले घरों में दुबके रहेंगे।
मान की रक्षा जिन्हें है प्राण से प्रिय!
वे बहादुर देश हित, आगे बढ़ेंगे।

चीन के छक्के छुड़ाने, बढ़ो वीरो,
वीर सेनानी बनो, शेरो दहाड़ो,
सिंह-मुद्रा-पदक से होकर सुशोभित,
तोलकर निज शौर्य, दुश्मन को निकालो।

रूपान्तरकार: मेघराज 'मुकुल'

# जगो, उठो, चलो, बढ़ो, लिए कलम कराल सी

○

**श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'**

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम,
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम !

उठो हिमाद्रि शृंग से, तुम्हें प्रजा पुकारती,
उठो प्रशस्त पन्थ पर, बढ़ो सुबुद्ध भारती !

जगो विराट देश के, तरुण तुम्हें निहारते,
जगो अचल मचल विकल करुण तुम्हें दुलारते ।

बढ़ो नई जवानियाँ, सजीं कि शीश झुक गए,
बढ़ो मिलीं कहानियाँ, कि प्रेम गीत रुक गए ।

चलो कि आज स्वत्व का, समर तुम्हें पुकारता,
चलो कि देश का तुम्हें, सुमन सुमन निहारता ।

जगो, उठो, चलो, बढ़ो, लिए कलम कराल सी,
अरे जो शत्रु-सैन्य को, डसे तुरन्त व्याल सी !

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम ।
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम ।

○

# हिन्द का जवान, लाख लाख के समान है

○

**श्री गिरिधर गोपाल**

हिंद का जवान, लाख लाख के समान है ।

आँधियों से, बिजलियों-बवंडरों से यह बना,
बाढ़ से अंगार से समंदरों से यह बना,
देश की कमान से
चला अमोघ बाण है ।

यह चला कि ज़लज़लों का एक काफिला चला,
शक्ति-शौर्य जय-विजय का एक सिलसिला चला
यह हमारे रक्त का
प्रलयभरा उफान है ।

यह हँसा बहार मुस्करा उठी, सहर हुई,
कि भौं तनी गई सो मौत दुश्मनों के सर हुई,
हिंद का झुके न जो
बलंद वह निशान है ।

हमको इस पै नाज़ है, सपूत यह महान है,
इसकी गोद में खिला गुलाब सा जहान है,
यह हमारी आन-बान-
शान-स्वाभिमान है ।

# युद्ध की चुनौती स्वीकार है

○

**श्री गिरिजाकुमार माथुर**

युद्ध की चुनौती स्वीकार है—
हम, जोकि हज़ारो वर्ष पूर्व
सोन विद्युत् का वलय पहिन
चमकते तेज़ धार वाले चक्र से घूमे थे
अश्वमेधों, दिग्विजयों में—

हम, जिनके शखों के बजते ही
गरुड़धारी शिरस्त्राण पहिने हुए सेनाएं
ठिठक कर
विपाशा के किनारे से लौट जाती थी—

हम, जिनका नये आधे सूर्य सा ललाट देख
शत्रु सिमिटार का सिरोपा चरणों में धर
एफ्रोडाइट ललनाओं की
किशमिशी गांठें विभोर डाल जाते थे

हम, जिनकी अनझुकी तलवारों के सामने
मिहिरगुलों की आंधियाँ
काई-सी फट जाती थीं

वह वलय, वह सोनचक्र
वह शंख, खंग हमने

आऊ नारिकेल-वाले पूरब के सागर में
दो हज़ार वर्ष बाद
अनासक्त फेंक दिया था
विजय पराजय को स्वयं व्यर्थ जान कर
तब से अब
दो हज़ार वर्ष फिर बीते हैं
सदियों से भूली हुई
शस्त्र की झनकार फिर से उठ आई है
शस्त्र की चुनौती स्वीकार है
युद्ध की चुनौती स्वीकार है—

हम, जो इतिहासों के अज्ञातवास में
याद ही न रख पाए
संकल्प शमी में छिपे रखे इस्पात को
—वह भूल थी हमारी

हम, जोकि आत्मलीन
भागते रहे सदा अतीत के कुहासे में
वर्तमान को नगण्य मान कर
भूल कर कि हर अतीत औ' भविष्य
वर्तमान होता है
—वह भूल थी हमारी

हम, जोकि उदासीन
काया से भाग कर
आत्मा भी खो बैठे

भूल कर काया के अनन्त दायित्वों को
—वह भूल थी हमारी

भूल थी हमारी
कि दुनिया है सभ्य हुई
बर्बरता शेष हुई
बीत चुकी नरबलियां
अन्धे इन्क्वीज़ीशनों की लपटों में
ज़िन्दा जलती सदियां
भूल थी कि
फिर से अनोखी धर्मान्धता न फैलेगी

ज्ञान की जघन्य वाम विकृति न पनपेगी
भावनामयी मनुज संतति न फिर से कभी
ढोर, लोथ, रोबोट, सामग्री बनी जन्मेगी
कल्पों के बाद फिर
छल के मारीचि ओट
अविचल सौमित्र रेख
सहसा ही हुई भंग
कल्पों की धूप पकी
पद्धति पर उठा खंग
अग्नि की परीक्षा यदि होनी है और शेष
तो फिर तथास्तु है
अग्नि की चुनौती स्वीकार है
युद्ध की चुनौती स्वीकार है !

○

# शीश चढ़ा दे जो चरणों पर वही उतारे आरती

○

श्री गुलाब

आयी हिमगिरि लाँघ लुटेरों की टोली फुफकारती,
चालिस कोटि सुतों की जननी, खड़ी अधीर पुकारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती,
शीश चढ़ा दे जो चरणों पर, वही उतारे आरती ।

सोये अर्जुन भीम जगे क्या अब पांचाली जायेगी ?
जिसने आँख निकाली उसकी आँख निकाली जायेगी ?
छयासठ कोटि बढ़ी तो क्या, यह चीनी चाली जायेगी,
बना चासनी, हिन्द महासागर में डाली जायेगी, ।

भारत भाग्य-भवानी जागी आज असुर संहारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आजादी ललकारती ।।

अंगद—पग धर हुए हमारे सैनिक खड़े पहाड़ पर,
पार हिमालय के कूदें जो पल में अभी दहाड़ कर,
बढ़ते बिना विराम तिरंगे ध्वज पेकिंग तक गाड़ कर,
इस चीनी अजगर के रख दें सारे दांत उखाड़ कर ।

जिन के साहस, शक्ति, शौर्य पर जननी तन-मन वारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आजादी ललकारती ।।

साठ हज़ार सगर-पुत्रों की सैन्य जुटी तो क्या हुआ ?
भूल गये जब खुली कपिल मुनि की भृकुटी तो क्या हुआ ?
रेखा-रक्षित, लुटी राम की पर्णकुटी तो क्या हुआ ?
पूछो स्मर से, खुला तीसरा नेत्र भला तो क्या हुआ ?

बस मुट्ठी भर राख दिखी थी दक्षिण पवन बुहारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

आज बँधी मुट्ठी सा कस कर सारा भारत एक है,
एक हमारी भारतीयता, एक हमारी टेक है,
धर्म धुरी, रथ अभय, सारथी साहस, सखा विवेक है,
गति गंगा की धार हमारी छेक सकेगा भेद है ?

यह पीली आंधी निष्फल चट्टानों पर सिर मारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

हम अगस्त्य सुत सप्त-सिंधुओं को पी जाते घोल कर,
भौंह हमारी लीक खींच देती भूगोल, खगोल पर,
बढ़ जाते हम तोपों के मुंह पर निज सीना खोल कर,
दे सकते हैं रक्त हिमालय के बदले में तोल कर

हम उन की संतान, वीरता जिन के चरण पखारती ।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

सुर मुनि पूजित भूमि अमर यह, हिमगिरि जिस का भाल है,
विंध्याचल मेखला, चरण तल धोता जलधि विशाल है,

शांत, सौम्य चिर तपस्विनी यह, क्रुद्ध हुई तो काल है,
ढाल शांति की, स्वतंत्रता की चिर प्रज्वलित मशाल है।

जय जग जननी, असुर निकंदिनि, जय भारत, जय भारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

# चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा

स्वर्गीय गोपालसिंह 'नेपाली'

गंगा के किनारों को शिवालय ने पुकारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।
तलवार उठा लो तो बदल जाए नज़ारा।

अंबर के तले हिंद की दीवार हिमालय,
सदियों से रहा शांति की मीनार हिमालय,
अब माँग रहा हिंद से तलवार हिमालय,
भारत की तरफ चीन ने है पाँव पसारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।।

हम भाई समझते जिसे दुनिया से उलझ के,
वह घेर रहा आज हमें बैरी समझ के,
चोरी भी करे और करे बात गरज के,
बर्फों में पिघलने को चला लाल सितारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।।

धरती का मुकुट आज खड़ा डोल रहा है,
इतिहास में अध्याय नया खोल रहा है,
घायल है अहिंसा का वज़न तोल रहा है,
धोखे से गया लूट भाई-भाई का नारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।।

जागो कि बचाना है तुम्हें मानसरोवर,
रख ले न कोई छीन के कैलाश मनोहर,
ले ले न हमारी ये अमरनाथ धरोहर,
उजड़े न हिमालय तो अचल भाग्य तुम्हारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा ।।

आज़ाद रहा देश तो फिर उम्र बड़ी है,
मंदिर भी है, गिरजा भी है, मस्जिद भी खड़ी है,
संग्राम बिना ज़िन्दगी आँसू की लड़ी है,
तलवार उठा लो तो बदल जाए नज़ारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा ।।

# गुमान माँ के दुश्मनों का धूल में मिलाए जा

○

**श्री गोपालप्रसाद व्यास**

प्रयाणं गीत गाए जा ! स्वर में स्वर मिलाए जा !
यह ज़िन्दगी का राग है—जबान जोश खाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू कौम का सपूत है, स्वतंत्रता का दूत है,
निशान अपने देश का उठाए जा, उठाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

ये आँधियाँ पहाड़ क्या ? ये मुश्किलों की बाढ़ क्या ?
दहाड़ शेरे हिन्द, आसमान को हिलाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू मातृभूमि के लिए, जला के प्राण के दिए,
नई किरण प्रकाश की जगाए जा, जगाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू बाहुओं में आन भर, सगर्व वक्ष तान कर,
गुमान माँ के दुश्मनों का धूल में मिलाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

प्रयाण गीत गाए जा ! तू स्वर में स्वर मिलाए जा !
यह ज़िन्दगी का राग है, जवान गुनगुनाए जा !

# भारत के रखवालो जागो !

○

श्री चन्द्रकुमार 'सुकुमार'

भारत के रखवालो जागो !
योद्धाओ दिक्-पालो जागो !
फिर हथियार संभालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे !!

आज वक्त आ गया जवानो, अपनी ताकत दिखलाओ,
भारत माँ के उठो सपूतो ! उत्तर सीमा पर जाओ।
कफन बाँधकर उठो चीन के सपने सभी मिटाने हैं,
दिखला दो, भारत के बेटे शेरों की संतानें हैं।
एक नहीं, लाखों प्रताप हैं, अभी देश के लालों में,
वीर शिवाजी हैं लाखों ही धरती के रखवालों में।
लाखों पृथ्वीराज अभी तो ज़िन्दा हैं चौहानों में,
एक इशारे पर मरने की इच्छा सबके प्राणों में।
घर-घर में आज़ाद हिन्द के वीर सिपाही ज़िन्दा हैं,
लक्ष्मी-रानी, मंगल पाण्डे, ताँत्या टोपे ज़िन्दा हैं।
ज़र्रा ज़र्रा अंगारा है, बच्चा-बच्चा सूरज है,
ललकारा है हमें तिमिर ने बस इतना ही अचरज है।

तम से लड़ने वालो जागो !
हिमगिरि चढ़ने वालो जागो !
फिर हथियार सम्भालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे !!

अभी दूसरे विश्व-युद्ध को दुनिया भूल न पाई है,
भूखा रहकर भी लड़ने का आदी अभी सिपाही है।
एक सिपाही भारत माँ का सौ चीनी को काफी है,
कितने योद्धाओं ने माँगी, इस मिट्टी से माफ़ी है।
दुश्मन की संगीनों आगे यह फौलादी सीने हैं,
अगर मरे भी तो इज्जत से, इज्जत से ही जीते हैं।
पाँव बढ़ा कर पीछे हटना भारत ने कब सीखा है,
जहाँ उठा हथियार, वहीं पर दुश्मन मरता दीखा है।
एक गिरेगा, वहाँ हजारों उठकर लड़ने वाले हैं,
चीनी छल-कपटों के देखो पाँव उखड़ने वाले हैं।
**शंखनाद** के साथ करोड़ों भैरव आगे आयेंगे,
शोणित पीयेंगे दुश्मन का नामो-निशाँ मिटायेंगे।

शत्रु कुचलने वालो जागो!
रण-कौशल मतवालो जागो!
फिर हथियार संभालो रे!
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे!!

क्या खाकर यह चीन चला है टकराने चट्टानों से,
परशुराम के वंशधरों से औ' दधीचि संतानों से।
नष्ट नहीं हो पाया है इतिहास देश के वीरों का,
जाट, खालसा और गोरखा रजपूती रणधीरों का।
अभी मराठों की रग-रग में गर्म खून की गर्मी है,
बंगाली, उड़िया, मदरासी, उत्तर में कश्मीरी हैं।
अभी चन्दबरदाई भी हैं अभी हजारों भूषण हैं,
हैं नवीन, हैं उग्र, निराला जाग रहे जिनके प्रण हैं।

युगों बाद फिर आज देश के आगे यह दिन आया है,
मां दुर्गा को लोहू पीना आज अचानक भाया है।
आज न हम में से कोई भी मां का दूध लजाये रे,
देखो कोई दुश्मन ज़िन्दा घर को लौट न जाये रे !

मृत्युंजय प्रलयंकर जागो !
काल कराल भयंकर जागो !
फिर हथियार सँभालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे !!

# देव ! कुसुम शर त्याग, धनुष पर अग्निज बाण चढ़ाओ !

श्री चिरंजीत

श्वेत कमल-मंडित मानस में
रक्तिम कमल खिलाओ !
हरित-श्याम-शैवाल-जाल पर
अंगारे सुलगाओ !

'इन कमलों का प्रहरी हिमगिरि
खंडित आज हुआ है,
बनें कमल खुद अपने प्रहरी,
दल-दल खड्ग उगाओ !

आज बरफ से भी ज्वाला
की लपटें फूट रही हैं.
देव ! कुसुम शर त्याग, धनुष पर
अग्निज बाण चढ़ाओ !

भौरों की चिर मधुर
प्रभाती, मारू राग बनी है,
कली-कली की चितवन में
रणचंडी-जोत जगाओ

उचित नहीं आराध्य देव का
श्वेत कमल से पूजन,
अरे व्रती, अरि-मुंड-सुमन की
जय-माला पहनाओ !

# हमें अधिकार है !

○

**श्री जगन्नाथ चक्रवर्ती**

अपनी प्राचीन नदी को अपनी नदी के नाम से पुकारने का
अपने पितामह नगाधिपति को अपना समझने का !
हमें अधिकार है :
गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र की तराई में, घाटी में, वन में, समतल मैदानों में
बीज की तरह अपनी सतरंगी इच्छाओं-आकांक्षाओं को
छींटन का, रोप देने का ! हमें अधिकार है :
तवांग की संध्या को बौद्धमठ की घंटाध्वनि से मुखरित करने का,
पर्वत श्रेणियों की शान्तिमय छाया में
हिमालय की सोनाली आभा में हिमपात, कोहरे, और वर्षा में
अपने देशवासी भाइयों-बहनों के साथ खड़े होने का
हमें अधिकार है :
पहाड़ी देवदार के जंगलों में मोम्पा भ्राताओं के जीवन में
वलांग, जेंग, लद्दाख, हिमालय की सीमारेखा में
हर जगह जाने का, रहने का, सुख-दुख सहने का
हमें अधिकार है ! हमें अधिकार है :
आक्रमणकारी आततायी को अपनी सीमा से भगा देने का
देश रक्षा का !
हमारी पवित्र नदियों के जल, हमारे उर्वर खेतों की फसल,
गाँव-नगर, पथ, सेतु, कल-कारखाने,
अपने वर्तमान और भविष्य की सुरक्षा करने का हमें अधिकार है !
अपनी प्राचीन नदी को अपनी नदी कह कर पुकारने का हमें अधिकार है

रूपान्तरकार : श्री राजकमल चौधरी

# हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर

श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'

हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

पर्वतसे ऊंचे गौरवमें, सागरसे गम्भीर,
हम अजेय हैं, सुदृढ़, साहसी, हम निर्भय, रणधीर ।
प्राण हमारे ज्योति-पुंज हैं, शक्ति-समृद्ध शरीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

जय-पथपर हम चरण बढ़ाते, बाधाएं कर पार,
घन-गर्जन लज्जित होता, जब हम करते हुंकार ।
कभी न पीछे हटे समर में, कभी न सीखी हार,
करता है सम्मान हमारे, पौरुष का संसार ।
हमसे रक्षित संस्कृति, भू, गिरि, सिंधु, अन्न, नभ, नीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

कष्ट-सहन में भी रखते हम अधरों पर मुसकान,
उरमें दृढ़ संकल्प, स्फूर्ति-प्रद कंठोंमें जय-गान ।
लक्ष्य-सिद्धिके लिए किए जो प्राणोंके बलिदान,
उनसे हमने सदा बढ़ाया भारतका सम्मान ।
अनुशासन-रत रहे निरन्तर, हुए न कभी अधीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

# नवभारत पुरुष

श्री जी० एस० शिवरुद्रप्पा

सहस्राक्ष है वह सहस्रशिर, हैं सहस्र भुज-पद गतिमान ।
अन्तर्यामी, भू-नभ-व्यापी, वह नवभारत पुरुष महान ।

पाँवों में मुखरित समुद्र-जल, सिर पर मौन हिमाचल ताज,
हृदय केन्द्र, हैं नदी नाड़ियाँ, अंग जनपद बहुजाति समाज ।

दुग्ध पयोधर से, पर्वत से प्रवहमान नदि-नद-निर्झर,
मिट्टी होने को सजीव, निःश्वास-सुरभि पर है निर्भर !

नेत्र-ज्योति अनगिनती दीपक दीपित करती घर-घर में
अमृताक्षर नक्षत्र मंत्र निर्भीक जप रहे अम्बर में !

चन्द्रातप की किरण---कौन से कवियों को वाणी मिलती,
तनी भवों में राज्यक्रांति, अखबारों में सुर्खी खिलती !

गूंज रही गिरि-वन-उपत्यकाएं उसके गुरु गर्जन से !
नदियाँ ठहर गई बाँधों में इंगित, तर्जन-वर्जन से !

सहस्राक्ष है वह सहस्रशिर वह सहस्र भुज-पद गतिमान !
अन्तर्यामी भू-नभ व्यापी, वह नवभारत पुरुष महान् !
है प्रपात में अट्टहास, विद्युद्दीपित मुसकान मृदुल,
ध्वनि-विक्षेपक यंत्रों में है उसका ही संगीत विपुल !

उसका ही पुरुषार्थ, ओज, बल यंत्रों को हलचल देता,
सौधों को उत्थान और वह निर्माणों को बल देता ।

मर्मी विद्याविद् विज्ञानी संधानों में गति पाते—
उसकी ही उत्साह-शक्ति के ताने-बाने बुन जाते !

हों घड़ियों की सुइयाँ या फिर हों गतिशील पोत जलयान,
उसकी ही इच्छा इन सब में, उसका ही पुरुषार्थ प्रधान ।

सीमा के संतरी वीरवर दृष्टि उसी से पाते दक्ष,
वायुयान उड़ते उसके बल अम्बर में फैलाए पक्ष !

रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा

# चलो जवानो !

श्री त्रिलोकीनाथ 'रंजन'

सीमा पर है शोर, द्वार खटखटा रहा दोधारा है ।
चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।
आज देश के गौरव को हमलावर ने ललकारा है ।
बढ़ो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।

मानसरोवर पर मोती चुगने कुछ बगले मंडराए ।
सावधान ओ राजहंस ! तन जाए—आन नहीं जाए ।
धौलागिरि की हर चोटी पर अंकित नाम तुम्हारा है ।
बढ़ो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।

उठो राम के वीर वंशजो ! तुम्हें बुलाती रामायण ।
अर्जुन की सन्तान ! उठो, करके गीता का पारायण ।
पृष्ठ पलटने चला महाभारत कोई दोबारा है ।
बढ़ो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।

उठो प्रताप शिवा के बेटो ! वीर सैनिको धनुर्धरो !
गुरु गोविन्द सिंह के सिक्खो ! धर्मयुद्ध में जूझ मरो ।
जाट-अहीरो ! वीर गूजरो ! अब इतिहास तुम्हारा है ।
चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।

बचकर निकल न जाएं हिमगिरि को घायल करने वाले ।
खूनी चंगेजों के वंशज, युद्धों के जो मतवाले ।
गीता का संदेश यही है, यह नेहरू का नारा है ।
चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है ।

# स्वागत

○

श्री दर्शन सिंह 'आवारा'

आज फिर तुम्हारा स्वागत करने के लिए
मैं आ गया हूं।
परन्तु, आज मैं पालम के बजाय
नेफ़ा की सीमा पर खड़ा हूं।
अब मैं तुम्हारी बाट देखता हूं—
लद्दाख की शान्त और मासूम बर्फों से
लदी चोटियों पर।
जोश तब भी बहुत था,
जोश आज तब से सौ गुना ज़्यादा है।
तब मेरे ओंठों पर मुसकान थी
और मेरे हाथों में हार थे।
आज मेरे सीने में आग है
हाथों में हथियार है
क्योंकि कल तुम कुछ और थे, और
आज कुछ और हो।

# देखो ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा

○

**श्री दीनानाथ नादिम**

ऐसा है संसार हमारा !
इसमें खिल कर सुमन अमन का नित्य संदेसा लाते हैं,
सिर पर शीतल छाया करके प्यार चिनार जताते हैं,
अर्जुन सा जोधा रहता है इस की पहरेदारी में,
बुद्ध यहां करुणा के आँसू बोते क्यारी-क्यारी में,
गाते हैं मजहूर यहां पर काश्मीर की घाटी से,
राग रवीन्द्र उठाया करते बंग देश की माटी से,
यहां शराफ़त और मुहब्बत की बहती रहती है धारा,
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !
पनघट पर धोती हैं दादी झुर्रीवाले गालों को,
या कि वितस्ता के पानी में चांदी के से बालों को,
खिली खुमानी की डाली सी दादी खुश हो जाती हैं,
अपनी अंजलि में भर-भर कर वे आशीष लुटाती हैं,
ईश्वर से बिनती करती हैं, भला चाहतीं जन-जन का,
अपनों का हो, गैरों का हो, और भला हो दुश्मन का,
लाल देद को जैसे हिन्दू प्यारा वैसे मुस्लिम प्यारा,
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !
वुलर किनारे बैठा माँझी, देखो, क्यों घबराया है,
आया है तूफान, तरंगों ने उत्पात मचाया है,
बीच सरोवर नैया छोटी झोंके-झटके खाती है,
बच जाए तो तट की थाती, वर्ना तल की थाती है,

बूढ़ा माँझी डोंगा लेकर तीर सरीखा जाता है,
खुद खतरे में पड़कर औरों की वह जान बचाता है,
राजा शिवि ने अपने तन का मांस कबूतर पर था वारा,
देखो, एसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !

नन्हे-नन्हे बालक, देखो, दौड़े-दौड़े आते हैं,
बादामों की शाखों पर ज्यों फूल खिले मुसकाते हैं,
औ' गुलाब की पंखुरियों की आने वाली बारी है,
उनकी डालों पर शबनम की माला कितनी प्यारी है !

इस मोती से धरती अपने तन का साज सजाती है,
इससे घायल गुल्लाला की ठंडी पड़ती छाती है ।
अमरों में है चौदह गोली खाकर के जो स्वर्ग सिधारा
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !

दिखलाई देता जो ऊँचा टीला तख्त सुलेमाँ है,
इसके ऊपर प्रातकिरन का लगता पहला खेमा है,
उधर खड़ी दरगाह, इधर को बैठा हरमुख पर्वत है,
गंगा और वितस्ता नद का पानी क्या है शर्बत है,

थका-मरा मज़दूर-मुसाफ़िर जो इनके तट आता है,
वह इनका जल पीकर फिर से नवजीवन पा जाता है,
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !

यह निर्धन की नंगी-निचुड़ी हुई पुरानी बस्ती है,
महँगा है आराम यहाँ पर और मुसीबत सस्ती है,
पर आशा की जोत अंधेरे की आँखों में जगती है,
सब संकट सब संघर्षों में खड़ी ग़रीबी हँसती है,

इस बस्ती में ही बापू ने अपनी कुटिया छाई है,
इसका भाग बदल देने की हमने कसम उठाई है ।

कोढ़ी की विगलित काया को जैसे दे उपगुप्त सहारा,
दखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !
शुद्ध बुद्ध के मंदिर जैसी यह लद्दाखी ललना है,
आँख समुंदर बाँधे, छाती अंगारों का पलना है,
अपना एक अकेला बेटा सीमा पर कटवाती है,
और नहीं है कटवाने को इस पर वह पछताती है,
'मेरी छाती से जो निकली दूध-अमृत की धारा है,
उसको पाने वाला सच्चा हिमगिरि का रखवारा है।'
सच्ची नारी सावित्री के तप के बल से यम था हारा,
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !
सरहद पर का एक सिपाही सौ से लड़नेवाला है,
घाव भरा तन लेकर भी वह दुश्मन का परकाला है,
मरते-मरते अपने संगी-साथी से कह जाता है—
'देखें दुश्मन के जुल्मों का बदला कौन चुकाता है'
माँ से कहना, उसके आँसू व्यर्थ न जाने पाएंगे,
गोली में परिवर्तित कर हम दुश्मन पर बरसाएंगे।
चक्रव्यूह में पड़ कर भी अभिमन्यु नहीं है अब तक हारा,
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !
और तुम्हारी दुनिया कैसी ? दुहरे चेहरे वाली है,
एक तरफ़ से उजली-उजली, एक तरफ़ से काली है,
दुनिया को धोखा देने की तुमने चाल निकाली है,
जीभ कहेगी मीठा-मीठा, दिल में विष की प्याली है,
छीन-झपट्टा करते जाना, बल से हथियाते जाना,
और लुटा अपने को कह कर दुनिया भर को भरमाना,
तुम दुश्मन बन गए, लगाते हम भाई-भाई का नारा,
देखो, कैसी गह तुम्हारी, कैसा है संसार तुम्हारा !

भारत माना करता सबसे मानवता का नाता है,
भाईचारे का रिश्ता वह सबके साथ निभाता है,
शांति, सिधाई, औ' सच्चाई उसको दिल से प्यारे हैं—
इसीलिए क्या खुश दिखलाई देते शत्रु हमारे हैं—
ऐसे को धोखे में रखना कोई मुश्किल बात नहीं,
किन्तु कभी सहता है भारत दुश्मन का आघात नहीं,
और न मुंह दिखलाने काबिल रहता है भारत का मारा
देखो, ऐसी रीति हमारी, ऐसा है संसार हमारा !

रूपान्तरकार : श्री हरिवंशराय बच्चन

# बुला रही रणभेरी अब फिर क्योंकर देरी

○

श्री देवप्रकाश गुप्त

आग लगी घर-घर में
आँगन औ, अम्बर में,
सो मत व्रती पहरुवे!
हिमगिरि पुकारता है!!

यह चन्दन का देश कहाँ से काली आँधी आई ?
एक रात में जन-एका की गंगा है लहराई
कौन नगाधिप के तपोवनों पर है नज़र उठाता ?
कौन शांति के ज्ञानपीठ में है अशान्ति फैलाता ?
सामवेद वाली गंगा-यमुना बोलो
अपनी काया आज रक्त से तुम धो लो
धधक रही ज्वालाएं, नाचो प्रलय-शिखाएं,
सो मत शांति-पहरुवे ! हिमगिरि पुकारता है !

कालिदास की संस्कृति पर ख़ूनी आँखें नम जाओ
छाया को क्यों रत्न मानते, सीमा को लौटाओ
शीशों के अर्पण का समारोह कब खाली जाता ?
तुम्हें क्या पता देश और जनता का कैसा नाता,
खँडहर में सोये अतीत के क्षण बोलो
अपनी काया आज रक्त से तुम धो लो
रश्मिपंथियो! गाओ!! जय की ध्वजा उड़ाओ,
सो मत गीत-पहरुवे ! हिमगिरि पुकारता है !

जय की परिभाषा शोणित से सदा लिखी है जाती
नीलकण्ठिनी कविता जिसको झूमझूम कर गाती
लक्ष्य छोड़ कर मुड़ना कायरता की संज्ञा होती
काँटों को जो जीत चले, वे बन जाते हैं मोती

बोलो भूषण ! जनता के स्वर में बोलो
अपनी काया आज रक्त से तुम धो लो
आगे बढ़ो सिपाही, रिपु की करो तबाही
सो मत काल-पहरुवे ! हिमगिरि पुकारता है !

है सौगन्ध तुम्हें बूढ़े हिमगिरि के हर आँसू की
ये आँसू हैं तीर्थ, साथ ही ज्वालामुखि की झाँकी
मनु का देश नहीं हारेगा, वह तो ध्रुवतारा है
कालजयी के साथ शांति का सच्चा हरकारा है

शरशय्या पर सोए महारथी बोलो
अपनी काया आज रक्त से फिर धो लो
बुला रही रणभेरी, अब फिर क्यों कर देरी ?
सो मत राष्ट्र-पहरुवे ! हिमगिरि पुकारता है !

इस अमृता धरा पर क्यों उभरी विनाश की छाया ?
किसने महाशांति के शशि को छेड़-छेड़ उकसाया ?
बलिपथ के संकल्पी अभिवादन तुमको जन-जन का
मान बचाना रक्तचरित्रों के उस पावन प्रण का

इस अभियानी बेला में जन-जन बोलो
अपनी काया आज रक्त से तुम धो लो
दुश्मन को थर्राओ, हँस कर कदम बढ़ाओ
सो मत सजग पहरुवे, हिमगिरि पुकारता है !

# राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण

○

**श्री देवराज 'दिनेश'**

ध्यान से सुने राष्ट्र-संतान,
राष्ट्र का मंगलमय आह्वान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान,
दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र पर घिरी आपदा देख, सजग हो युग के भामाशाह,
दान में दे अपना सर्वस्व और पूरी कर मन की चाह ।
राष्ट्र की रक्षा के हित आज, खोल दो अपना कोष कुबेर,
नहीं तो पछताओगे मीत, हो गई अगर तनिक भी देर ।
समझकर हमें निहत्था, प्रबल शत्रु ने हम पर किया प्रहार,
किन्तु अपना तो यह आदर्श, किसी का रखते नहीं उधार ।
हमें भी ब्याज-सहित प्रत्युत्तर उनको देना है तत्काल,
शीघ्र पहनानी होगी शिव को रिपु के नर-मुण्डों की माल ।
राष्ट्र को आज चाहिएं वीर, वीर भी हठी 'हमीर' समान,
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र के हर कण-कण से आज उठ रही गर्वीली आवाज़,
वक्ष पर झेल प्रबल तूफान शत्रु पर हमें गिरानी गाज ।
देश की सीमाओं पर पागल कौए मचा रहे हैं शोर,
अभी देगा उनको झकझोर, बली गोबिन्दसिंह का बाज़ ।
किया था हमने जिससे नेह, दिया था जिसको अपना प्यार,
बना वह आस्तीन का साँप, हमीं पर आज कर रहा वार ।

समझ हमको उन्मत्त मयूर, मगन मन देख नृत्य में लीन,
किया आघात, न उसको ज्ञात, साँप हैं मोरों के आहार।
राष्ट्र चाहेगा जैसा, वैसा ही हम अब देंगे बलिदान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए देवि कैकयी का अदम्य उत्साह,
धुरी टूटे रथ की दे बाँह, पराजय को दे जय की राह।
राष्ट्र को आज चाहिए गीता के गायक का वह उद्घोष,
मोह तज हर अर्जुन के मानस-तट पर लहराए आक्रोश।
आधुनिक इन्द्र कर रहा आज राष्ट्र-हित इंद्रधनुष निर्माण,
यही है धर्म, बने हम इंद्रधनुष की प्रत्यंचा के बाण।
इंद्र-धनु रूपी प्रबल एकता की सतरंगी छवि को देख,
शत्रु के माथे पर भी आज खिंच रही है चिन्ता की रेख।
राष्ट्र को आज चाहिए एकलव्य-से साधक निष्ठावान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए चन्द्रगुप्त की प्रबल संगठन-शक्ति,
राष्ट्र को आज चाहिए अपने प्रति राणा प्रताप की भक्ति।
राष्ट्र को आज चाहिए रक्त, शत्रु का हो या अपना रक्त,
राष्ट्र को आज चाहिए भक्त, भक्त भी भगतसिंह-से भक्त।
राष्ट्र को आज चाहिए फिर बादल-जैसे बालक रणधीर,
राष्ट्र की सुख-समृद्धि ले आयें, तोड़ रिपु-कारा की प्राचीर।
और बूढ़े सेनानी गोरा की वह गर्वभरी हुंकार,
शत्रु के भूल जाएं औसान, अगर दे मस्ती से ललकार।
राष्ट्र को आज चाहिए फिर अपना अल्हड़ टीपू सुल्तान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

आज अनजाने में ही प्रबल शत्रु ने करके वज्र प्रहार,
हमारे जन-मानस की चेतनता के खोल दिए हैं द्वार।
राष्ट्र-हित इससे पहले, कभी न जागी थी ऐसी अनुरक्ति,
संगठित होकर रिपु से आज, बात कर रही हमारी शक्ति।
प्रतापी शक्तिसिंह भी देश-द्रोह का जामा आज उतार,
राष्ट्र की तूफानी लहरों में करता है गति का संचार।
आज फिर नूतन हिन्दुस्तान, लिख रहा है अपना इतिहास,
राष्ट्र के पन्ने-पन्ने पर अंकित अपना अदम्य विश्वास।
चन्दबरदाई के अन्तर से फूट रहे ज्योतिर्मय गान,
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण॥

# हर व्यक्ति हिमालय बन जाए !

श्री नरेन्द्र शर्मा

हर व्यक्ति हिमालय बन जाये !
किस-किस को लांघेगा दुश्मन ?
हम खड़े हुए दुश्मन आये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

भारत पर रिपु की लगी दीठ,
जब हर घर होगा शक्ति पीठ
हर नर का सीना तन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

कैसी क्षण दो क्षण की देरी ?
हर साँस बने अब रणभेरी ।
सैनिक को रण-कंकण भाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

कस कमर करे अभिमान देश,
हम सब का तन-मन-प्राण देश ।
यह देश रहे, जीवन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

# बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती

श्री नलिन

बढ़े चलो ! बढ़े चलो !! सदर्प वीर भारती ।

तुम बढ़ो परम प्रलय-पवन प्रबल प्रचण्ड हो,
तुम तपो महामरण निदाघ-मार्तण्ड हो ।
वज्र चरण चाप से पिसें पहाड़ पंथ के,
शीघ्र शत्रु-वाहिनी विखण्ड खण्ड-खण्ड हो ।
मातृ भूमि हो प्रसन्न आरती उतारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

सर्वनाश-नृत्य-मग्न कालिका करालिका,
कर उठी निनाद अट्टहास मुण्ड मालिका ।
तुम करो प्रसन्न शीशदान रक्तदान दे,
सद्यरक्त-तृषित दनुज-दुष्ट-गर्व-घालिका ।
भयंकरा खड़ी विनाश-पंथ पर पुकारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

युद्धनाद से गगन, दिशा, धरा प्रकम्पिता,
शत्रु-सैन्य-ध्वस्त-त्रस्त-व्यस्त प्राण-शंकिता ।
विदीर्ण तीव्र वार से सगर्व शत्रु-वक्ष हो,
दिगन्त पर विजय रहे अराति-रक्त-अंकिता ।
देव बालिकाएं विजयमाल ले निहारतीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

# यह शेरों का देश

○

श्री नन्दकिशोर 'रजनीश'

कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से !

यह शेरों का देश यहां का हर ज़र्रा तूफानी है,
इसकी सीमा पर अर्जुन के बेटों की निगरानी है ।
इस धरती के लाल चिन गये हँस-हँस कर दीवारों में,
धरती को दहलाने वाला बल इनकी ललकारों में ।
लोहा मोल न ले कोई इन अलबेले मस्तानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से ।

कौन निकाल रहा है हीरे, मुकुट हिमालय के सिर से ?
किसने अपना हाथ दिया है शेरों के मुंह में फिर से ?
किसका हाथ बढ़ा दूषित करने को गंगा की धारा ?
थके हुए शेरों को किसने आज अचानक ललकारा ?
हम बचपन से खेल खेलते आये हैं तूफानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से ।

सोमनाथ का धाम पुरातन, हरिमन्दिर का झिलमिल तन,
कुतुब लाट का ऊँचा मस्तक, ताजमहल का निर्मल मन ।
इन सब की सौगन्ध देश के बालक, वृद्ध, जवानों को,
एक मरे तो मरे मार कर सौ चीनी हैवानों को ।
निकल पड़े वीरों की टोली मस्जिद से, बुतखानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से ।

शरणागत की रक्षा करना, भाई को भाई कहना
अब तक यही चला आया है भारत का अनुपम गहना
पर जो भाई बन कर तन में छुरी हमारे मारेगा,
जी चाहे सौ बार लड़े पर वही युद्ध में हारेगा।
बस इतना कहना है हमने जंगबाज़ हैवानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

विजय दुन्दुभि गूंज उठे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों से,
हर गिरजा का आँगन भर दो गोलों से हथियारों से।
बहनो! आज माँग लो राखी की कीमत निज वीरों से,
आज दूध की लाज रखा लो माताओ! रणधीरों से।
अनगिन बैरी मरें हमारे सबल अचूक निशानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

आज अगर जयचन्द कोई भी घर में आग लगायेगा,
इतना रक्खे याद कि उस में स्वयं वही जल जायेगा।
इतिहासों की ग़लती आज न फिर दुहराई जायेगी,
कौन मित्र है, कौन शत्रु है, परख आज हो जायेगी।
सावधान हो कर चलना है अपनों से, बेगानों से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

# अंधे चरवाहो

○

**श्री नन्द चतुर्वेदी**

अंधे चरवाहो
भेड़ों को दूसरों की ढालों पर
जाने से रोको ।
ओ रे, ओ ! सुनो !
अब वैसे दिन नहीं
सूरज है सब कहीं
अंधे हो तुम
तो दूसरो की आँखों से
उगते हुए सूरज की
रोशनी को आँको ।
ओ रे, ओ ! सुनो !
मेरी चरागाहों में
एक पर
जागते हैं पिता
दूसरे पर मैं
तीसरे पर
मेरा सूर्य-सा पुत्र
इसीलिए कहता हूँ
ओ रे, ओ ! सुनो ।
अपनी इन भेड़ों को लौटा लो
और कहीं, अपनी ही ढालों पर पालो
अंधे चरवाहो ।

# तप्त लहू की धार बह चली

○

**श्री नागार्जुन**

वो निकले ज़हरीले कीड़े लाल कमल से,
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल से।
हमने देखा, रंग बर्फ का बदल रहा है,
शांति सुन्दरी का तो दम ही निकल रहा है।
जी करता है, सीखूं मैं बन्दूक चलाना,
जी करता है सीखूं, मैं फौलाद गलाना।
जी करता है, जन-मन में भड़काऊं शोले,
जी करता है, नेफा पहुंचूं, दागूं गोले।
विश्व शांति की घायल देवी चीख रही है,
सर्वनाश की डायन हँसती दीख रही है।
दुनिया की छत पर टपकी है लार दनुज की,
पंचशील से बिदक गई चेतना मनुज की।
सीमाओं पर लहराया भारत का यौवन,
छलक गया है लहू, शर्म से पिघला कंचन।
दीप-शिखा सी कोटि-कोटि मन की इच्छाएं,
मचल उठी हैं, सेनापति का इंगित पाएं।
वह निकले ज़हरीले कीड़े लाल कमल से,
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल से।

# उठो, हिन्द के बेटो, लहू पुकारे तुम्हें जवानों का

○

श्री नित्यानन्द महापात्र

उठो, हिन्द के बेटो, लहू पुकारे तुम्हें जवानों का।
करो कलेजा वज्र और लो तर्पण का प्रण, प्राणों का।

घुस आया कैलाश कक्ष में यक्ष यज्ञ की तैयारी।
जहां सती ने पति की हेठी से अपनी काया काटी।

जागो हे योगीश्वर अपने ध्यान नेत्र को खोलो तुम।
प्रलय विषाण फूंक ताण्डव के ताल-ताल पर डोलो तुम।

ड्रैगन के पशुबल का है उत्पात मचा हिमशृंगों पर।
पाशुपात लो हाथ, भयंकर प्रलयंकर हे शिवशंकर।

बगुला भगत बना वह दिल में भरा हलाहल विष भारी।
ओंठों बोल साम्य के मीठे, बनता है शाकाहारी।

बनो पिनाकपाणि डमरू लो, नीलकंठ जागो सत्वर।
दगाबाज़ छलिया की छाती दो त्रिशूल से छलनी कर।

दूषित लोहू बहे, पाप उसकी धारा में धुल जावे।
गौरीशंकर शिखर शृंग पर धर्मचक्र फिर फहरावे।

रूपान्तरकार : श्री हंसकुमार तिवारी

# भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है

○

**श्री नीरज**

छिपते जाते हैं सूरज, चाँद, सितारे सब,
आँधी बिजली के साथ गरजती आती है,
हो सावधान! संभलो! अब ओ पेकिंग वालो,
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।

हैं काँप रही चोटियाँ पहाड़ों की थर-थर,
ओले बन कर के शोले जलते जाते हैं,
कटते जाते हैं दुर्ग-दहाने तोपों के,
टैंकों पर इस्पाती बादल मँडराते हैं।

अंगड़ाई लेकर जाग रहा हिन्दोस्तान,
संगीनों पर ज़िन्दगी भैरवी गाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

सन-सन सनसना उठा है चक्र-सुदर्शन फिर,
भर-भर खप्पर चामुंडा जीभ पसार रही,
डम-डम-डम डिमक रहा डमरू प्रलयंकर का,
हर-हर-हर-हर-हर दिशा-दिशा हुंकार रही।

ऐसी चट्टान बना है अपना हर जवान,
जो गोली लगती फूलों-सी झर जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

है खौल उठा जट्टों-मरहट्ठों का शोणित,
पंजाबी शेर दहाड़ रहे मैदानों में,
हैं तड़प उठे जाँबाज़ गोरखे गढ़वाली,
हैं धधक उठे अंगार राजपूताने में।

ऐसा जादू कर दिया तिरंगे झण्डे ने,
मन्दिर के बढ़कर मस्जिद तिलक लगाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

रह-रह कर गंगा-जमुना में आ रही बाढ़,
नादिरशाही सिंहासन डूबा जाता है,
हो रहे खून मनसूबे चोर-लुटेरों के,
विंध्याचल सोये ज्वालामुखी जगाता है।

डाकुओ, हटो तिब्बत, लद्दाख, उपूसी से,
वरना दिल्ली की सेना पेकिंग आती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

पड़ रही काल की भौहों में सलवटें शिकन,
हैं खड़े हो गए तन कर लन्दन, वॉशिंगटन,
एशिया, अरब, योरुप, अफरीका सब मिलकर,
हैं लगा रहे भारत के माथे पर चंदन।

अब भी चेतो, अब भी चेतो, चाऊ-माओ,
फिर-फिर हिटलर की मौत तुम्हें समझाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

वैसे तो भारत की धरती है प्रेम-भूमि,
बिन माँगे इसने सबको प्यार लुटाया है,
पर चबा भी गयी है यह चंगेज़ों को, जब
इसके घर कोई तोपें लेकर आया है।

ओ खबरदार! इस ओर घुमाना नज़र नहीं,
उठती जो इस पर आँख फोड़ दी जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

ग़द्दारी की तुमने तिब्बत की जनता से,
कर दिये अमन के कत्ल तरुण सपने सारे,
कोरिया चीर डाला तुमने दो टुकड़ों में,
धर दिये जला कर वियतनाम में अंगारे।

मानवता के कातिलो मगर यह याद रहे,
क़ातिल की ही तलवार उसे खा जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।
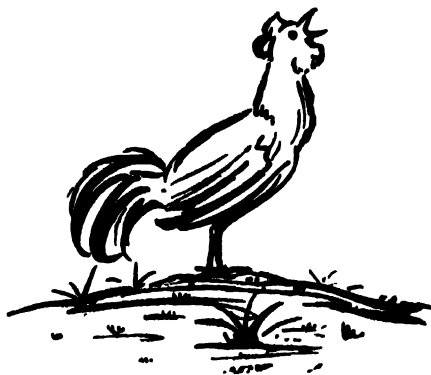
# मरना वस्त्र बदलना है

○

**श्री पद्मकान्त मालवीय**

आज चीनियों नें अपने मद में हम को ललकारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

बौने घुस आए हैं मानसरोवर और हिमालय में,
हम सब के मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजा और शिवालय में।
जीवित कौन रहेगा यदि भारत ही मिट जाएगा तो ?
कौन मरेगा यदि भारत दुनिया में जी पाएगा तो ?
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है,
आज चीनियों ने अपने मद में हम को ललकारा है।

धोखा देकर बढ़ आए हैं वे पर डर की बात नहीं,
जिसका हो न सवेरा ऐसी होती कोई रात नहीं।
पहली जीत हराने वाली, अन्तिम जीत-जीत होती,
भारत जननी नहीं धैर्य अपना विपत्ति में भी खोती।
जो अधीरता में आगे बढ़ता सदैव वह हारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

जाग गए हैं सिंह खैर माँगे दुश्मन अब जानों की,
लहराती टुकड़ियाँ चल पड़ीं बूढ़ों और जवानों की।
एक-एक चीनी को जब तक बाहर हम न फेंक देंगे,
भारत माँ की कसम, चैन हम तनिक नहीं तब तक लेंगे।
या तो विजय प्राप्त होगी या फिर गंगा की धारा है,
आज चीनियों ने अपने मद में हमको ललकारा है।

चीनी चोरों को पीकिंग तक अब हम को पहुंचाना है,
अपनी तलवारों का जौहर इनको कुछ दिखलाना है।
विजय प्राप्त होगी ही, लाशों पर हम लाश बिछा देंगे,
पीछे आने वाले पीकिंग तक जिस पर चढ़ जाएंगे।
चप्पा-चप्पा मातृभूमि का प्यारा हमें हमारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

भूमि-सुता सीता-सीमा चीनी-रावण ने हर ली है,
राम-प्रतिज्ञा हमने भी रावण-विनाश की कर ली है।
रावण का कर अन्त, हमें सीता को वापस लाना है,
राम राज्य का झंडा फिरसे दुनियाँ पर फहराना है।
"लंका दहन, मरण-रावण" बस एक यही अब नारा है,
आज चीनियों ने अपने मद में हम को ललकारा है।

रावण रहा न कंस, न चाओ-माओ ही रह जायेंगे,
काली करतूतों, चालों का, इनको मज़ा चखायेंगे।
इक लख पूत, सवा लख नाती, रावण के न काम आए,
बानर भालू की सेना ले लंका में जब राम आए।
बच्चा-बच्चा मातृ-भूमि का राम बना, असिधारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

कपट पूर्ण हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा है,
रण में कैसा किसका नाता ? प्रभु ही एक सहारा है।
प्राणिमात्र भाई हैं सबसे प्रेम हमें है, नाता है,
किन्तु आततायी का सर पैरों से रौंदा जाता है।
जीता कब असत्य दुनिया में, और सत्य कब हारा है ?
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

शरशैया पर पड़े भीष्म की है सौगंध बढ़े जाओ,
अर्जुन, भीम और अभिमन्यू की है कसम चढ़े जाओ।
वाहगुरू की चिड़ियें चीनी-बाजों से अब आज भिड़ें,
अंगद के से समर-भूमि में पैर जहां भी पड़ें पड़ें।
प्यासे तड़प रहे इमाम ने हमको आज पुकारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

रोयेगा इतिहास तनिक भी चूके अगर प्रमाद किया,
भावी पीढ़ी शर्मायेगी आज व्यर्थ यदि वाद किया।
चिन्तन एक, एक मन, वाणी, एक हृदय हो, बढ़ो, लड़ो,
दुश्मन के शीशों पर बनकर गाज आज तुम टूट पड़ो।
जीवन के सारे मूल्यों का अपने वारा न्यारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

सदा अहिंसा उगी पली है साये में तलवारों के,
जीवन-कमल खिला करता है बीच प्रलय की धारों के।
मातृ-शक्ति-पूजा में निर्भय सदा शीश का दान दिया,
जीवन, सुख, ऐश्वर्य और वैभव का तब वरदान लिया।
वीर राज्य करता है या फिर सीधे स्वर्ग सिधारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

# ओ हिमालय के सपूतो !

श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

ओ हिमालय के सपूतो !
शीश पर बाँधो कफन
तैयार हो लो, आँख खोलो
एक धोखेबाज़ दुश्मन आ रहा बढ़ता निरन्तर
दे रहा क्षण-क्षण चुनौती
देश की स्वर्णिम धरा को।

यह वही दुश्मन
हमें जिस ने पुकारा 'मित्र' कह कर
मित्र क्या, जिसको 'सगा भाई' बनाया
हौसला जिसका बढ़ाया
मर रहा था जब, न कोई पूछता था
तब जिसे हमने सदय हो
गर्व के गिरि पर चढ़ाया।

यह वही दुश्मन
जिसे सर्वस्व देकर
विश्व भर की लांछना-अपमान सहकर
चाहते थे हम कि यह भी
विश्व के सिरमौर देशों में गिना जाए
मिले इसको कि जो है प्राप्य इसका।

यह वही दुश्मन
नहीं इन्सानियत का नाम जिस में
साँस में नफ़रत भरी है
रक्त में हैं कुलबुलाते
क्रूरता कीटाणु अनगिन
तन भरा है पीतिमा से
मन भरा है कालिमा से
है नहीं भाती जिसे लाली उषा की
या कि मानव के मधुर कोमल हृदय की
प्यार की संज्ञा जिसे दी है मनुज ने।

यह वही दुश्मन
जिसे अभिमान जन-बल का बहुत है
आदमी जिस के लिए है कोयला बस
झोंक दो बे-खौफ उसको
युद्ध की प्रज्वलित भट्ठी में
करे यदि प्रश्न वह कुछ
'लड़ रहा वह किस लिए!
किससे' सुनो मत
तोप के मुँह पर चढ़ा दो!

यह वही दुश्मन
जिसे विस्तारवादी नीति प्रिय है
नाम को है साम्यवादी, किन्तु है साम्राज्यवादी
चाहता नेतृत्व करना विश्व का जो
और ज़लता है प्रगति से जो हमारी

शान्त अपने देश को इसने दबाया
और सीमा पर सकल जन-बल लगाया,
चाहता है वह हमें अब पंगु करना !
इस बहाने विश्व की सब शांति हरना !
तुम कि जो अन्याय सह सकते नहीं हो,
प्राण भय से मूक रह सकते नहीं हो,
तुम कि जो निर्भीक होकर प्राण देते
पद-दलित को शक्ति देते, त्राण देते,
आज इस विश्वासघाती को न छोड़ो
आज तुम, इसके विषैले दाँत तोड़ो
याद आ जाए छटी का दूध इसको
ले समझ यह छेड़ बैठा मूर्ख किसको !
सब उठो जागो,
अलख घर घर जगा दो
पुरुष-नारी, वृद्ध-बालक, युवा-युवती
सभी को सैनिक बनाओ
जो जहाँ भी हो उसे बस एक धुन हो
"शत्रु का संहार करना है
उसे इस भूमि से बाहर भगाकर
मुक्ति का शृंगार करना है।"
याद आए तीर अर्जुन का, गदा उस वायु-सुत की
असि शिवा की, और भाला उस प्रतापी का
सभी की याद होकर सघन
हम में शक्ति भर दे, देश की अनुरक्ति भर दे
और हम इस शत्रु को जीता न छोड़ें
तब सफल है जन्म अपना !

# जितना रक्त हिमालय मांगे उसको देंगे

श्री पुरुषोत्तम कुमार निझावन

काँप उठा ब्रह्मांड और डोले दिगंत सब,
त्राहि त्राहि का शोर मच गया भू-अम्बर में।
कैसा यह विस्फोट ? कौन ज्वाला-गिरि मचला,
यह कैसा भू-कम्प, विकल क्यों शेष नाग है ?
शिव का तीजा नेत्र खुल गया है क्या फिर से ?
आज स्वर्ग मे क्यों कोलाहल ही कोलाहल ?
और हिमालय की बर्फों में आग लगी है ?
लगता है रण-चंडी फिर से नाच रही है ।
त्रस्त मनुजता पूछ रही है अरे हुआ क्या ?
प्रलय-मेघ क्यों छाए जाते पूर्व दिशा पर ?
वही दिशा कि ज्ञान-सूर्य जिस से उगना था ।

ठहरो, तुम्हें बताऊं आज घटा क्या ऐसा !
लख कर जिस को प्रकृति तत्व सब क्रुद्ध हो गए,
और सिंधु भी छोड़ रहा अपनी सीमाएं।
आज शांति का देव खड्ग धारण करता है,
समझो खुद भगवान बुद्ध अर्जुन बनते हैं,
गुरु दशमेश उठाते हैं फिर से निज खंडा,
धारण करते चक्र-सुदर्शन खुद बापू हैं,
क्योंकि युद्ध से त्रस्त धरा पर एक यही तो,
शांति बचाने का रस्ता बाकी है भाई !

यह तलवार उठी है तो समझो अब जल्दी,
वह बर्बर, बेशरम देश नत-मस्तक होगा,
जिस की राजनीति उस को यह सिखलाती है—
पहले मित्र बना कर पीछे छुरा घोंप दो।
जिस की नैतिकता में केवल यही एक 'गुण'
जो भी दूध पिलाए उसको ही डसना है।
वह कृतघ्न मानवता का ही शत्रु नहीं है,
निज संतानों के माथे का कलुष दाग़ है।

चीन, अगर तुम मानो तो इक कुटिल बाज़ है,
जिस को हर दिन नया मांस अच्छा लगता है,
जो समीप के वृक्षों पर बैठी चिड़ियाएं,
देख-देख कर मन में ललचाया करता है,
कल उस ने तिब्बत की चिड़िया को पकड़ा था,
आज गरुड़ पर उस ने सोते चोंच लगाई।
पर कोई भय नहीं कि अब वह जाग गया है,
और अमन की फाख़्ता मुक्त शीघ्र ही होगी।
गगनों में अब रव, कोलाहल युद्ध मचा है,
दोनों अब पर तोल झपटते इक-दूजे पर।
विजय, सत्य की होगी खुद भगवान कह गए,
कौन युद्ध में जीतेगा इस में क्या संशय ?
आज देश का यौवन मचल रहा है, फिर से,
एक-एक वर-वीर युवक हुंकार रहा है,
'जितना रक्त हिमालय मांगे उसको देंगे,
ताकि न कोई दुश्मन बच कर वापिस जाए।'

○

# मुझे मृत्यु से प्यार है

○

श्री प्रदीप पन्त

गोलियों की आवाज़
चट्टानों से
टकरा-टकरा कर
थरथरा जाती है,
माँ !
इस युद्धभूमि में
तुम्हारी याद
बहुत आती है ।

○

कल की ही बात तो है
दुश्मन हमारे सीने तक
चढ़ आए थे
पर,
बहन !
मुझ पर
आशाएं लगाए बैठी
ओ, मेरी कुंवारी बहन !
मैंने उन्हें दूर तक
खदेड़ दिया था ।
तुम ने
अपनी कोमल उंगलियों से
राखी बांधते समय
यही तो सौगन्ध दी थी
कि मैं
तुम्हारी रक्षा करूं ?

○

और अभी-अभी
सारा आकाश
खून के छींटों से
भर गया था,
पर,
मेरे पिता !
ओ, मेरे शूरवीर पिता !
मैं नहीं मर गया था ।

○

ओ मेरे पिता !
ओ मेरी बहन !
ओ मेरी माँ !
तुम सब
मेरे देशवासी हो
और तुम सबके लिए
मैं प्रतिज्ञा करता हूं
कि इन
बर्फ ढकी खाइयों में

खड़ा मैं
दुश्मन की सेना से
अन्तिम साँस तक
लड़ूंगा,
क्योंकि
मैं मर नहीं गया हूं।

○

ओ मेरी माँ !
ओ मेरी बहन !
ओ मेरे पिता !
यहां चीड़-देवदारों की
शीतल छाँह नहीं है;
यहां मृत्यु है.....
देश के लिए समर्पित
एक मृत्यु !

और ऐसी मृत्यु को,
मेरे देशवासियो !
मैं अंगीकार करूंगा,
क्योंकि मुझे
ऐसी मृत्यु से प्यार है
क्योंकि मैं ऐसी मृत्यु के
पूर्व ही मर नहीं गया हूं।

○

मेरी मृत्यु के बाद
ओ मेरी माँ !
मेरी बहन !
मेरे पिता !
बर्फ लदी इन खाइयों में,
बन्दूक देकर
मेरे छोटे भाई को
भेज देना
क्योंकि घर से
मेरी विदाई के समय
उसने तुतलाते स्वर में
कहा था—
"मुदे बी
ऐती मित्यु ते प्याल ऐ।"
[मुझे भी
ऐसी मृत्यु से प्यार है।]

# शहीदों के नाम

○

**श्रीमती प्रभजोत कौर**

हमारे प्यार की परख, इस धरती की मिट्टी करे
देश की स्वाधीनता पलती रक्त के सहारे
मिट गए जो वतन के सम्मान के लिए
याद उनकी सदा
ताज़ा रहे, धधकती रहे ।
कौन कहता है मिट गए का नाम नहीं ?

मिट गए का जीवन में स्थान नहीं ?
किसने कहा--
इतिहास में क्या है पड़ा ?
कौन बीती घटनाओं को देखता ?
हुआ क्या यदि बह गया युद्ध में रक्त
कौन किस्सा इसका घड़ता रहेगा ?
पर यह किस्से ज़िन्दगी और मौत के
हश्र तक प्रतिध्वनित ही रहेंगे ।
कौन भूल सकता है ज़ुल्म को, पाप को
मित्रद्रोही वैरियों की घात को
लेकर घृणा-डाह, ज्वाला मौत की
आ गए लाँघ हिमालय को लुटेरे
आ गए लम्बे मंसूबे सोच कर
देश मेरे की पूंजी को ललकते

भंग कर सौगन्ध, तोड़ कर विश्वास को
पददलित किया समस्त वायदों की राशि को ।

देश मेरे के बहादुर सूरमे
वतन के लिए दे रहे हैं प्राण
जाति दुविधा भूल आए घर को
देखा जब, देश पर मुसीबत बनी
कौम को जगाया ललकार कर—
जीने का क्या अर्थ इज़्ज़त खोकर
जीना है तो जीने योग्य, हो रहो,
पराधीनता के अपमान से डरो ।
समय है इस का साक्षी
ख़ून गवाही दे रहा
हक तक करेंगे
इतिहास का कर्ज़ा अदा ।

# रक्खेंगे बन्दूक भरी तय्यार

○

### डा० प्रभाकर माचवे

तिब्बत एक मुसीबत में से
लामाशाही से जा गिरा
साम्यवाद तानाशाही में,
गर्म कड़ाही में से निकला, पड़ा आग में ।
भारत के सीमा तट पर
यह आग भड़कती बढ़ी आ रही
ऑटोमेटिक बन्दूकों के पीछे
टिड्डी जैसे चीनी
मनुष्य जैसे चींटी कीड़े और मकोड़े
ज़ख्मी हुआ, उतारी वर्दी
नंगा ही उस बर्फ-खड्ड में
छोड़ दिया । उस पर से जाते ।
कुचलते हुए फौजी बूट ।
शस्त्र गाड़ियां, बर्बर ऐसी नई राक्षसी ये सेनाएं,
करेंगी विश्व लाल या विश्व 'मुक्त'
क्या इसी लिए कन्फ्यूशस से
लाओत्से और मेन्शीयस से सान-मिन-यू सिद्धान्तों,
सन-यात-सेन आदि के
विश्व शांति के नारों तक
इतनी बड़ी बड़ी ये बातें
बढ़-चढ़कर लम्बी चौड़ी थीं ?

इसी लिये क्या एक प्रलम्बित
भिक्षु-परिव्राजक-पर्यटकों
हुएनस्वांग या फाहियान की
काश्यप मातंग या
परमार्थों की
एक मालिका
सहस्र वर्षों तक
हिम नग की कठिन घाटियों,
दर्रों में से, घने जंगलों,
खड्डों में से
गुजरी, कितने नष्ट हो गए?
इसी लिये क्या बुद्ध-वचन वे
महायान बन दूर-दूर तक
पीली नदियाँ, अनुल्लंघ्य वह
पार बड़ी दीवार चीन की
कर के पहुंचे दूर
कोरिया वा जापान तक ?
आज नहीं शब्दों की कीमत
आज नहीं आश्वासन सार्थक
आज नहीं रह गया भरोसा
अक्षरा बलि जैसी ही
हेत्वाभासमयी वाणी का
तर्क-कुतर्क प्रचार—झूठ से भरा,
भावना का
यह थोथा शून्य प्रदर्शन!
सब कुछ केवल रात महाभय
बर्फीली मौत का हिमानी
सर्वनाशमय पंजा !
पर क्या हम ऐसे दुमुंहे
दोगले, दोहरे मन-वालों की
बात मानकर अपनी भू का
एक इंच भी हिस्सा
यों दबोचने देंगे ?
नहीं असंभव
नए वर्ष की यही प्रतिज्ञा
जब तक
हम न खदेड़ेंगे शत्रु को
अपनी मातृ-भूमि से
जब तक एक-एक
सैनिक परदेशी
इस भू-सीमा पर से न हटेगा
नहीं चैन हम लेंगे
सब विलास, सब सुख-सुविधाएं,
सब यह समय और धन का
अपव्यय हम छोड़ेंगे।
नव युग में
नव-निर्माण सुरक्षित होगा
नहीं अब कभी वैदेशिक
मीठी मुस्कानों, लम्बे-चौड़े
पंचशील के वादे हम मानेंगे।
रक्खेंगे बन्दूक भरीं तैयार!
हँसेंगे !

# हमारी भूमि

○

श्री प्रयाग शुक्ल

धूप रखनी है खुले आकाश की

हमको सुरक्षित ।

स्वप्न रखने हैं हमें निज भूमि के

चिरकाल संचित !

हमें फसलें हैं उगानी—हों नहीं

धन-धान्य वंचित !

शांति के प्रहरी !

नहीं हम हैं अरक्षित !

यह हमारी भूमि,

इस ने हमें जो जीवन दिया है,

यह इसी के लिए, जब इसकी ज़रूरत पड़ी,

हमने इसी को अर्पित किया है ।

दृढ़ सदा इसकी सुरक्षा के लिए,

कटिबद्ध, तत्पर !

एक इस संकल्प से हम डिग न सकते

कभी, किंचित् !

# राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ

○

**श्री प्रेम प्रकाश**

किसने आज मुकुट खींचा भारत माता का,
किसने आकर आज सिंह से आँख मिलाई!
किसने दिया आज आमन्त्रण महायुद्ध का,
किस पापी के पापों से धरती अकुलाई!

लगता है दानवता का दम भरने वाले,
आज हिमालय से आँधी बन टकराये हैं।
लेकिन यह गिरिराज हमारा शीश मुकुट है,
प्रलयंकर तूफान न जिसे झुका पाये हैं।

यह उस भारत के माथे का उज्ज्वल मोती,
जिसके बच्चों ने शेरों के दांत गिने हैं।
जिसके वीर शहीद झूलते थे फांसी पर,
दीवारों में जिसके बालक चुने गए हैं।

यह पावन धरती है गुरुगोविन्द सिंह की,
यहां वीर बन्दा वैरागी ललकारा है।
यहां चला है राणा का दोधारा खंडा,
वीर शिवा ने यहां ज़ालिमों को मारा है।

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ,
पागल बन कर चट्टानों से मत टकराओ।
वर्ना आग हिमालय से पीकिंग तक होगी।
प्रलय स्वयं अवतरित धरा पर हो जाएगी।

# अनुपम बलिदान

श्री बदरी नारायण दास
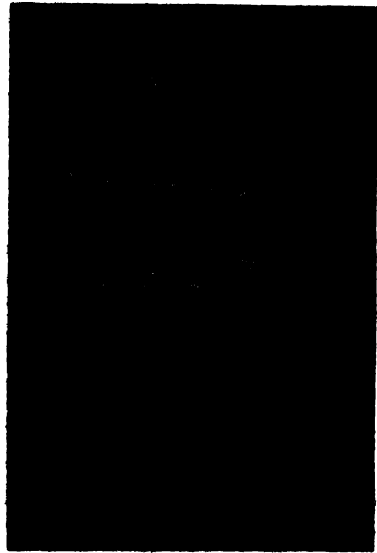
ब्रिगेडियर होशियार सिंह

प्रिय होते हैं फूल, खिलें वे किसी बाग या वनमें,
वीर कहीं लें जन्म सदा पूजे जाते जन-जनमें।
गाती है यह रावी, सतलुज, झेलम, व्यास, चनाब,
वीरों का पालना रहा है सदियों से पंजाब।

यह प्रदेश ही नहीं एक, यह तो उत्तर की ढाल,
अर्पित करता आया है यह नित नूतन जयमाल।
बसा किसी कोनेमें इसके एक गाँव संखोल,
बता रहा है जग को भारत की मिट्टी का मोल।

होशियार सिंह जैसे लौह-पुरुषको देकर जन्म,
उसने रख ली परम्परा की लाज, राष्ट्रका धर्म।
उसका उज्ज्वल नाम हो गया अंकित नील गगन में,
भीग गयी तीर्थों की पावनता उसके रजकण में।

उसका लाल बन गया भारत का अनुपम आभूषण,
शूरों का अभिमान और नवयुवकोंका आकर्षण।
जब उत्तर-पूरब में लाल लुटेरे थे बढ़ आये,
शांति-भूमि पर महायुद्ध के काले बादल छाये।

तब वह खड़ा हुआ पशुता के आगे सीना तान,
हँस कर रहा जूझता जैसे लहरों में चट्टान।
हत्यारों ने कर दी उसपर गोली की बौछार,
और देश के हाथों से गिर गयी एक तलवार।

हे संखोल ! विवश, आहत मन में ले जय का स्वप्न,
आज दूर तुझसे सोया है तेरा खोया रत्न।
इतिहासों में अमर रहेगा वह बन गया शहीद,
आलोकित होंगे समाधिपर नित तारोंके दीप।

उसके अस्थि-शेष से होगा वीरों का अवतार,
और रक्त-कण उसका चमकेगा बन नव-अंगार।
गिरि-वन में प्रतिध्वनि बन गूंजेगा उसका हुंकार,
उसकी कथा कहेगी युग-युग तक गंगाकी धार।
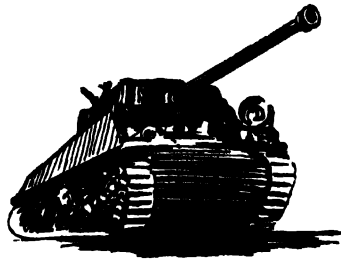
# कर दो पल में अब चूर-चूर चीनी सपना

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र

मैकमहोन की रेखा आधारित है जिस पर—
खींची निसर्ग ने वह हिमगिरि-लक्ष्मण-रेखा,
राष्ट्रीय संधि-पत्रों ने उस को मान दिया,
इतिहास सनातन ने साक्षी बन कर देखा !

उस सीमा को, उस लक्ष्मण-रेखा को, बल से—
चीनी शासन है आज मिटाने को तत्पर ;
जो जग-विद्रावण रावण से हो सका नहीं—
वह कर पाएगा कलियुग का निशिचर क्यों कर!

साम्राज्यवाद का गृद्ध साम्य की खाल ओढ़—
विस्तार-हेतु डैने अपने फड़-फड़ा रहा ;
सम्पाती ने रवि तक जा कर पर झुलसाए—
यह गृद्ध गलेगा यदि हिमगिरि पर खड़ा रहा !

दुनिया का जनमत, देखो, साथ हमारे है,
प्रभु का बल अपना, सत्य-न्याय का बल अपना ;
चालीस करोड़ जनों की दृढ़ हुंकारों से—
कर दो पल में अब चूर-चूर चीनी सपना !

मरभुक्खों को जब घर में चारा मिला नहीं,
तब चारा बनने चले हमारी तोपों के ;

हम निश्चय ही अपनी सच्ची बन्दूकों से—
उत्तर देंगे उन के झूठे आरोपों के !

तन दो, जिस से सेना की दृढ़ दीवार बने,
धन दो, जिस से सीमा पर तोपें छा जाएं ;
मन दो, जिस से अपने पंजे घूंसा बन कर—
दुश्मन के जबड़े तोड़ चलें दाएं-बाएं !

अपने ही सैनिक वीर जवानों की खातिर
तुम वस्तुदान दो, रक्तदान दो, दाताओ !
अपनी ही रक्षा को यह दान तुम्हारा है,
सर्वस्व दान दो, पूर्ण शक्ति से भ्राताओ !

हट जाएं विपद-घटाएं, स्वच्छ हिमालय हो,
स्वातंत्र्य-सूर्य अपना फिर से चमके उस पर ;
हम तब तक चैन न लेंगे जब तक दुश्मन को—
देंगे हम नहीं खदेड़ हिमालय से बाहर !

# कवि कुछ ऐसी तान सुना दे, गूंज उठे रणभेरी घर-घर

O

श्री बशीर ग्रहमद 'मयूख'
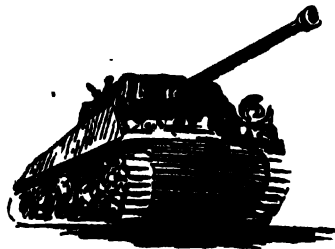
ग्रर्सा गुजरा जब गुलाब का कफ़न ग्रोढ़कर भँवरा सोया,
युग बीते जब मनका मजनूं लैला की जुल्फों में खोया,
नहीं नहाएगी चाँदनिया निर्वसना नीले ग्रम्बर में,
राह न देखे कोई राधा साँवरिया की किसी डगर में,

मत झनकारे किसी उर्वशी की पायल के घायल-से स्वर,
कवि कुछ ऐसी तान सुना दे, गूँज उठे रणभेरी घर-घर !

कालिय-मर्दन करे कन्हैया मानसरोवर की लहरों पर,
ताल ग्रौर बेताल बिठादें सीमा-ग्रंचल के पहरों पर,
भंग तपस्या कर न सकेगी ग्राज मेनका पञ्चशील की,
फौलादी गोलियां बनेंगी ग्रब सोने की कील-कील की,

खेतों में बारूद उगाने निकल पड़ा है मेरा हल-धर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूँज उठे रणभेरी घर-घर !

पनघट की राधा के नूपुर रणभेरी में परिवर्तित कर,
वृन्दावन की वंशी के स्वर, शिव शंकर के डमरू में भर,
ग्राज रुद्र के ग्रावाहन का रास रचाते ग्वाल-बाल-जन,
भृंग दे रहे ताल तांडवी प्रलयंकर का खुला त्रिलोचन,

डिम-डिम-डिम-डिम डमरू बाजे नाच रहा रे भारत-शंकर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

पंचशील के कबूतरों को दाना चुगकर मत उड़ने दे,
विश्व-शान्ति की परिभाषा में कायरता को मत जुड़ने दे,
तेरे स्वर पर समाधियों से निकल पड़ेंगे टीपू, नाना,
निकलेगी झाँसी की रानी, निकलेगी रज़िया सुलताना,

हूणों के शोणित से भर देंगे काली का खाली खप्पर
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

पृथ्वीराज लड़ेगा लेकिन साथ-साथ कवि चन्द लड़ेगा,
रावण-वध की हर चौपाई, भूषण का हर छन्द लड़ेगा,
हल्दीघाटी से उड़-उड़ कर इतिहासों की धूल लड़ेगी,
अर्जुन का हर मोह लड़ेगा, दुर्योधन की भूल लड़ेगी,

फिर दे देगी हाड़ा रानी अमर निशानी शीश काटकर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

कवि, तेरे शब्दों की स्याही से इतिहास लिखे जाते हैं,
कवि, तेरे स्वर पर मिटने को लाखों शीश चले आते हैं,
लोह-लेखनी से लिख देना रे कवि, उन वीरों का साका,
जो सीमा पर गए बाँकुरे दूध चुकाने भारत मां का,

हूणासुर हत होगा निश्चित, है यह तेरा वरदानी स्वर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !
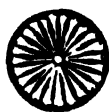
# फिर मां ने हमें पुकारा है

श्री बालस्वरूप 'राही'

'आजाद रहो या मर जाओ'
अब यही हमारा नारा है ।

भारत का मुकुट हिमालय है, हम सब के लिए शिवालय है,
चीनियो, न लांघो यह सीमा यह लक्ष्मण-रेखा हमारी है ।

है तपोभूमि मुनि-ऋषियों की यह तिब्बत या कोरिया नहीं,
जिसने भी इसको किया मलिन वह शत्रु आज तक जिया नहीं।

ले अपने प्राण हथेली पर हम सिर पर बाँधे हुए कफन,
स्वागत के लिए उपस्थित हैं, स्वीकार करो यह आमंत्रण ।

कुछ सोच-समझ कर चरण धरो, मत आत्मघात का वरण करो,
गल कर लावा बन जायेगी, यह बर्फ नहीं, चिनगारी है ।

हम जन्म-जात अभिमानी हैं, मत समझो भाल झुका देंगे,
कितनी ही महंगी मिले विजय शीशों से मोल चुका देंगे ।

'मरना तो वस्त्र बदलना है' यह हमें सिखाती गीता है,
यह देश यहां का हर क्षत्री, बस बरस अठारह जीता है ।

इतिहास हमारा सुनो-पढ़ो फिर तुम हिमगिरि की ओर बढ़ो,
तुम आराधक हो अजगर के तो भारत गरुड़-पुजारी है ।

तुम जन-समुद्र का ज्वार लिये अच्छा है, भारत पर उमड़े,
प्यासे अगस्त्य जाने कब से चुल्लू फैलाये हुए खड़े ।

थक गये लास्य कर महादेव अब तांडव-नृत्य रचायेंगे,
भू—गगन—रसातल—देवलोक हर दिशि में प्रलय मचायेंगे ।

तब पाओगे तुम त्राण कहां ले जाओगे निज प्राण कहां,
डमरू ही नहीं मात्र कर में भाला भी एक दुधारी है ।

पीने को मिल न सकेगा जल खाने को कौर नहीं देंगे,
मर जाओगे तो दफनाने को गज़ भर ठौर नहीं देंगे ।

माथों की भेंट चढायेंगे फिर मां ने हमें पुकारा है,
'आज़ाद रहो या मर जाओ', अब यही हमारा नारा है ।

# वतन पर कटने-मरने के लिये तैयार हो जाओ

○

**श्री बिस्मिल इलाहाबादी**

जवानो ! सो चुके जागो, उठो, बेदार हो जाओ,
वतन पर कटने-मरने के लिए तैयार हो जाओ ।

समझते हो ज़माना साफ हमसे खुलके कहता है,
हिमाला का है दिल छलनी हमारा खून बहता है,
इसीमें रात-दिन दुख सहके भी खामोश रहता है,
मज़ा आ जाये तुम लोहे की जब दीवार हो जाओ ।

यही चीनी हैं जिनको हमने आंखोंपर बिठाया था,
गले किस शौकसे, किस दिलसे, किस जीसे, लगाया था,
हम इनके हो गये थे औ' इन्हें अपना बनाया था,
अब इनके वास्ते चलती हुई तलवार हो जाओ ।

न हिन्दू हैं, न ईसाई, न हम देखो मुसलमाँ हैं,
वतन पर, देश पर, सौ दिल से अब सौ जाँसे क़ुर्बां हैं,
हमीं तो देश भारत के सिपाही हैं, निगहबाँ हैं,
जमा दो रंग अपना खंजरे-खूंख़ार हो जाओ ।

बड़े ग़द्दार हैं, इन चीनियों पर अब नज़र रखना,
हमेशा हर घड़ी बस इनकी साजिश की खबर रखना,
जहाँ तक हो सके हर बात में अपना असर रखना,
यह 'बिस्मिल' का है कहना हर तरह होशियार हो जाओ ।

## सिरों को बैरियों के तुम पिरोने के लिए आओ !

○

श्री बेढब बनारसी

बढ़ो वीरों की संतानो तुम्हारी है विजय निश्चित ।

जवानो, देशपर बलिदान होने के लिए आओ,
लहूसे अपनी तलवारों को धोने के लिए आओ !

पड़ी है देशकी स्वाधीनता ख़तरे के सागर में,
लिये साहस की नौका उसको ढोने के लिए आओ !

करो तर बैरियों के दामनों को रक्त से उनके,
उन्हीं के रक्त से उनको भिगोने के लिए आओ !

बनाओ मुण्डमालाएं, खड़ी सीमा पे है काली,
सिरों को बैरियों के तुम पिरोने के लिए आओ !

जवानो, भीम बन जाओ, जवानो, तुम बनो अर्जुन,
बनो तुम भीष्म, तुम तीरों पे सोने के लिए आओ !

बहुत दिन पर मिला है बल दिखाने का तुम्हें अवसर,
विजय डंका बजाने, कोने-कोने, के लिए आओ !

बढ़ो वीरों की सन्तानो, तुम्हारी है विजय निश्चित,
विजय-जयमाल तुम 'बेढब' संजोने के लिए आओ !

# शत्रु को खदेड़ दो !

○

**श्री बधड़क बनारसी**

शत्रु खड़ा द्वार पर, अब न ज़रा देर कर
अय जवान बेखबर, तुरत उलट-फेर कर
जाल वह उखेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

जाग उठी भारती, मां तुम्हें पुकारती
कवच से सँवारती, आरती उतारती
नया राग छेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

मान-दण्ड आज का, उस नगाधिराज का
घोष पुण्य-काज का, नव-युवक समाज का
काम है, निबेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

आज राष्ट्र है जगा, खून खौलने लगा
युद्ध के लिए पगा, शक्ति तोलने लगा
शत्रु को उधेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

दिल टटोलता रहा, झूठ बोलता रहा
द्वार खोलता रहा, ज़हर घोलता रहा
इसे बना भेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

क्यों इसे विवेक दो, क्यों सलाह नेक दो
भीम-शक्ति टेक दो, तुम उठाके फेंक दो
खाल ही उधेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

समय जानकर चलो, समर-गान कर चलो
वक्ष तान कर चलो, आत्म-दान कर चलो
नया राग छेड़ दो, चीन को खदेड़ दो।

# अर्जुन का गांडीव अभी तो जगा हुआ है

○

श्री भगवत शरण चतुर्वेदी

आज एक खत और लिख रहा हूं मैं तुझ को,
मेरा अन्तिम फर्ज़ मुझे ललकार रहा है।
मेरा ख़ून उबलता तूने कभी न देखा—
जिस में दुश्मन के प्रति भी सत्कार रहा है।

मेरे दुश्मन! तुझे दुश्मनी ही आती है,
दिल से दिल का प्यार निभाना तू क्या जाने?
तेरी मुँदी मुँदी आंखों का यह मुर्दापन——
खून और शबनम का अन्तर क्या पहचाने?

लेकिन मेरा देश कि जिसकी आंखें ऐसी,
जब तक काजल लगा हुआ है, कजरारी हैं।
जिन में सावन है, फागुन का अल्हड़पन है—
जो फूलों की रंगत जैसी मतवारी हैं।

लेकिन जब तक पलक झुके हैं, झुके हुए हैं,
किन्तु अगर खुल गए, भयंकर हो जावेंगे।
तुझ को कैसे समझाऊँ मैं, दूर देश के——
यहां प्यार के पूजक, शंकर हो जावेंगे।

जिनकी आंखें खुलीं प्रलय फिर मच जाएगी,
दुनिया का शीतल जल ज्वाला बन जाएगा।

अगर किसी ने बदनीयत से भारत देखा—
हर चलता इन्सान शिवाला बन जाएगा ।

यह मेरा वह देश, कि जिस के हर आंगन ने—
अन्यायी की लाशों से यह धरती पाटी ।
कुरुक्षेत्र की अभी जवानी जली नहीं है—
अब तक जिन्दा मचल रही है हल्दीघाटी ।

अर्जुन का गाण्डीव अभी तो जगा हुआ है,
जगा हुआ है राणा का मतवाला भाला ।
वीर राम का तीर नहीं सो पाया अब तक—
अभी कृष्ण का चक्र उगलता जाता ज्वाला ।

वेदव्यासकी वाणी अब भी गूंज रही है—
'कर्म करो, लेकिन फल की अभिलाषा त्यागो !'
तुलसी का वह दर्शन अब भी बोल रहा है—
'हमलावर को मारो, मेरे साथी जागो ।'

लेकिन तुझ को पता नहीं है ओ अंधियारे,
मेरा तुझ से सदियों पहले का नाता है ।
मुझे शरम है केवल उस ही रिश्ते की बस—
क्योंकि मुझे सम्बन्ध निभाना भी आता है ।

मेरी प्यारी सीमा को हथियाने वाले,
मेरे तन को अपना यों बतलाने वाले !

अपने एक झूठ को सच करने की खातिर—
दुनिया का इतिहास अरे झुठलाने वाले !

बेजुबान सीमा से पीछे हट कर देखो,
कुछ मुखरित सीमाएं तुझ को बुला रही हैं।
जो अपने उस छिपे-झांकते यौवन की हैं—
पूजा में सिन्दूरी दीपक जला रही हैं।

तू अपनी कुछ भूलों को छोटी कह देगा,
किन्तु अगर इन्सान मर गया, तो क्या होगा ?
यदि पलकें मुंदते ही वह सिन्दूर पुंछ गया—
खिलने वाला फूल झर गया, तो क्या होगा ?

अगर पायलें बजते बजते टूट गईं तो
अगर खनकते कंगन ये नीलाम हो गए।
अगर चहकते आंगन कबरिस्तान बन गए—
और प्यार के प्यासे गर बदनाम हो गए।

तो तेरी खुदगर्ज़ी को हम दफना देंगे,
तुझ को हम इन्सान-परस्ती सिखला देंगे।
बहुत सुना होगा तूने शेरों की बाबत—
सोया शेर जगा हम तुझको दिखला देंगे।

अभी वक्त है, अपने घर वापिस जाने का,
अभी वक्त है, अपनी लज्जा रखवाने का।

अभी वक्त है, गल्ती में सुधार करने का,
अभी वक्त है, उलझी गुत्थी सुलझाने का ।

मुझे अगर डर है तो केवल इतना ही है,
तेरी ग़ल्ती से यह समय निकल जाए ना ।
तुझ को सबक सिखाने के मंसूबे से ही
दुनिया का यह नक्शा कहीं बदल जाए ना ।

इसी लिए मैं तुझे वक्त से बता रहा हूं,
इसी लिए मैं तुझे पत्र ये पठा रहा हूं ।
मुझे बुद्ध की बहुत अहिंसा प्यारी है—
इसी लिए मैं तुझे खून से उठा रहा हूं ।

तू सम्हलेगा, बहुत जिन्दगी बच जाएंगी,
कितनों के जलते सुहाग फिर मुसकाएंगे ।
कितने ही मासूम जिन्दगी फिर जी लेंगे—
फिर किसान खेतों में मस्ती से गाएंगे ।

किन्तु ध्यान इतना तो तू फिर भी रख लेना,
अगर बढ़ा आगे तो हस्ती मिट जाएगी ।
अपनी आज़ादी को कायम रखने भर को—
मेरी हर जिन्दगी झूम कर कट जाएगी ।
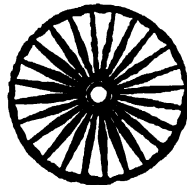
# अभय गान

श्री भवानीप्रसाद मिश्र

तू किसे देगा अभय
जो ख़ुद हुआ दिलगीर मन !
लौ जगेगी क्या
अगर टपकाएगा तू नीर मन !

दर्द है भीतर
तो अपने दर्द की कीमत चुका,
प्यार की डोरी से अपने
प्राण का धनु ही झुका,
छोड़ दे विश्वास के
इस पर चढ़ाकर तीर मन,
तू किसे देगा अभय
जो ख़ुद हुआ दिलगीर मन !

वन अँधेरी
अग्नि बानों के बिना
कटनी नहीं,
ज़ुल्म की छाती
मशक्कत के बिना
फटनी नहीं,
उठ खड़ा हो तू
अकेला ही निराशा चीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो ख़ुद हुआ दिलगीर मन !

प्यार है सब से
तो अपने काम में उसको उतार
है बहुत मुमकिन
कि दो-इक बार तू जाएगा हार
जीत की लेकिन खिंचेगी
एक दिन तस्वीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो ख़ुद हुआ दिलगीर मन ।

काम से ताकत बढ़ेगी
काम से सूझेगी बात
काम की किरनों से
क्या खा कर भला जूझेगी रात
काम का सूरज
तेरे हाथों में तू है मीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो ख़ुद हुआ दिलगीर मन !

# मांग रहा है देश जवानो तुम मे फिर कुर्बानियां

○

**श्री भाग सिंह**

मांग रहा है देश जवानो ! फिर तुम से कुर्बानियाँ
तुम को अपना खून बहा कर लिखनी नई कहानियाँ।

फिर तलवारों की धारो पर तुम को नाच दिखाना है,
अंगारों पर चलना है औ' आगे बढते जाना है।
सागर से लोहा लेना है, पर्वत से टकराना है,
कर दो तुम भारत-हित अपण अपनी शोख जवानियाँ ।
मांग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानिया !

सुन लो मेरी बहिनो तुम से भी मुझ को कुछ कहना है,
सोने के गहनों से बेहतर बन्दूकों का गहना है।
संगीनों के साये में तुम को दुश्मन मे कहना है,
गूज रही है घर-घर में, झाँसी की अमर कहानियाँ।
मांग रहा है देश जवानो तुम मे फिर कुर्बानियां !

आज हमें अपनी माता के पय का मोल चुकाना है
त्याग अमन का राग हमें अब रण का बिगुल बजाना है।
जालिम चाऊ माऊ को करनी का मजा चखाना है,
आज नही करने देंगे हम दुश्मन को मन-मानियाँ ।
मांग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानियाँ !
तुम को अपने शोणित से लिखनी है नई कहानियाँ।

○

# आज हिमालय जागा

○

श्री भानुशंकर व्यास बादरायण

भारत मां की रण-पुकार सुन,
जागा आज हिमालय,
आज हिमालय जागा !
युद्ध भूमि में जाग रहे रणवीर शूर
भागा कायर भाव दूर, बहु दूर
हिमालय जागा
आज हिमालय जागा !
ढोल-नगाड़े ढम-ढम भीषण स्वर करते
बज उठे,
बज उठी खंजड़ी महाकाल की ।
रणभेरी गूंजी,
विनाश अरिदल का करने
बलिदानी खप्पर भरने अब शत्रु-रक्त से !
जाग उठा गिरिराज
हिमालय जागा
आज हिमालय जागा !
बही आ रही धाराएं संस्कृति की उबल-उबल—
हिमगिरि के अन्तर से,
तरुणाई अनगिनत प्राण देने मचली
मरकर याकि मारकर लेंगी चैन
सज्जित होगी युद्ध-भूमि,

जागा आज हिमालय,
आज हिमालय जागा !
शेष नाग फुंकार उठा है शत-सहस्र फनों से—
पापी पापात्मा को !
रुद्र स्वयं जागे कैलास-शिखर से,
खोल तीसरा नयन !
भीषण, कराल, काल-ताण्डव रचाने को
डमरू, त्रिशूल महादेव ने सजाया
सदियों से था जो प्रबुद्ध, शांत, सुप्त,
वही हिमगिरि महान्, आज फिर से अनरागा।
जागा है
आज हिमालय जागा !
गीता का आदेश कृष्ण का
आज लग रहा जीवित,
कि पार्थ युद्ध है खेल,
आज तो धर्म-युद्ध है,
काल स्वयं संहार हार करने को जाग्रत
तुझे पाप से शुद्ध-बुद्ध करने आया है
गीता का संदेश
अजर अमरत्व प्रदाता
प्रतिध्वनित कर अपने उर में
आज हिमालय जागा
जागा आज हिमालय!

रूपान्तरकार : श्री प्रभागचन्द्र शर्मा

# राजपूत बुंदेला जागा, सिक्ख गोरखा जागा

श्री भारतभूषण अग्रवाल

सत्य अहिंसा और न्याय के बल पर ले आज़ादी,
दूर कर रहे थे हम अपने जीवन की नाशादी।
लगे हुए थे निर्माणों में तन से, धन से, मन से,
ऐसे में यह ज्वाल जंग की क्यों तुमने सुलगा दी?

बात-चीत का जाल बिछा कर देकर लाख भरोसे,
शान्ति और मैत्री के सपने तुमने पाले पोसे।
और देख कर हमें व्यस्त फिर छल से धावा बोला,
क्यों न आज फिर दुनिया का दिल तुम को जी भर कोसे।

अन्धे और स्वार्थी हो तुम, मित्र भला क्या होते,
जिनके मित्र बनोगे उनका जन्म जाएगा रोते।
पर बेशर्मो! तुम्हें शत्रु भी बनना हाय न आया,
घुसे चोर से घर में जब हम रहे चैन से सोते।

ओ निर्लज्ज लुटेरो, तुम को किस भ्रम ने भरमाया,
भला बात क्या सोची जो यों सोता शेर जगाया।
पूंछ ऐंठने का अब तुमको पूरा मज़ा मिलेगा,
एक हाथ पड़ गया अगर तो होगा तुरत सफाया।

पहले गला फाड़ कर बोले—हम सब 'भाई भाई,'
फिर कैलाश हिलाकर बोले 'आओ करो लड़ाई!'

त्रेता युग में भी ऐसा ही हुआ एक अज्ञानी,
जिसने यह कैलाश उठाकर अपनी मौत बुलाई।

भारत की रमणीक घाटियाँ, भारत के गिरि-कानन,
तुमने सोचा, हथिया लोगे इनको आनन-फानन।
पंचशील की हँसी उड़ाने वालो आँखें खोलो--
अब भारत के पंच आ रहे हैं बनकर पंचानन।

एक हाँक पर लो भारत का बच्चा-बच्चा जागा,
राजपूत, बुन्देला जागा, सिख, गोरखा जागा।
तुम्हें परांठा कर देने को जागा वीर मराठा,
हुंकारों से गगन गुँजाता जाग उठा है नागा।

पंजाबी, मद्रासी, सिन्धी, मलयाली, गढ़वाली,
मज़ा चखाने को आते हैं गुजराती बंगाली।
कान पकड़ कर चाओ-माओ बैठक-उठक करेंगे,
भेड़ बना करके रख देगी कामरूप की काली!

चाओ से कह दो, जैसे हो अपनी जान बचाओ,
माओ से कह दो तुम अपना सारा दम अज़माओ।
तूफ़ानी कदमों से आती है भारत की सेना,
भला चाहते हो तो इसके रस्ते से हट जाओ।

कदम-कदम पर धूम मचाते, सिर से कफ़न लपेटे,
भारतीय बढ़ते आते हैं अपनी शक्ति समेटे।
तोड़ झूठ का जाल तुम्हारा झूठों के सरताजो,
'सत्यमेव जयते' सिखलाएंगे बापू के बेटे!

○

# ओ देश के मेरे जवान !

○

**श्री मधुर शास्त्री**

चन्द्रमा ओझल न हो जाए,
सूर्य ठंडा जल न हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
आज तो सिर पर उठा ले आसमान !

राह तेरी देखती हैं आंधियां,
बिजलियां तेरे पगों में खेलतीं,
ये भुजाएं सिंधु मथती हैं सदा—
वार कितने ही समय के झेलतीं !
वीरता वह याद हो आए,
शत्रुता बरबाद हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
फिर उड़ा संसार पर अपने विमान!

आग की जंजीर में आज़ाद हो—
तू चिता में मुस्कराता फूल है,
फूल है तो शीश पर चढ़, अन्यथा—
पाँव के नीचे धरा की धूल है !
मृत्यु भी अभिमान बन जाए,
जन्म भी वरदान बन जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
तीर बन कर फोड़ दे काला निशान !

जीत कर सौन्दर्य मन का विश्व में,
साथ ही तन की विजय भी चाहिए,
गूंजता है सत्य यह इतिहास का
जन्म लेने को प्रलय भी चाहिए !

सांस हर तूफान हो जाए,
देश आलीशान हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
आज फिर बन जा हिमालय-सा महान !

एक हो कर भी अकेला तू नहीं,
साथ तेरे प्रेम औ' विश्वास है,
तू बहुत कोमल कमल-सा है, मगर—
वज्र-जैसा वक्ष तेरे पास है !

खेत औ' खलिहान भर जाएँ,
देह को बलवान कर जाएँ,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
जाग, बन मजदूर मेहनतकश किसान !
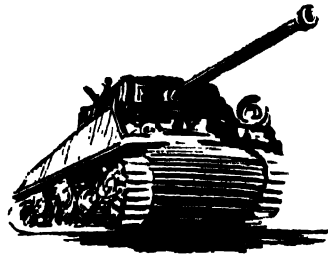
# जागो हे सांगा के वंशज वीर शिवा जी की संतान

○

**श्री मनोहर प्रभाकर**

आज युगों के बाद किया है पुनः हिमालय ने आह्वान,
जागो हे सांगा के वंशज ! वीर शिवा जी की सन्तान !

उत्तर की सीमा पर फिर से फन फैलाते काले नाग,
गूंज उठा कण-कण में फिर से रण का रौद्र भैरवी राग;
मुखर हो रहे इतिहासों के पृष्ठ पुरातन फिर से आज :
जागो अरे हर्ष के पुत्रो ! हूण खड़े फिर सीना तान !

कह दो तुम उन नादानों से, अरे लौट जाओ निज देश !
बहुत बार दुहराया हम ने सत्य-अहिंसा का सन्देश;
लगता इन फौलादी बाहों से तुम हो अब तक अनजान :
मत टकराओ हम से, हम तो खुद चलती-फिरती चट्टान !

लगा प्राण की बाज़ी हम ने किया सदा माँ का परित्राण,
अरे कलम के धनियों ने भी यहां चलाई तेज़ कृपाण;
नर ही नहीं यहां नारी भी स्वयं भवानी का अवतार :
हर ललना धारण कर सकती यहां लड़ाकों का परिधान!

कुल-कलंकियो ! मित्र शब्द को अरे किया तुम ने बदनाम !
पंचशील का राग अलापा और इधर छेड़ा संग्राम ;
मार्क्सवाद की कब्र खोद कर लगा रहे मस्तक पर दाग़ :
इतने पर भी शर्म नहीं तो, हम भी करते शर-संधान !

# रण विदा

श्रीमती महादेवी वर्मा

मां ! जीवन-अंजलि में मेरे तर्पण-हित कुछ अर्पित फूल ।
उन्हें करूं क्या ? चढ़ा दिया, लो, चरणों की लेने दो धूल ।।

'हृदय-द्वार' हो गए बंद, कोने में जब कंदित अनुराग ।
अरे, सिखाना है जग को जीने का सच्चा राग-विराग ।।

इस निःसीम गगन के अंदर, कभी न होगा उल्कापात ।
फिर न देखने में आवेगा, बधिकों का भीषण उत्पात ।।

हो जाने दो नर्तन अघ का, बस माँ ! है यह अन्तिम बार ।
दे देती आहों पर तेरी चण्डी को जग का अधिकार ।।

झुलस न जाएं हृदय-कुसुम, सुठि वितरण करते रहें सुगंध ।
सौरभ-लोलुप अलि को मंजुल भावों से ही कर दें अंध ।।

गूँज उठे यह चतुःपार्श्व में, गर्वीला मन-निर्भय नाद ।
'बलि हो जाऊंगी' मां-हित, माँ ऐसा दे तू आशीर्वाद ।।

# माओ और चाऊ के नाम

डा० महेन्द्र भटनागर

तुम्हारी मुक्ति पर
हमने मनाया था महोत्सव—
क्या इसलिए ?
तुम्हारे मत्त विजयोल्लास पर
बेरोक उमड़ा था यहां भी हर्ष का सागर—
क्या इसलिए ?
नए इंसान के प्रतिरूप में हमने
तुम्हारा बंधु-सम स्वागत किया था—
क्या इसलिए ?

कि तुम—
अचानक क्रूर बर्बर आक्रमण कर
हेय आदिम हिंस्र पशुता का प्रदर्शन कर
हमारी भूमि पर निर्लज्ज भावों से
गलित साम्राज्यवादी भावना से
इस तरह अधिकार कर लोगे ?
युग-युग पुरानी मित्रता को भूल
कटु विश्वासघाती बन
मनुजता का हृदय से अंत कर दोगे ?
तुम आंसुओं के शाह बन कर
मृत्यु के उपहार लाओगे ?

पूरब से उदित होकर
अँधेरे का, धुएँ का
भर सघन विस्तार लाओगे ?
साम्यवादी वेष धर
सम्पूर्ण दक्षिण-एशिया'पर स्वत्व चाहोगे ?

इतिहास को—तुमसे कभी ऐसी अपेक्षा थी नहीं
ऐसा दुखद अध्याय
तुम दोगे उसे !

नव-साम्यवादी लोक को—
तुमसे कभी ऐसी अपेक्षा थी नहीं
ऐसा करुण साहाय्य तुम दोगे उसे !

बदलो, अभी भी है समय
अपनी नीतियां बदलो !
अभी भी है समय पारस्परिक व्यवहार की
अपनी घिनौनी रीतियाँ बदलो !

अन्यथा, संसार की जन-शक्ति
मिथ्या दर्प सारा तोड़ देगी !
आत्मघाती युद्ध के प्रेमी, हटो !
बस लौट जाओ, अन्यथा
मनु-सभ्यता
हिंसक तुम्हारा वार
तुम पर मोड़ देगी !

# बहने दो बलि पंथी-धारा

○

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

ये हैं हिमगिरि की टेकड़ियाँ,
ये हैं गह्वर, ये हैं खाई,
यह है नगाधिराज का मस्तक,
यह विराटता, यह ऊँचाई !

यह है सिर वालों का सौदा,
यह है भुजदण्डों का न्योता
आज प्रखरतम वार चाहिए,
फेंक कतरनी, फेंक सराता !

क्या मैं उसको माफ करूंगा,
जो मेरी चोटी से खेले,
जो मेरी सभ्यता, संस्कृति,
उदय, गान को पीछे ठेले ?

आओ. आज हिमालय ने निज
महामौन को तोड़ पुकारा,
रक्त चाहिए रक्त चाहिए,
बहने दो बलि पंथी-धारा ।

○

# जो स्वदेश पर बलि जाते हैं, हम उन पर बलि जावेंगे

○

**स्व० मैथिलीशरण गुप्त**

ऋषि दधीचि से गाँधीजी तक
मिली हमें जो दीक्षा है,
बन्धुजनो, प्रस्तुत हो, उसकी
फिर आगई परीक्षा है ।

फिर सब देखें कठिन नहीं निज तपस्-त्याग बलिदान हमें,
परम्परा से पाया अपना रखना है सम्मान हमें ।
घर संभालने में, तटस्थ हो, लगे हुए थे जब हम लोग,
और चाहते थे जब सबका पंचशील-सम्मत सहयोग ।
तभी पड़ौसी चीन अचानक होकर लोभ-पाप में लीन,
चला हमारी भूमि छीनने तन का मोटा, मन का हीन ।
हम निर्माण-निरत थे, नाशक अणुबम नहीं बनाते थे,
अपने साथ दूसरों की भी शान्ति-समृद्धि मनाते थे ।
आक्रामक होकर ऐसे में आकर जो हमसे अटके,
उठो, लगादो उन्हें ठिकाने, वे मदान्ध भूले भटके ।
शताब्दियों के पहले हमने जिन्हें धर्म-शिक्षा दी थी,
विनिमय में धन-धरा न ली थी मात्र साधु-भिक्षा ली थी ।
आध्यात्मिकता से हटकर वे नंगी भौतिकता में चूर,
हिंस्र-दृष्टि से गुरुकुल को ही घूर रहे हैं कायर क्रूर ।
राष्ट्र-संघ में शुद्ध-भाव से हमने जिनका पक्ष लिया,
हमें उसीके लिए उन्होंने देखो क्या उपहार दिया !
उनकी यह दी हुई चुनौती हम क्या अस्वीकार करें,
कोई हम पर वार करे तो हम भी क्यों न प्रहार करें !

ठोकर मार चिता दो उनको देख रहे हैं जो सपने,
भूले नहीं प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द हमें अपने ।
आये जो जय-पत्र लिखाने मृत्यु-पत्र लिख रक्खें वे,
लोहे के हैं चनें हमारे चखना है तो चक्खें वे !
अपने आप आगया है यह नई विजय पाने का पर्व,
न था कौरवों को क्या, यदि है उनको बहु संख्या का गर्व ।
चर लें भले टिड्डियाँ उड़कर इधर-उधर कुछ हरियाली,
पर जीते जी कहां लौटकर वे हैं फिर जाने वाली ।
दाँतों में तृण धरें ढीट जो पागल पशु-से आ टूटे,
पंजे यहाँ चलावें; जब तक, पावें निज छक्के छूटे ।
पुरखों की खाई अफीम की पीनक छाई है जिनमें,
क्यों न तोड़ने चलें मलिन वे निकट देख तारे दिन में ।
कृष्णा-गोदावरी-पंचनद, गंगा-यमुना उमड़ीं आज,
किन्तु एक चुल्लू यथेष्ट है यदि है रिपुओं को कुछ लाज ।
मार्ग न रहने दो जाने का ऐसे आने वालों को,
मुँह की खानी हो उन मन के मोदक खाने वालों को ।
काल कठिन तो दृढ़ हैं हम भी, स्थैर्य धैर्य साहस के संग,
आज वृद्ध भी युवा बने हैं पाकर निज में नई उमंग ।
मातृभूमि की रक्षा में हम सिर भी सहज कटा देंगे,
भू-दानी हैं, रहो लुटेरो, तुम को धूल चटा देंगे ।
ऐसे आँख दिखाने से क्या हो सकती है ऊँची नाक ?
पहले अपने को तो देखो, पीछे यहाँ जमाना धाक ।
कब के प्रतिवासी होकर भी जान न पाये तुम हमको,
पाप-पुण्य जो नहीं मानते मानों अब अपने यम को ।
हमें किसी का कुछ न चाहिए, हम अपना भी छोड़ें क्यों,
बिना बुलाया संकट आया उससे भी मुँह मोड़ें क्यों ?

अटल रहे विश्वास हमारा सत्य धर्म पर हम आरूढ़,
आज नहीं तो कल लोलुप खल होंगे किंकर्तव्य-विमूढ़।
घर के साँप पंचमांगी हैं बाहर के रिपु से भी घोर;
आमस के मत - भेद भूलकर सजग रहें सब दोनों ओर।
हिन्दू, जैन, बौद्ध वा सिख हैं मुसलमान या ईसाई,
अपने एक देश के नाते हम सब हैं भाई-भाई।
सावधान! साधन - सामग्री टूट न पावे आज कहीं,
तब है, एक दूसरे से जब कहला लें—अब और नहीं।
उत्पादन का हर्ष जहाँ हो वहां अधिक श्रम का क्या खेद,
रक्त दे रहे सुभट हमारे, हमें बहुत क्या अपना स्वेद।
बढ़ते हुए हमारे सैनिक पिछड़ा हमें न पावेंगे,
जो स्वदेश पर बलि जाते हैं हम उनपर बलि जावेंगे।
धन तो तन का मैल, किसे है आज स्वयं प्राणों का मोह,
गूँजे जीवन - गान एक रस क्या आरोह और अवरोह।
बाहर के बल का पूरक है सच्चा भीतर का बल ही,
शस्त्रों का कहना ही क्या, लड़ चुके निहत्थे हम कल ही।
भौतिक भूत नहीं कर सकता हमको अपने भय से भुक्त,
जीवन में स्वाधीन रहेंगे मर कर भी होंगे हम मुक्त।
अपने आप लिया रिपुओं ने न्याय-बुद्धि का यह अभिशाप,
यही बहुत, वैरी बन आया कटने को यह अपना पाप।
बलि देकर ही बल लेंगे हम भीम-भामिनी-भीमा से,
जो पर हैं वे रहें परे ही, हटें हमारी सीमा से।

# सेनानी नए भारत का

○

**श्री मोहन चोपड़ा**

मैं हूं सेनानी
नए भारत का !
उद्यत है गति मेरी
आगे बढ़ने को तत्पर
दृढ़ हैं चरण मेरे ।
क्यों न मर लूं आज
अपने पौरुष की गरिमा में
घहघहराते सागरों को
कड़कती बिजलियों की
रस्सियों को थाम लूँ !
हिमालय आज मेरी
नियति का संकेत है
चवालीस करोड़ प्राणों का
लौह-कवच पहने हूं !

○

मैं हूं नागरिक
नए भारत का !
दासता की तंद्रा को
तोड़ कर जागा हूं
नया इतिहास गढ़ने को
अपने पुण्य-कृत्यों के
पुनीत चुम्बनों से
इतिहास के पृष्ठों को
सोने-सा बनाने को !
मेरे एक मित्र ने
विश्वास-घात किया है
किन्तु मेरे ओठों पर
जनवाद के तराने हैं
और मीठे लगते हैं
स्वर मानव-प्रेम के ।

○

मैं हूँ शिल्पी नए भारत का !
मेरी अँगुलियों के कौशल से
ताज के मरमरी
मीनारों का भव्य रूप,
कला के उपादान
अजंता और अलोरा के,
सतलुज और व्यास की
उच्छल आबशारों में
ठुनकते हैं मीठे गीत
विद्युत शक्ति के !
नाचती हैं धुरियाँ
ताल और झीलों से
विशाल-पट बुनती हैं !

# अबै बेदुला ना बूढ़ा भा, ना बल खाय गई तरवारि

○

**श्री रमई काका**

जय सिव संकर प्रलयंकर जय,
विष-धर-धरन बघम्बर नाथ ।
डिं-डिं-डमरू-धर तिरसूली,
है प्रभु लाज तिहारे हाथ ।

बं बं भोले जटा-जूट धर, नयना मूँदे भसम रमाय ।
हैं कैलास सिखरके ऊपर, औढर बैठ समाधि लगाय ।

भारत कै कइ रहे सुरच्छा, संकर दिहे अभय वरदान ।
जो कहुं कोपि उठे प्रलयंकर, डोली धरती औ' असमान ।

विषु फइलायो तुम सीमा पर, संकर किहिनि छिमाका दान !
माथे धरे सुधाधर तहिते, संकर किहिनि बहुत विषपान ।

सहनसीलता कै सीमा है, तुम कइ दीन्ह्यो वहिका पार ।
ज्वालामुखी हिमालय होइगा, सागर उठिगे ज्वार अपार ।

पग-पग धरती भभकि उठी है, होइगा ललाबम्ब असमान ।
कन-कन चिनगी अस होइगा है, औ' अंगारा सब पाषान ।

लपटैं आसमान तक उठि गईं, ज्वाला काल जीभि अनुहारि ।
दसौ दिसा हाथी चिग्घारेनि, उठिगे सेष नाग फुंकारि ।

जागा धनुष-बान रघुवरका, कीन्हेसि लछिमन भउहैं बंक।
को समुहे होइ लोहा लेई, चक्रपानि अब धारेनि चक्र।

जागा कोपु धनंजय का अब, फिरि गांडीव किहिसि टंकार।
भीमसेन कै गदा उठी अब, समुहे डटी कौनु सरदार।

वीर सिवाजी खड्ग उठायनि, जागै सबे मरहठा ज्वान।
राना हाथ उठायेनि भाला, जागा सारा राजस्थान।

खौलि उठा पंजाब का पानी, अब गुरु गहेनि हाथ तरवारि।
जय जय हिन्द सुभाष पुकारेनि, जागी बंग भूमि ललकारि।

बाँभन ठाकुर बनियाँ हरिजन हूँ कह रहे गोरखा जंग।
पेस पेसवन ते को पाई करिहैं मदरासी मदभंग।

तीन ओर से सागर गरजै, उत्तरहिमगिरि सीस उठाय।
कोटि चवालिस पूत देस के, रोवाँ फरकि फरकि रहि जाय।

तुम भारत पर चढ़ि कै आयो, हम का दिह्यो गरू ललकार।
भारत माता की रच्छा हित, बच्चा-बच्चा भवा तयार।

जब तक तन माँ प्रान बराजे, प्रानन होय स्वास संचार।
भुम्मि इंच भरि जाय न देबै, बढ़ि-चढ़ि करब सत्रु संहार।

हम अपने देस्वा के रच्छक चौहद्दी के पहरेदार।
तुम लाँघ्यो 'मकमोहन-रेखा', तुमरा गरब करब हम छार।

जहि की गोदी माँ खेलेन हम, खावा अन्न पिया है छीर।
प्रान गदोरी माँ धरिके हम, तहि कै दूरि करब सब पीर।

जो आगे का कदम बढ़ाई, तहि पर गोली देब चलाय।
जो जननी पर हाथु उठाई तहि के देबे भुजा उड़ाय।

जो कोउ देखी टेढ़ी नजरिन तहिकी आँखी लेब निकारि।
टेढ़ी बात कही जो कोऊ, तौ मुँह धाँसि देब तरवारि।

जग जाहिर भारत का पानी, बच्चा-बच्चा कहै पुकारि।
अबै बेदुला ना बूढ़ा भा, ना बल खाय गई तरवारि।

# जागो हे समाधिस्थ, जागो हे कामदहन

○

डा० रमा सिंह

जागो हे ! दीप्त किरण ! जागो !
जागो हे ! दीप्त सूर्य ! जागो !!

विघ्नों के काले ये बादल मँड़राये हैं
खुली-सी दिशाओं पर कालिख ले आये हैं
अंधकार पीने को—जागो हे ! दीप्त सूर्य !
जागो हे ! दीप्त किरण !!
जागो हे ! समाधिस्थ ! जागो !
जागो हे ! कामदहन ! जागो !!

हिमगिरि के प्राङ्गण में तृष्णा जो नाच रही
साधना डिगाने को , बाधा जो व्याप रही
भस्म वही करने को—जागो हे ! समाधिस्थ !
जागो हे ! काम दहन !!
जागो हे ! दिव्य शक्ति ! जागो !
जागो हे ! महाशक्ति ! जागो !!

लोलुप-सी हिंसा के जन्मे जो रक्त-बीज
पुण्य-मयी धरती को छलते जो रक्त-बीज
आज उन्हें पीने को जागो हे ! दिव्य शक्ति !
जागो हे ! महाशक्ति !!

# हिमालय के प्रति

श्री रमेशचन्द्र शाह

पूर्वजों के चरण-चिह्नों पर
प्रवंचक, हिंस्र पंजे गाड़ते
ये भेड़ियों के झुण्ड बढ़ते
आ रहे हैं।
ओ हिमालय !
देख लो निज—
धवलिमा पर
स्याह धब्बे ये
निरंकुश आततायी
आज आंगन में तुम्हारे—
अपशकुन से छा रहे हैं।
देवतात्मा !
पूछ देखो आज इन से
तुम कि जो इनके
व इन के पूर्वजों के
कारनामों के
हज़ारों पीढ़ियों से
मूक, पर अविचल अटल—
साक्षी रहे हो ; तुम,
जिन्होंने कभी देखा था
हज़ारों फाहियानों,
ह्वेनसांगों को
हमारे दीप्त गौरव से
चमत्कृत,
मुग्ध महिमाकृष्ट—
ज्ञानपिपासुओं को ;
प्रेरणा, आशीष दे
जिन को कि तुमने
इस दिशा की ओर उन्मुख
कर दिया पहले-पहल था ;
और उन को,
दिग्भ्रमित, दृगहीन
तत्वाकांक्षियों को
दिव्य ज्ञानालोक देकर
चीन की प्यासी प्रजा की
अंध-तामस चेतना में
सत्त्व के निर्झर बहाने
और उनको पूर्ण अन्तर्बाह्य
संस्कृति के चरम उत्कर्ष
का परिचय कराने
'पंथ शुभ' कह गेह वापस
पठाया था।
पूछ देखो आज इन से,
मत्त डकराते निरीश्वर

मनुज-द्रोही
'साम्य' के महिषासुरों से—
"क्या तुम्हीं
उन हिमधवल हंसों,
अमन के देवदूतों,
सत्य के निष्काम, नैष्ठिक
पुलक पंखी खोजियों के
वंशधर हो ?
क्या तुम्हारी ही
अपावन धमनियों में
'साम्य' की समहीन थापों
पर उछलते
कौड़ियों के मोल बिकते,
धृष्ट, बेग़ैरत तुम्हारे इस
लहू में ही किसी दिन
ओ अधम !
मेरे सुतों ने बुद्ध की
करुणा उलीची थी ?
तुम्हारे शील पर बन्धुत्व
का विश्वास रोपा था ?
"क्या इसी दिन को
तुम्हारे पारदर्शी, मन्त्रद्रष्टा
पितामह कन्फ्यूशियस वे,
राजनीतिक सदाचारों की
चिरन्तन संहिताएँ रच गए थे ?
दास के भी दास तुम ओ !
दूसरों के इंगितों पर
नाचने वालो !
कहो तो, क्या यही नयवर्त्म
पुरखों ने सिखाया था तुम्हें ?"

प्रश्न गूंजेंगे दिशाओं में
तुम्हारे.....और......हिमगिरि !
सोचता हूं मैं,—तुम्हारे
प्रश्न की टंकार
शायद, कुछ पलों को ही सही,
इन दस्युओं को
मर्म तक बींधे,
कँपाये
और ठिठका दे।......
मगर यह भी दुराशा ......
कौन जाने
इन बधिर, निर्लज्ज कानों तक
पहुंचते ही
तुम्हारे शब्द भी
निःस्तब्ध हो जायें।
बहुत मुमकिन ; —तुम्हारे
हित वचन इन धर्महीनों
भीड़ के दुर्दान्त कपटी भेड़ियों
के अट्टहासों में
बिखर कर लुप्त हो जायें।
इसी से जानता हूं

ओ हिमालय !
व्यर्थ होगा
इन निरंकुश बर्बरों को
सीख देना ।
अब इन्हें
दरकार शिक्षा दूसरी ही ।
देखते हो आज इनको !
छद्म सारे फेंक पहली बार
नंगी असलियत
अपनी दिखा कर
ये हमारे धैर्य की सीमा
कुचलते आ रहे हैं ।
चले आएं : अब न
बरजो तुम इन्हें
इन भुखमरों को ।
पूर्व भी हमने बहुत कुछ था
दिया इनको
अभी कुछ और देंगे ;
सब कसर पूरी करेंगे ।
ताकि इस के बाद इन को
फिर इधर रुख मोड़ने की
कुछ ज़रूरत ही न रह जाये ।

मिलन यह भी हमारा
ओ हिमालय ! देखना तुम ;
और देना साक्ष्य इस का फिर
अनागत पीढ़ियों को ।
अब बुभुक्षा ज्ञान की इन को
न प्रेरित कर सकेगी ।
तत्त्व की चिन्ता न इनका
पथ-प्रदर्शन कर सकेगी ।

देवतात्मा ओ पिता ! कहदो
तनिक इन दस्युओं से
रक्त-लोलुप भेड़ियों से,
शस्यलोलुप टिड्डियों से,
इंच भी आगे न ये
अब बढ़ सकेंगे ।
धर्मद्रोही ये अमानव
धर्ममय रथ के
न आगे टिक सकेंगे ।
बुद्ध की करुणा इन्हों ने देख ली ।
अब ? ......
रक्तकाली का प्रलयकर रूप
इन को देखने दो ।

# दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है

○

श्री रवि दिवाकर

अरे ! तुम्हारे दरवाजे पर
दुश्मन की ललकार है
भारत की रणमत्त जवानी,
चल क्या सोच-विचार है !

राणा के वंशजो, शिवा के पूतो, माँ के लाडलो !
समर भूमि में बढ़ो, शत्रु को रोको और पछाड़ लो,
तुम्हें कसम है अपनी मां के पावन गाढ़े दूध की,
चलो चीन से अपनी चौकी, चाँदी मढ़े पहाड़ लो,
सुन, उजड़े तवांग की कैसी करुणा भरी पुकार है ।

जिसने घोंटा गला शांति का उस बेहूदे चीन से,
कह दो, दुश्मन को दलने के हैं हम कुछ शौकीन से,
जहाँ दोस्त को दिल देने में अपना नहीं जवाब है,
वहाँ शत्रु को पाठ पढ़ाया करते हम संगीन से,
दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है ।

कहो शंभु से आज तीसरा लोचन अपना खोल दें,
हरबोलों से कहो आज हर, हरहर-हरहर बोल दें,
जाग उठी है दुर्गा लक्ष्मी और पद्मिनी नींद से,
कहो कि अपने भाले पर हर दुश्मन का बल तोल दे,
आज देश की आज़ादी को प्राणों की दरकार है ।

मानसरोवर की पावनता हिमगिरि के उत्थान को,
जिस दुश्मन ने रौंद दिया हर घाटी, हर चट्टान को,
जिसने एक चुनौती दी है भारत के पुरुषत्व को,
पाँवों तले कुचल डालो उस चाऊ के अभिमान को,
किया देश की सीमाओं पर जिसने कुटिल प्रहार है।

गरज रहे हैं आज चवालिस कोटि एक आवाज़ में,
माफ न होगा चीनी रावण यहाँ राम के राज में,
अपनी छीनी धरती तो हम ले ही लेंगे मूल में,
पर तिब्बत को भी हम लेकर के छोड़ेंगे ब्याज में,
चप्पे-चप्पे से यह उठ कर गूंज रही हुंकार है।

# सरफ़रोशो उठो, सूरमाम्रो उठो !

○

**श्री रशीद कौसर फारूकी**

सरफ़रोशो उठो, नौजवानो बढ़ो, सुर्ख बादल हिमाला से टकराए हैं,
उजले उजले पहाड़ों पे छाया धुम्राँ म्रौ' अंधेरे फज़ाम्रों में लहराए हैं ।
हाँ बढ़ो रौशनी का म्रलम गाड़ दो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाम्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

जिसे गौतम के दामन से दौलत मिली, जिसे हमने म्रहिंसा का तोहफा दिया,
म्राज उस चीन ने, हाँ उसी चीनने, हमको सदियोंके एहसाँ का बदला दिया ।
दो जवाब ऐसे एहसाँफरामोश को !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाम्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

ज़ुल्मो-इन्साफ़ का मारका-ज़ार है, तुम समझते हो 'नेफा' है 'लद्दाख' है,
म्राज 'मथुरा' बलाम्रों में फिर घिर गया, कृष्ण की शान में 'कंस' गुस्ताख है ।
ज़ुल्म का सर कुचल जाए, इन्साफ हो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाम्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

'चीन' यह चाहता है कि बढ़ कर हमें मौत का ज़हर दे, ज़िंदगी छीन ले,
धमकियाँ दे के तलवार के ज़ोर पर, 'श्याम' से प्रेम की बाँसुरी छीन ले ।
उसकी तलवार को तोड़ कर फेंक दो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाम्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो ।

हमने म्रमृत पिलाया था कल तक जिसे, वह हमारे लहू में नहाने चला,
म्रम्न के गीत जिस को सुनाते थे हम, म्रपनी तोपों से हम को डराने चला !

अपने हाथों से तोपों के मुँह फेर दो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाओ उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

राजपूतों का भारत अभी जिंदा है, सूर्यवंशी यहाँ चन्द्रवंशी यहाँ,
'भीमो-अर्जुन' पले हैं इसी गोद में, यह वही देश है जिस में कहती है मां--
"तुम हमारे नहीं देश के लाल हो !"
सरफ़रोशो उठो, सूरमाओ उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो।

हर जमाने में होते हैं रावण नए, हर जमाने में होता है सीता हरण,
तुम 'हनूमान' हो, तुम तो 'सुग्रीव' हो, तुम ही इस दौर के 'राम' औ' 'लक्षमण'
ऐसे झूठों की लंका को तुम फूंक दो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाओ उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

आज 'शंकर' गज़बनाको सरशार है, अपने 'तिरशूल' की आग बरसाएगा,
'रक्से महशर' है कुहसार 'कैलाश' पर हश्र का वक्त क्या कोई और आएगा?
हश्र बरपा है, दिल्ली से नेफा चलो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाओ उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

अपनी कब्रों में बेताब हैं 'पूरवज' आज कितना कठिन मरहला आ गया,
जैसे 'सरहिन्द' की सरज़मीं हिल गई, जैसे 'अजमेर' को ज़लज़ला आ गया।
तुम भी अँगड़ाई लो, तुम भी अंगड़ाई लो
सरफ़रोशो उठो, सूरमाओ उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो।

'राम' की जन्मभूमि, 'मनू' का वतन, सैंकड़ों सूरमाओं की है सरज़मीं,
'राक्शस' इस पे यलग़ार करने उठे, क्योंकि यह देवताओं की है सरज़मीं।
इस की मट्टी को नापाक होने न दो !

सरफ़रोशो उठो, सूरमाश्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो ।

हाँ कदम से कदम यों मिलाए चलो जैसे 'इकबाल-ो' 'टैगोर' हों नग़माज़न,
नजरुलइसलाम'की शायरीकी गरज श्रौर'ग़ालिब'की गजलों का हो बाँकपन !
जैसे करवट से दरिया बहे, यूँ बहो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाश्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो ।

तुम हो ज़ैग़म बढ़ो गूँजते धाड़ते अपनी अज़मत का परचम उड़ाते हुए,
गोलियाँ फूल बन जाएँगी, बढ़ चलो, सीना ताने हुए मुस्कराते हुए ।
एक तूफान बन कर तरारे भरो ।
सरफ़रोशो उठो, सूरमाश्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

श्राज हिन्दू मुसलमान सब एक हैं, श्रपनी बहसों को झगड़ों को भूले हुए,
दोस्त हैं एक श्राँगन के खेले हुए, भाई हैं एक झूले में झूले हुए ।
तुम 'श्रशोक' श्रौर 'टीपू' की सन्तान हो !
सरफरोशो उठो, सूरमाश्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

सुन चुके लोरियाँ मादरे-हिन्द की, श्रब वो ललकारती है कि बेदार हो,
जिस की छाती से गंगा बही दूध की, उस के चरणों में श्रपना लहू डाल दो ।
ऐ सपूतो तुम्हीं देश की लाज हो !
सरफ़रोशो उठो, सूरमाश्रो उठो, जाँनिसारो बढ़ो, नौजवानो बढ़ो !

# पंजाब के सैनिक के प्रति

○

श्री रसिक बिहारी

पंजाब के समतल से दूर, बहुत दूर
अब तुम हो हिमालय की ऊंची चढ़ाई पर--
बाज की नजरों से देख रहे हो तुम,
अदम्य साहस के साथ, हाथ में राइफल साधे।
दुश्मन की राइफल, मार्टर, मशीनगन, कमान---
कुछ भी डरा न पायेगी तुम्हें, जानता हूं,
तुम हो स्वतंत्र भारत के वीर सेनाचर,
देह में रक्त की अंतिम बूंद रहने तक
तुम लड़ोगे, अजेय भीम भयंकर बनकर।
शत्रु कवलित मातृभूमि के उद्धार का व्रत है तुम्हारा;
हमें नाज है तुम पर, महान् भारत की संतान।
तेज कदमों से तुषार-पिच्छल पथ पर
पीछा करोगे चीनी ड्रेगन का संगीन ताने,
दुर्धर्ष वीर हो तुम, अंतिम शत्रु को देश की धरती से
खदेड़े बिना चैन नहीं लोगे; तुम देश के गर्व हो, जाति की शान।
हमारी पुण्यभूमि की शांतिमय निस्तब्धता
जिन हूणों ने तोड़ी है, तुम शांत करोगे उन्हें;
समझा दोगे उन्हें तुम कि भारत की सदिच्छा जितनी महान् है
उतनी ही प्रचण्ड शक्ति भी, प्रतिहत करने की क्षमता भी;
मातृभूमि को निष्कलंक रखना जानता है भारतीय सैनिक
अपने दुर्दमनीय पौरुष-बल से वह देश का गर्व है
उसके पीछे आसमुद्र हिमाचल खड़े हैं हम सब।

# सच यह देश नहीं हारेगा

○

**श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ'**

महानगर पेकिंग की यह छोटी-सी बस्ती,
जो जन रहते यहाँ, सभी की है सम हस्ती।
ये कहते हैं--'सभी राष्ट्र का, सभी बराबर',
पर इन की स्थिति, ये बेचारे मात्र कामगर।

शासन इनका लाल, प्रेम से नहीं, रक्त से,
सचमुच ये पिछड़े हैं बढ़ते हुए वक्त से।
इनका जीवन-रस सम्भवतः लगा सूखने,
औ' इनकी मस्ती को है खा लिया भूख ने।

गाना, हँसना और खेलना इन्हें न आता,
दिए जले बस्ती में सन्नाटा छा जाता।
हो जाती हैं स्तब्ध दिशाएँ, रातें होतीं,
कैसा मधुरालाप, न कोई बातें होतीं।

गा-गा कर ऋतुराज कभी ये बुला न पाए,
हँस-हँस कर अपने दुर्दिन को सुला न पाए।
ईद, दिवाली की मिठास से दूर बहुत हैं,
जीने को जीते हैं, पर मजबूर बहुत हैं।

अर्ध-निशा है, बस्ती में खामोशी छाई,
कोई भी स्वर नहीं कहीं पड़ रहा सुनाई।
किन्तु कभी दुःशान्ति भंग हो ही जाती है,
जब कि किसी के बूटों की आहट आती है।

फ़ौजी सैनिक यहाँ कड़ा पहरा देते हैं,
कभी-कभी आवाज़ लगा थहरा देते हैं।

और घूमते रहते खुफ़िया इधर-उधर हैं,
दबा-दबा जिनके कारण रहता हर स्वर है।

किन्तु इसी बस्ती के इक छोटे से घर में,
बदल रहा करवटें एक बालक बिस्तर में।
माँ ने कहा कि "बेटा क्यों है नींद न आती,
सो भी जा, ले मैं थपकी दे तुझे सुलाती।"

बालक बोला—"माँ, मत मुझको यों बहलाओ,
नींद नहीं आ पायेगी, मत तुम दुलराओ।
एक प्रश्न उलझा है, चाहो तो सुलझाओ,"
माँ ने कहा कि "बेटा, क्या है बात, बताओ?"

"माँ यह बात अभी तक मेरी समझ न आई,
अपने जो प्रधान-मन्त्री चाऊ-एन्-लाई।
कल तक तो कहते थे, हिन्दी-चीनी भाई,
फिर क्यों भारत पर की है चीन ने चढ़ाई?"

झट रख हाथ पुत्र के मुख पर, माता बोली—
"इस प्रसंग को छोड़, समझ है तेरी भोली।
नहीं जानता है—ज़बान आगे जो खोली,
क्षण में होगी पार पुत्र सीने के गोली।

अर्ध-निशा है, औ' बाहर पहरा लगता है,
गहरी नींद पड़े सब, केवल तू जगता है।
फिर जो छेड़ा है प्रसंग मन हुआ सशंकित,
यहाँ पवन भी शासन के भय से आतंकित।

अगर कहीं पहरेदारों ने इसे सुन लिया,
तो यह समझ मृत्यु ने हमको सहज चुन लिया।
औ' आने वाला है जो कल नया सवेरा,
इस घर में फैलाएगा मातमी अँधेरा।"

बालक बोला—"ऐसा क्यों", माँ बोली—"बेटे,
हम चीनी दुनिया में हैं किस्मत के हेटे ।
यों तो है अपनी सब से ज्यादा आबादी,
किन्तु प्राप्त है नहीं हमें सच्ची आज़ादी ।
जो शासन के दोष कभी अभिव्यक्त कर सकें,
जो विचार अपने स्वतन्त्र हम व्यक्त कर सकें ।"
बालक उट्ठा, और बन्द करके खिड़की झट,
माँ से कहने लगा कि "माँ मेरी रख दे हठ ।
मैं धीरे-धीरे पूछूंगा, मुझे बता दे,
भारत पर आक्रमण किया क्यों, यह समझा दे ।"
माँ ने कहा—"छोड़ भी दे हठ, औ' चुप होजा
बीती आधी रात पुत्र ! अब तो तू सोजा ।"
"मैं हूं माँ, लाचार, नींद है मुझे न आती,"
"तो फिर पूछ", कहा माँ ने—"मैं हूं समझाती ।
पर रखना यह ध्यान कि स्वर हो काफी धीमा," ।
"अच्छा माँ, जिन देशों से मिलती निज सीमा ।
उनमें से तो नहीं किसी से हुआ युद्ध है,
क्यों भारत पर ही फिर चाऊ हुआ क्रुद्ध है ?
मैंने सुना कि भारत तो है शान्ति-पुजारी,
उसके सत्य, अहिंसा से हिंसा है हारी ।
और समझ में मेरी यह भी बात न आती,
रोज़ हमारी सीमा क्यों आगे बढ़ जाती ?"
यह सुन माता हँसी, कहा—"यह एक राज़ है,
चाऊ की सरकार बड़ी ही चाल-बाज़ है ।
भारत की कुछ भूमि हड़पना चाह रही है,
और 'पाक' को भी यह कर गुमराह रही है ।"

"होते क्यों गुमराह किन्तु माँ पाकिस्तानी ?"
माँ ने कहा कि "बेटा यह उन की नादानी ।
कौन बला है चाऊ, 'पाक' तभी जानेगा,
जब कि किसी दिन यह उस तरफ भृकुटि तानेगा।"
"ओ' माँ, मैंने सुना-रूस जो अपना भ्राता,
उसकी भी कुछ भूमि चीन अपनी बतलाता।"
माँ बोली—"मैं कहती हूं ना, दग़ा-बाज़ है!"
"भारत से लड़ने में माँ क्या बता राज़ है ?"
"बेटा ! जब घर में धरना दे दे कंगाली,
और दिखाई भरी पड़ौसी की दे थाली ।
नीच न निज पड़ौस में देख सके खुशहाली,
इसीलिए है चाऊ ने बन्दूक सँभाली ।
सत्य बात यह—चीन मार्ग से भटक गया है,
भारत का उत्थान आँख में खटक गया है ?"
कुछ आहट सी हुई जिसे सुन माता सहमी,
हँस कर बोला पुत्र कि "माँ तू तो है वहमी ।
अच्छा, अब यह बता कौन होवेगा गारत,
कौन पराजय देखेगा, निज देश कि भारत ।"
माँ ने कहा कि "हार चीन को पड़े देखनी",
बोला बालक—"लेकिन, ऐसा हो क्यों जननी",
माँ बोली—"आ, तुझको मैं भारत दिखलाऊँ,
शब्दों की तस्वीर बना कुछ दृश्य दिखाऊँ—
"देख, सामने खड़ी हुई है वह जो बाला,
धधक रही जिसके नयनों में भीषण ज्वाला ।
कल तक यह सधवा थी, अब विधवा का बाना,
इसका पति चीनी गोली का बना निशाना ।

ज़रा ध्यान से सुन, वह क्या नेहरू से बोली—
'लो यह मंगल-सूत्र, खरीदो इसकी गोली।
और कहो सैनिक से—बदला आज चुकाये,
बरसावे गोली, अरि को यमलोक पठाये।' "

गिरी आँख से बालक के दो बूंद बड़ी-सी,
माँ ने कहा कि "देख पुत्र, वह लगी झड़ी-सी।
देख, त्याग की यह कैसी बेजोड़ होड़ है,
यह देता है लाख कि वह देता करोड़ है।

कंगन बढ़े, अँगूठी उतरी, बाली आई,
नन्ही मुनिया भी तो देख न खाली आई।
लाई अपने खेल खिलौने मोह छोड़ कर,
औ' बालक देते पैसे गोलकें तोड़ कर,

देख, देश यह जुटा रहा है सोना, चाँदी",
"हाँ, सचमुच माँ इनको प्यारी है आज़ादी।"
"प्यारी नहीं, कहो प्राणों से ज़्यादा प्यारी,
खूब जानते हैं यह भारत के नर-नारी।

वह सोना, हीरा है, माणिक है, मोती है,
जिस सोने से मिट्टी की रक्षा होती है।
और स्वर्ण जो बन्द तजोरी के अन्दर, है
वह है मिट्टी, धूल, धूल से भी बदतर है।

लाल-जड़ा वह वृद्धा हार उतार रही है,
और प्रकट यों अपने कर उद्‌गार रही है।
'लाल हमारे सीमा पर जूझें, मिट जायें,
ये पत्थर के लाल कंठ में हम लटकायें।

क्या हम से दिल के टुकड़ों की रक्षा के हित,
ये पत्थर के टुकड़े भी होंगे न विसर्जित ?' "

"माँ देखो, वह कैसा गर्द-ग़ुबार उठा है ?"
"भारत का यौवन बेटा, ललकार उठा है !
सिंहों के छौने निकले हैं निज माँदों से,
गूँज रहा है गगन उन्हीं के जय-नादों से ।
ये शिव के बेटे तांडव करने को आकुल,
इंच-इंच धरती के हित मरने को व्याकुल !
बढ़े चले आते हैं बेटा, देख शान से,
मिले भूमि या मिटें, एक बस इसी आन से ।"
"जोश, जवानी का यह संगम, माँ, कमाल है",
"और सामने देख, पुत्र, वह अस्पताल है ।"
"देख रहा माँ, यहाँ घायलों की पंगत है",
"हाँ, ये हैं वे वीर हुए जो क्षत-विक्षत हैं ।
अरे देख, वह घायल बिस्तर से उठता है,
सुन कि डॉक्टर से आखिर वह क्या कहता है ?
'छुट्टी दो अब मुझे, मुझे लड़ने जाने दो',
'ठहरो कुछ दिन घावों को तो भर जाने दो ।'
'ये हैं तन के घाव, शीघ्र ही भर जायेंगे,
किन्तु हृदय के घाव तो तभी भर पायेंगे ।
जब कि सिंह की तरह वक्ष अरि के फाड़ूंगा,
जब कि शीश पर दुश्मन के झंडा गाड़ूंगा ।
मुझे मारने दो, मरने दो, जाने भी दो,
माँ के मस्तक से यह दाग़ मिटाने भी दो ।' "
चीखा बालक "सच यह देश नहीं हारेगा,
चाऊ को समझाओ, हम सब को मारेगा ।"
तभी द्वार टूटा, तत्क्षण इक फौजी अफसर,
क्रोध-भरा, पिस्तौल लिए घुस आया अन्दर ।

मां-बेटे को खींच तभी वह बाहर लाया,
गोली मारी, औ, दोनों को भूमि लुटाया।
जनरल ने आ पूछा—"था इनका कसूर क्या,
जो कि प्राण लेने इनका मजबूर तू हुआ।"
"निज प्रधान मंत्री को बुरा-भला कहते थे,
श्रीमन्, एक सत्य को ये ज़ाहिर करते थे।"
जनरल ने फ़ौरन ही उसके गोली मारी,
आहत सैनिक बोला—"भूल हुई क्या भारी?"
"भूल हुई तू सत्य, सत्य को अभी मानता,
क्या पागल तू इतना भी है नहीं जानता।
सत्य-आचरण यहाँ एक अपराध बड़ा है,
क्या चाऊ का हुक्म ध्यान से नहीं पढ़ा है—
'करो आक्रमण, कहो कि वे हैं हमला करते,
कब्ज़ा करो, कहो हम सीमा-रक्षा करते।'"
मरता हुआ सिपाही बोला—"देखो जनरल!
तुमने भी तो लिया सत्य का ही है सम्बल।
सत्य कहाँ है—यहां सत्य का नहीं आचरण,
फिर क्यों मेरी ही किस्मत में लिखा यह मरण?
उचित है कि अब खुद को ही तुम गोली मारो,
उलझन में पड़ गए! न अच्छा और विचारो।
एक और है सत्य मुझे तुम को बतलाना,
चाहो तो, जाकर चाऊ को भी समझाना—
हितकर यह होगा—अब युद्ध-विराम करें हम,
भारत को नतशिर हो बन्धु प्रणाम करें हम।
क्योंकि सत्य है यह—वह देश नहीं हारेगा",
हुई प्रतिध्वनि—"सच, यह देश नहीं हारेगा।"

# स्यार, सिंह के घर आया है, निश्चय विजय हमारी है

○

**श्री राजनारायण बिसारिया**

खौल रहा है खून हमारा, आंखों में चिनगारी है,
अपनी इंच-इंच धरती भी हमें जान से प्यारी है।

पहले मीठी बोली बोले,
चुपके में दागे फिर गोले,
जहां गिरे दो, वहा देख लो—
पहुंचे हम टोले के टोले।
झुकने दी न पताका हमने, हाथों हाथ उबारी है।

हम है जलते अंगारों से,
तेज कृपाणो की धारों से,
मां का दूध पिया है हमने,
खेले हैं हम तलवारों से।
माँ का दूध चुकाने वाले वीरों की अब बारी है।

जो भी हमसे टकराएगा,
आखिर में मुँह की खाएगा,
जितना तीर खिँचेगा पीछे,
उतना ही आगे जाएगा।
स्यार, सिंह के घर आया है—निश्चय विजय हमारी है!
अपनी इंच-इंच धरती भी,
हमें जान से प्यारी है!

# हटो अय दुश्मनो! भारत महाभारत विजेता है

○

श्री राजेन्द्र 'अनुरागी'

आज मेरा देश पूरा लाम पर है।
जो जहाँ भी है, वतन के काम पर है।
हल लिए हैं हाथ भामाशाह मेरे,
बर्फ पर साका प्रतापों मे किया है,
लहू देने का महूरत आ गया है,
दूध जिसने भी कि इस माँ का पिया है।
गरम है वातावरण विद्यालयों का
बन गया हर गुरु अगत्स्याचार्य-सा है,
क्योंकि चीनी दानवों का दलन
युग की नयी गीता के मुताबिक अब बड़ा अनिवार्य-सा है।
समर-सज्जा कस चुकी है कलम मेरे देश की अब
कौम का पौरुष कुदाली ले उठा है,
और गौतम बुद्ध का धीरज छिछोरे चीनियों को
'बेशरम' कह कर कि गाली दे उठा है।
कसम दे दी है मशीनों ने हमारे कारखानों को
कसम ज्यों द्रौपदी दे भीम-अर्जुन-से जवानों को।
तिरंगा हाथ में लेकर निकल आई है तरुणाई
वतन की चूड़ियों ने आज झाँसी की कसम खाई।
हिमालय को हथेली है लगाए वीर विन्ध्याचल
जिसे है सतपुड़ा का, पूर्व-पश्चिम-घाट का सम्बल;
नर्मदा अब ब्रह्मपुत्रा को कुमुक पहुंचा रही है,

नीलगिरि की गन्ध लद्दाखी विटप से आ रही है ।
थाम ली है भाखड़ा की बाँह चम्बल ने
भुजाओं भर लिया है तवी का पानी तवा-जल ने ।
भिलाई देश की किरपानवाली भुजा को बल दे रही है,
वतन के पाँव को मजबूत
फौलादी धरातल दे रही है ।
उछल कर गोद से दुर्गापुरी के लाल आते हैं,
हमारे चित्तरंजन के लिए सड़कें बनाते हैं ।
खड़े हैं विश्व भर में हमारे अपने
कमर कस कर खड़े हैं,
हमारे बसन्ती सपने कमर कस कर खड़े हैं
तिरंगा शान से इस देश की सैनिक सलामी ले रहा है ।
हमारे बाग-बागीचे, हमारी फूल-फुलवारी,
हमारे गुलबदन बच्चे, हमारी सीम-तन नारी,
सभी का एक ही स्वर है, सभी की एक मंज़िल है,
करोड़ों हाथ वाले देश का बस, एक ही दिल है ।
कदम से मिल रहे हैं कदम बदरीनाथ से रामेश्वरम् के,
भुजा जगदीश की अब द्वारका के साथ उठ आई ।
हमारी मस्जिदें-गिरजे-शिवाले सब निकल आये,
हमारे देश की संसद कि मैदाँ में निकल आई ।
सुदर्शन-चक्र सेवा-ग्राम की कुटिया उठाती है,
नये युग की नयी गीता भुवन में गूँज जाती है ।
नये युग का नया पौरुष नया गांडीव लेता है,
हटो, अय दुश्मनो,
भारत, महाभारत-विजेता है ।

○

# जागा अब जन-जन का गौरव

○

**श्री राजेन्द्र शर्मा**

हम अपने युग के निर्माता,. हर पग में अभियान हमारे !

तोड़ रूढ़ियों के बंधन नव क्षितिज, नवीन प्रभात बनाते ।
अंध-पुरातन विश्वासों को त्याग प्रगति-पथ पर बढ़ जाते ।
श्रम के हाथों बंजर धरती का हमने शृंगार किया है ।
धान, अन्न, जल, स्वर्ण, दुग्ध सब पृथ्वी ने उपहार दिया है ।
जागा अब जन-जन का गौरव, देश-प्रेम अभिमान पुकारे ।
हम अपने युग के निर्माता, हर पग में अभियान हमारे ।।

गौतम, गांधी, औ' नेहरू के उपदेशों से ज्योतिर्मय पथ ।
अपने कर्णधार के इंगित बढ़ा राष्ट्र का वेगवान रथ ।
बढ़ा राष्ट्र का धन, उत्पादन, जीवन में उल्लास भरा है ।
पतझड़ के सूखे पातों पर लहलाया मधुमास हरा है ।
आज भाग्य की लिपि लिखने को हाथ बने बलवान हमारे ।
हम अपने युग के निर्माता हर पग में अभियान हमारे ।।

कोटि-कोटि जन आज देश का करते हैं निर्माण निराला ।
मुक्त धरा, आकाश, सूर्य का फैला आँगन प्रखर उजाला ।
देख रहा है विश्व हमारा यह अभियान शांतिमय दृढ़तर ।
एक जगत बाहर बनता है संकल्पों की ज्वाला अन्दर ।
आज क्रांति के स्वर से गूंजे, क्षितिज, नवीन विहान हमारे ।
हम अपने युग के निर्माता, हर पग में अभियान हमारे ।।

# गर्व से ऊँचा उठा इस देश का सिर झुक न जाए

श्री राजेश दीक्षित

नाज़ करता आ रहा है विश्व का इतिहास जिस पर,
दोस्तो! तुम को तुम्हारी उस कहानी की कसम है।
जिन्दगी जिसको बुढ़ापे तक कभी डसने न पाई,
हिन्दिओ! तुमको तुम्हारी उस जवानी की कसम है।

है कसम उस कौम की, जिस में 'शिवा', 'राणा' हुए हैं,
और 'टीपू' ने बहुत सम्मान है जिसका बढ़ाया।
उस धरा की है शपथ, जिस में कि जन्मे 'राम-लक्ष्मण',
'कृष्ण' ने सन्देश गीता का जहाँ आकर सुनाया।

हिन्दुओ! तुम को शपथ है वेद और पुराण सबकी,
मुस्लिमो! तुम को शपथ अपने अरे कुरआन की है।
सिख योद्धाओ! कदम पीछे न हट पाएं तनिक भी,
अब तुम्हें सौगन्ध गुरु गोविन्द की किरपान की है।

जैनियो, ईसाइयो, बौद्धो! नहीं बैठे रहो तुम,
है तुम्हें सौगन्ध गिरजों, मन्दिरों की, औ' मठों की।
नारियो! साक्षात् हो तुम ही भवानी और चण्डी,
है तुम्हें सौगन्ध पतियों, भाईयों की, औ' सुतों की।

बाँध लो अपनी कमर सब, देर का मौका नहीं है,
क्योंकि दुश्मन अब तुम्हारे देश को ललकारता है।

एशिया की आस्तीनों में पला जो नाग काला,
वह हिमालय पर खड़ा हो हिन्द पर फुफ़कारता है।

भारतीयो तुम रहे हो सिद्ध बाजीगर सदा के,
आज इस बेशर्म काले नाग के फन को मसल दो।
दुश्मनों के खून से तुम बाल सींचो द्रौपदी के,
'पाण्डवो!' इन चीन के 'दुर्योधनों' के सिर कुचल दो।

तुम वही हो शौर्य से जिनके गगन भी काँपता है,
तुम वही हो थरथराती है धरा जिनके चरण से।
तुम वही हो जीत पाया था नहीं जिनसे 'दशानन',
तुम वही हो जो कि कुश्ती में विजय पाते मरण से।

दोस्तो! इस वक्त माँ का दूध लज्जित हो न जाए,
देखना हर्गिज़ न अपनी लाज लुट जाए बहन की।
इस तरह तुम को जला कर खाक करते हैं लुटेरे,
याद ताज़ा विश्व में हो जाए फिर लंका-दहन की।

और वे गद्दार अपने मुल्क में जो पल रहे हैं,
देखना उन में कि ज़िन्दा एक भी रहने न पाए।
जिस जगह मिल जाएँ वे तुम को वहीं पर धर दबोचो,
एक भी 'मारीच' अब 'हा राम!' फिर कहने न पाए।

मुश्किलों के बाद आज़ादी मिली है आज हमको,
जो बुराई से तके, तुम आँख उसकी फोड़ डालो।
चीन हो या और, जो भी हिन्द की सीमा उलाँघे,
तुम बिना पूछे जवानो टाँग उसकी तोड़ डालो।

शांति के हम हैं पुजारी किन्तु यह मतलब न इसका,
हम अमन के दुश्मनों से भी न लड़ना जानते हैं।
खुद डकैती की नहीं, माना डकैती को बुरा है,
पर डकैतों की हमीं गरदन पकड़ना जानते हैं।

इसलिए चीनी डकैतों का करो पहले सफ़ाया,
फिर करो मसमार उसको जो हिमायत में खड़ा हो।
देवता पैगम्बरों के पुत्र तुम, जय हो तुम्हारी,
नास्तिकों का दल न जीतेगा, भले कितना बड़ा हो।

मोह में अर्जुन तुम्हारा कुछ दिनों तक तो रहा पर,
आज इस कुरुक्षेत्र में वह कर्मयोगी बन गया है।
शांति की हर एक कीमत आज तक जिस ने अदा की,
अब तुम्हारा वही भारत, शेर बन कर तन गया है।

इसलिए भाई! करो मत काम अब आलोचना का,
यह वतन की, कौम की, सब की परीक्षा की घड़ी है।
हिन्द वासी! तुम सभी मिल कर कदम आगे बढ़ाओ,
जीत देखो सामने जयमाल ले, कबसे खड़ी है।

दे नहीं लानत किसी दिन दोस्त! सारा विश्व तुम को,
देखना मेरे वतन का कारवाँ यह रुक न जाए!
पूर्वजों की है शपथ तुम को जवानो याद रखना—
गर्व से ऊँचा उठा इस देश का सिर झुक न जाए!!

O

# जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान

○

## श्री रामकुमार चतुर्वेदी

आँख में अंगार, साँसों में लिए तूफान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

धर्म-पुत्रों ने नहीं देखा कपट का जाल,
फाँसती ही गई उनको शत्रु की हर चाल।
भीम-अर्जुन भी रहे अपमान भीषण झेल,
बहुत महँगा पड़ रहा है, यह जुए का खेल।

द्रौपदी-सी चीखती है यह धरा असहाय,
वस्त्र खींचे जा रही धृतराष्ट्र की संतान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

मौन बैठे भीष्म द्रोणाचार्य हैं चुप-चाप,
कर रहे नत शिर युधिष्ठिर मौन पश्चात्ताप।
हँस रहा दुर्योधनों-दुःशासनों का झुण्ड,
भूमि का जीवन बनेगा क्या नरक का कुंड?

"शत्रु शोणित से धुलेंगे द्रौपदी के केश",
भीम! उठकर के सभा में यह प्रतिज्ञा ठान।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

न्याय-घायल, सत्य के मन में व्यथा है आज।
घट रही फिर महाभारत की कथा है आज।
स्वार्थ गाते, नग्न हो पशुता रही है नाच,
पाण्डुनन्दन मोह की गाथा रहे हैं बाँच।

बन्धुता रोती, सिसकते मित्रता के प्राण,
सामने कौरव खड़े हैं माँगते रण दान ।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

हो रहा है शक्ति-मद में शत्रु रक्त-पिपासु,
कौन है, केशव यहाँ पर न्याय का जिज्ञासु ?
हिंस्र पशुओं के नयन हर ओर आज सतृष्ण ।
संधि की बातें न छेड़ो ओ कलाधर कृष्ण ।
गोपियों का दल नहीं यह कौरवों का झुंड,
बाँसुरी फेंको उठाओ पांचजन्य महान् ।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

जाग हे, भारत ! महाभारत ठनेगा आज,
हम बचा करके रहेंगे द्रौपदी की लाज ।
भीम का प्रण पूर्ण होने पर बँधेंगे केश,
कृष्ण! दो अविलम्ब गीता का अमर उपदेश,
बज रही भेरी नहीं थमते रथों के अश्व,
कहो अर्जुन से करें गांडीव का संधान ।
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

बज रहा डमरू, हिमालय ध्वनित बारम्बार,
चाहते शिव मुंडमाला से नया शृंगार ।
अग्नि बन जाए सुभद्रा की नयन-जलधार ।
उत्तरा की मांग लुटने हो रहे तैयार ।
चक्रव्यूहों का निमंत्रण है तुम्हें अभिमन्यु ।
मांगती है मुग्ध जयलक्ष्मी तुम्हारे प्राण ।
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

○

# जाग रहे हम वीर जवान !

○

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

जाग रहे हम वीर जवान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल।
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर अचल।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं।
हम हैं शान्ति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीर-प्रसु माँ की आंखों के, हम नवीन उजियाले हैं।
गंगा, यमुना, हिन्द महासागर के हम रखवाले हैं।

तन, मन, धन तुम पर कुर्बान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण,
जिन में नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन।
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल।
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अन्तर कोमल।
थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर।
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर।

हम उन वीरों की सन्तान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम शकारि विक्रमादित्य हैं अरि-दल को दलने वाले।
रण में जमीं नहीं, दुश्मन की लाशों पर चलने वाले।
हम अर्जुन, हम भीम, शान्ति के लिए जगत में जीते हैं।
मगर शत्रु हठ करे अगर तो, लहू वक्ष का पीते हैं।
हम हैं शिवा-प्रताप रोटियाँ भले घास की खाएँगे।
मगर किसी ज़ुल्मी के आगे, मस्तक नहीं झुकाएँगे।

देंगे जान, नहीं ईमान,
जियो, जियो, अय हिन्दुस्तान !

जियो, जियो अय देश! कि पहरे पर ही जगे हुए हैं हम।
वन, पर्वत, हर तरफ चौकसी में ही लगे हुए हैं हम !
हिन्द-सिन्धु की कसम, कौन इस पर जहाज़ ला सकता है ?
सरहद के भीतर कोई दुश्मन कैसे आ सकता है ?
पर की हम कुछ नहीं चाहते, अपनी किन्तु बचाएंगे।
जिस की उंगली उठी, उसे हम यमपुर को पहुंचाएंगे।

हम प्रहरी यमराज समान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

# आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी

○

श्री राममनोहर त्रिपाठी

राष्ट्र वंदना की बेला में कैसी आनाकानी,
आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी ।

○

हरियाली पर किसी बड़े पतझड़ की आँख गड़ी है,
भगवी पावनता पर कोई शैतानी बिगड़ी है ।
सत्य-सफेदी पर दुश्मन कालिख मलने आया है,
शांति-चक्र को संघर्षों का भय छलने आया है ।

किन्तु तिरंगा किसी शक्ति के आगे नहीं झुका है,
नभ की छाती पर फ़हरा है यह झंडा अभिमानी ।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी ।

○

नादिरशाह, गजनवी, चंगेजों को लौटा देंगे,
आग बिछी है—अगर बढ़े तो लोहू ओटा देंगे ।
'गौतम' के भोले भारत में 'भीम' भयंकर भी हैं,
'भस्मासुर' की खातिर 'शिव-शंकर' प्रलयंकर भी हैं ।

इतिहासों की गहराई में विश्वासों की जड़ है,
भारत है प्राचीन, चीन है नया—नई नादानी ।
आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी ।

○

झुकना नहीं हिमालय, हम आगे बढ़ते आते हैं,
बर्फ उतार धरो प्रहरी बेटे लड़ते आते हैं।
सिक्किम औ' भूटान गोद में थोड़ी देर संभालो,
फिर तुम जितना लाल चीन का लोहू मिले नहा लो।

बारूदी बाँधों से धारा कभी नही मुड़ती है,
गंगा से मिलने आएगा ब्रह्मपुत्र का पानी।
आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी।

○

हरी-भरी फसलें बल खाती हैं मेरे खेतो मे,
नहरें अठखेली करती राजस्थानी रेतों मे।
बाँध उगलते बिजली, लोहे को भी गला रहे हैं,
शक्ति अभी छोटी है उंगली पकड़े चला रहे हैं।

उन्नति की पहली सीढ़ी पर पहला कदम पड़ा है,
प्रजातन्त्र को कोस रहा है फिर सामंती वाणी।
आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी।

# डोल उठी है धरा !

श्री रामानन्द दोषी

आँधियों ने गोद में हमको खिलाया है, न भूलो,
कंटकों ने सिर हमें सादर झुकाया है, न भूलो !
सिंधु का मथ कर कलेजा हम सुधा की शोध लाए,
औ' हमारे तेज से सूरज लजाया है, न भूलो !

वे हमीं तो हैं, कि इक हुंकार से यह भूमि काँपी,
वे हमीं तो हैं, जिन्होंने तीन डग में सृष्टि मापी,
और वे भी हम, कि जिनकी सभ्यता के विजय-रथकी
धूल उड़कर छोड़ आई छाप अपनी विश्व-व्यापी ।

वक्र हो आई भृकुटि तो ये अचल नगराज डोले,
दस दिशाओं के सबल दिक्पाल, ये गजराज डोले ।
डोल उट्ठी है धरा, अंबर, भुवन, नक्षत्रमंडल,
ढीठ अत्याचारियों के अहंकारी ताज डोले ।

सुयश की प्रस्तर-शिला पर चिह्न गहरे हैं हमारे,
ज्ञान-शिखरों पर धवल ध्वज-चिह्न लहरे हैं हमारे ।
वेग जिनका यों, कि जैसे काल की अंगड़ाइयाँ हों,
उन तरंगों में निडर जलयान ठहरे हैं हमारे ।

मस्त योगी हैं, कि हम सुख देख कर सबका सुखी हैं,
कुछ अजब मन है, कि हम दुख देख कर सब का दुखी हैं ।

तुम हमारी चोटियों की बर्फ़ को यों मत कुरेदो,
दहकता लावा हृदय में है, कि हम ज्वालामुखी हैं।

लास्य भी हमने किए हैं, और तांडव भी किए हैं,
वंश मीरा और शिव के, विष पिया है औ' जिए हैं,
दूध मां का, या कि चंदन, या कि केसर—जो समझ लो,
यह हमारे देश की रज है, कि हम इसके लिए हैं।

# थाम लो संभाल कर देश की मशाल को

○

**श्री रामावतार त्यागी**

हिंद के बहादुरो ! शूरवीर बालको !
थाम लो संभाल कर देश की मशाल को !

अन्धकार का ग़रूर आन-बान तोड़ दो,
बालको, भविष्य के लिए मिसाल छोड़ दो,
दो नयी नयी दिशा—वर्तमान काल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो सँभाल कर देश की मशाल को !

देश माँगता कि खून से रँगा गुलाब दो,
तुम उठो सिपाहियो शत्रु को जवाब दो,
झूम-झूम कर मलो युद्ध के गुलाल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो सँभाल कर देश की मशाल को !

दूर तक ज़मीन पर शानदार जय लिखो,
तुम विशाल सिन्धु पर खून से विजय लिखो,
तोड़ दो पिशाच के तुम हरेक जाल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो सँभाल कर देश की मशाल को !

○

# बालमुष्टि वज्राघात

○

**श्री बसन्त बापट**

जब सान्ध्य प्रार्थना के विलम गए विरल सुर,
पाल टूटा अजेय जहाज़ जब गया दूर-दूर ।
तब से राजमहल में भीड़-भाड़ भी कितनी,
राजघाट डूब गया, आश्रमों की क्या गिनती ?

पंख टूटे पंछियों के, नीली राहों जमी धूल,
हरियाली पर बिहरते किसी को न चुभा शूल ।
काली कालनिद्रा आई सफेद शुभ्र कोशों में,
गीत हुए भिचे-भिचे तनखावालों के घोषों में ।

पहले चींटी बनी मनुज, अब मनुष्य बने चींटियाँ,
जो देखो सो बीज खाए, उगे कहाँ से बालियाँ ।
रुआँसा सा बहता था मूल-स्रोत नीला रक्त,
पन्द्रह साल ज्वार नहीं, लज्जास्पद भाटा फ़क़त ।

तभी बजा भैरव-शंख, तुरही की तीव्र डाक,
आँधी आई, दावा बढ़ी, ब्रह्मपुत्र राख खाक ।
नींद पर पड़ी मशाल, संचित सब चकनाचूर,
उगते हुए सूरज पर लाल पीला धुंआँ क्रूर ।

आसमाँ में जलजला काँप उठा वतन का घर,
खिड़कियाँ तड़क गईं, छप्पर गिरा सिरों पर ।

तभी कहीं से स्वर आया, अभी नहीं हुई है देर,
अशुओं का गारा बना, पूरब में उठा दीवार—

किसका यह धीमा स्वर कानों पर आता है
तोपों-बन्दूकों से ऊंची आज्ञा कौन देता है ?—
हर एक के तरकस में भर दी है गर्म साँस,
टूटे हुए चक्र में बनी धुरा एक हाथ ।

टूटी झोंपड़ियों पर आग बरसाई अब उनको तो
एक ही जवाब नहीं काफी, बस बदला लो, बदला लो
जितने लोग उतने वीर, कौन पीछे पैर खींचे
आज़ादी की आकांक्षा को कोई रोक सकता है ?

सह्याद्रि की आँधी हवा जा उस पार दे खबर
ठंडे-ठंडे बर्फ़ में ही जिसे चाहिए हो कब्र
उतने भूत आगे आएँ, बाकी सब चले जाओ
कुहनी घुटने हैं संगीन, बालमुष्टि वज्र-घाव ।

रूपान्तरकार : श्री प्रभाकर माचवे
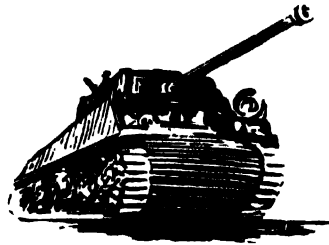
# आज तुम्हें तो बलि शीशों की अपनी यहाँ चढ़ानी होगी

○

श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'

धूल धूसरित आर्य, उठो हे ! निश्चय विजय तुम्हारी होगी।

यद्यपि प्रभु ने पूर्ण विजय का है चुपके से वचन दे दिया,
किन्तु तुम्हें तो बलि शीशों की अपनी यहाँ चढ़ानी होगी।
देश-मुक्ति का प्रश्न नहीं यह विश्व-मुक्ति का महायुद्ध है,
विश्व-जननि के वीर पुत्र की तुम को रीति निभानी होगी।
जीवन-श्रमश्लथ राहुग्रस्त यह धरा तुम्हारी राह देखती,
देव-पुत्र हे, मनुज वृत्तियाँ कर्दम-मुक्त करानी होंगी।
शब्द ब्रह्म, उस जग-कारण की ऊर्जा तुम्हें पचानी होगी,
और अन्न के इस प्राणी में वाचा शक्ति जगानी होगी।
मौन रहो, पीछे मत देखो, आगे आगे बढ़ते जाओ,
अभी बहुत कुछ करना है इक अतुलित शक्ति जुटानी होगी।
अपनी एक एक दुर्बलता गला-गला फौलाद बना कर,
अग्नि-अस्त्र-शस्त्रों की उस से अपनी शक्ति बढ़ानी होगी।
सच है जग की सारी आशा भारत पर ही आधारित है,
पर प्रभु से भारत की आदि-प्रतिज्ञा तुम्हें निभानी होगी।
तुम आत्मा हो इस ऊँचे आदर्श के लिए जीना होगा,
औ' आदर्श जिए, बस उसके लिए, मृत्यु अपनानी होगी।

○

# लाज माँ की बचाना तुम्हें है कसम

श्रीमती विद्यावती मिश्र

देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नहीं !!

शीत में प्रीति की आग को ताप लो,
इन पहाड़ों से माँ का हृदय माप लो,
राष्ट्ररक्षा सदा वीरता का नियम !
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नहीं !!

स्वर्ण देंगे कि तुम अस्त्र से सज सको,
रक्त देंगे कि तुम मृत्यु-भय तज सको,
त्याग-बलिदान का टूट पाये न क्रम ।
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकले नहीं !!

कौन तुम को सका जीत है आज तक,
हार हिम्मत गये हैं सिकंदर तलक,
लाज माँ की बचाना तुम्हें है कसम !
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नहीं !!

# हमारा ऊँचा रहे निशान

○

श्री विनोद रस्तोगी

वीरों की सन्तान,
हमारा ऊँचा रहे निशान।
ऊँचा रहे निशान,
हमारा ऊँचा रहे निशान।

आगे बढ़ना कर्म हमारा,
ऊपर चढ़ना धर्म हमारा,
टकराते हैं महाकाल से अपना सीना तान।
हमारा ऊँचा रहे निशान !
ऊँचा रहे निशान, हमारा ऊँचा रहे निशान !

जो कोई आगे आएगा,
चूर-चूर वह हो जाएगा,
हाथों में है बिजली आँखों में आँधी-तूफान।
हमारा ऊँचा रहे निशान !
ऊँचा रहे निशान, हमारा ऊँचा रहे निशान !

सीमा पर चढ़ आने वालो,
सोया शेर जगाने वालो,
भारत का बच्चा-बच्चा है फौलादी चट्टान।
हमारा ऊँचा रहे निशान !
ऊँचा रहे निशान, हमारा ऊँचा रहे निशान !!

# हटो चीनियो दूर, हिमालय तुमको खा जाएगा

○

**श्री विमलचन्द्र 'विमलेश'**

कौन उत्तरी सीमा पर अंगार बिछाने आया ?
किसने गंगा-यमुना की धारा में विष बिखराया ?
किस बर्बर ने अनजाने सोता हिमराज जगाया ?
किसने ऋषियों की धरती के मुँह का ग्रास चुराया ?

चाऊ-माऊ ! भारत माँ की साड़ी फाड़ रहे हो,
भारत-लक्ष्मी की लज्जा को आज उघाड़ रहे हो,
कायर ! वीरों की धरती पर आज दहाड़ रहे हो,
'भूषण', 'जगनिक' की गलियों में क्यों चिंघाड़ रहे हो?

मैं अपनी भावी आशा की राह सँवार रहा था,
आने वाली मुस्कानों को आज पुकार रहा था,
मैं जीवन की स्नेह प्यार की बात विचार रहा था,
अजय शांति की धरती पर तस्वीर उतार रहा था ।

पर तूने सोचा हँसती कलियों का हास चुराना,
उत्तर के नन्दन-वन लहराया मधुमास चुराना,
'ताजमहल' की धड़कन को चाहा विष-पान कराना,
'शीशगंज' की गुरु-वाणी की अक्षय जोत बुझाना ।

पर सुन मैंने भी बर्बर सिंहों के दाँत गिने हैं,
जाने कितनी बार रुधिर से मेरे गात सने हैं,

जो घूरेगी आँख क्रोध से, उसे फोड़ दूंगा मैं,
उठने वाले कोटि सिरों को आज तोड़ दूंगा मैं।

कलम और बन्दूक मुझे दोनों प्यारी लगती हैं,
जन्म-मृत्यु की तानें मेरे गीतों में जगती हैं,
'शास्त्र' और 'शर' सदियों से मेरे जाने पहचाने,
छ्यासी कोटि भुजाएँ जिसकी वह क्यों झुकना जाने।

हटो चीनियो ! दूर, हिमालय तुम को खा जाएगा,
हटो ! नहीं तो पीकिंग तक मातम सा छा जाएगा,
जो कह सकते : 'जीओ, जीने दो' दुनिया वालों को
उनके होंठ चूम लेते हैं, पागल भूचालों को।

जो धरती 'गौतम' के गीले गाने गा सकती है,
वही धरा कण-कण से ज्वाला भी उमगा सकती है,
पंचशील का हार प्यार से जो पहना सकते हैं,
वे ही हाथ तुम्हें मरघट के बीच सुला सकते हैं।

हटो ! नहीं तो यहां भैरवी हर स्वर से गूँजेगी,
हटो ! नहीं तो चीनी मिट्टी शोलों से जूझेगी,
हटो ! नहीं तो आग यहाँ की तुम न बुझा पाओगे,
हटो ! नहीं तो नेफा के आँगन में सो जाओगे !

# शंकर का यह नेत्र खुला

○

श्री विश्वदेव शर्मा

हिमगिरि का यह बाँध रिस उठा आज अचानक,
और उधर का ज़हर यहाँ छन कर आया है।
यह चालीस कोटि शंकर का देश मचलकर,
उसको आत्मसात् करने को अकुलाया है।

एक घूँट में अजगर का सारा विष पीकर,
इसको फिर अफीमची की बेहोशी देंगे।
ये अस्सी करोड़ बाँहों के कड़े शिकंजे,
कसकर इन फुंकारों को खामोशी देंगे।

अपना कण्ठाभरण बनाकर जिस अजगर को,
शिव निर्माण-समाधि लगाने बैठ गए थे!
वही उलट कर आज काटने को आया है।
(खुश-फहमी के भाव कहाँ तक पैठ गए थे!)

चक्षुश्रवा हुआ करता है अजगर केवल,
कानों सुनता नहीं, मानता आंखों देखी।
इसीलिए इतिहास नहीं यह सुन पाया है,
चेतावनियों पर भी दिखलाता है शेखी।

शंकर का यह नेत्र खुला, ज्वालाएँ धधकीं,
जिनको सुनना नहीं, देखना, सहना होगा।

जिन में अपनी सारी चर्बी जला गला कर,
अपने असली ढाँचे में ही रहना होगा।

छल से पाई हुई जीत पर क्या इठलाना ?
पौरुष भी यों छल-छद्मों में रीत सका है ?
भले जुए में जीत सका हो धर्मराज को,
भला महाभारत में शकुनी जीत सका है ?

भोले भण्डारी शंकर को बहुत याद हैं,
उनके ही वरदान उन्हीं को डसने वाले।
लेकिन भस्मासुर जैसे भी याद बहुत हैं,
अपनी ही करनी में आखिर फँसने वाले।

डम-डम डमरू बोल रहा है, जगी दिशाएँ,
धक-धक करता जाग रहा पावक प्रलयंकर।
सावधान ! ओ चीन ! आज प्राचीन देश यह,
ताण्डव करने को जागा बनकर शिव-शंकर।

हिमगिरि में यदि छेद हुए, विष बहकर आया,
हम रुण्डों-मुण्डों का बाँध खड़ा कर देंगे।
इधर युगों से भूखी-प्यासी है रणचण्डी,
अब हम उनके खप्पर पर खप्पर भर देंगे।

# धीर शूर कमर कसो !

**श्री विश्वनाथ सत्यनारायण**

ये हिमाद्रि तुंग शृंग अब तक रहते आए,
सुन्दर वासस्थल, सुरवृन्दों के मनभाए ।
कैसी यह अग्निवृष्टि ? प्रलयंकर शतघ्निसृष्टि ?
कैसी संहारक यह ताण्डवमय मृत्युदृष्टि ?

यहाँ कुछ दिनों पहले तक, दिनान्त को प्रतिदिन,
मुकुटश्लिष्ट-बालचन्द्र-मल्ली-समुहार पहन,
जगमोहन गौरी-शिव थामे हाथ परस्पर
निकला करते विहार को सहर्ष थे मिलकर !
यहां कौन धूर्त, अरे, चोरी की नीयत से

उगल रहा है अग्नि शिखाएँ, हट सत्पथ से ?
रहा वास यह, सन्तत हिम भूधर का, जिसके
कारण कहते, लोगों को इस दक्षिण दिशि के
मानस-नैर्मल्य सदा ही से मिलता आया ।
यहाँ कौन है चिताग्नि बन कर जलता आया ?

इस बदरीवन समूह के उगले सौरभ से—
सुरभितऋषिचन्द्रवाटिका-बहुल-श्रीतति से
संशोभित, इस पुनीत क्षेत्र में, अरे सहसा
कौन क्रूरकर्मा यह, प्रकृतिविरोधी, ऐसा,

कानों के परदे, जो, फोड़ता हुआ, भीषण
तोपें बन्दूकें दाग रहा मृत्युविभीषण !
शुभ लक्ष्मी-जन्मभूमि, बदरीवन पुण्यभूमि ।
पूत मार्ग में उसके यात्री जन झूम-झूम--
भक्ति-भाव से विभोर पंक्तिबद्ध चलते थे--
कल तक जो, भव्य शान्ति प्राप्त कर मचलते थे,
वही आज, जैसे खुल गई मुक्तिसतीजटा--
चहुंदिसि डर कर भाग निकलते हैं, मृत्युघटा--
छाई हो ज्यों ! मगर मुरापी यह कौन भला,
खोद रहा मुक्ति के लिए खाई बन पगला ?

कौन मलिनमति यह ? है अग्निगोल उगल रहा,
निकल उन पवित्र भूमियों से, तज लाज यहाँ--
भव्य अहिंसा-मुनि के सदुपदेश पलते हैं ।
यहाँ, जहाँ देवगण विहार को निकलते हैं,
इन पवित्र खेतों में आकर उन्माद भरे--
किसी 'वाद' का कर अनुसरण नास्तिकता भरे,
करने लग गया दहन कार्य महाक्रूर अरे ।

ये विहार-भूमियाँ अमरगण की हैं, इनके
रक्षक होंगे कोई, हम क्यों सह लें इनके
हित दारुण शीत यहाँ ? यह विचार छोड़ चलो ।
धीर शूर कमर कसो । सबसे मुँह मोड़ चलो ।।

तत्व-वह्नि परमेश्वरि का स्वरूप कामरूप !
वहां लौकिकाग्नि परिषदें सुलगाता, विरूप

दृष्टि मनस्तत्व जो खड़ा है, उसको खट से
घाट उतारेगा तलवार के न जो झट से,
यदि वह अपने को कह ले सुभारतीय आर्य,
धिक् है उसको ! उससे और कौन है अनार्य ?
सर्वकाल सर्वावस्थाओं में कुंडलिनी,
अथक जागरूक रही है जहाँ, अखण्ड बनी,
लोकवृद्धि को निरूढ़ और ज्वलनशील किए
ऐसे इस क्षेत्र में, न रहो लोग बन्द किए—
आँखें निज, मिट्टी खा पड़े हुए अजगर सा,
झट से रक्त उगलवाओ अरि से, उठ शर सा ।

—रूपान्तरकार : श्री राममूर्ति रेणु

# भारत देश हमारा है

○

**श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'**

देश-भक्ति की दीप-शिखा के हम दीवाने परवाने,
बलिपथ के मतवाले राही, चलते हैं सीना ताने,
तन देंगे, धन देंगे इस पर प्राण निछावर कर देंगे,
काली रणचंडी का आँगन अरि-मुंडों से भर देंगे ।
तन की हर हड्डी चमकेगी, मानो तेज़ दुधारा है,
कदम बढ़ेंगे, नहीं रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हम को अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।
जगो देश की प्यारी बहनो, जगो देश की माताओ,
वीर-पत्नियो उठो कि रण के सब सामान सजा लाओ ।
बहा हमारा अगर पसीना, शस्त्रों की तैयारी हो,
एक खून की बूँद हमारी, सौ दुश्मन पर भारी हो ।
वीर-सैनिको उठो कि तुमको माँ ने आज पुकारा है,
कदम बढ़ेंगे, नहीं रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।
वह कैसे सोएगा सुख से, जिसका दुश्मन जीता है ?
'जागो, उठो, शत्रु को मारो', गाती अपनी गीता है ।
साँसों में तूफ़ान बसा है, बोली में पलती आँधी,
हमने तो अपने पैरों में, महाप्रलय की गति बांधी ।
"मरो देश के लिए सपूतो", यही हमारा नारा है,
कदम बढ़ेंगे, नहीं रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।

# पूतन को टेर मातु भारती लगाई है

○

**श्री विष्णुदत्त मिश्र 'तरंगी'**

उमड़ पड़े हैं ज्वान उत्तर से दक्खिन लौं,
पूतन को टेर मातु भारती लगाई है।
नेफा व लदाख शहज़ोर रणधीर वीर,
सजग असाम बंग साजी तरुणाई है।
उत्तर प्रदेश व बिहार युद्ध जोम पूत,
महाराष्ट्र आंध्र उठे केरल के भाई हैं।
पूत पंजआबिन धनी जो युग पौरुष के,
तेहि बलिदानन की लगन लगाई है।

उबला गरम खून त्रिपुरा मणीनपुर,
धीर मध्यदेश, देख बादल विनाश के।
धाये कर्नाटक हिमाचल से देशबन्धु,
विकल उड़ीसा वीर-बाहु मदरास के।
धन्य गुजराती मयसूर के तरुण प्राण,
वीर रजथानी जो खिलाड़ी रणलास के।
उमग बढ़े हैं कशमीरिया सरोष रण,
चमक चढ़े हैं लक्ष सूरज प्रकाश के।

विकट जुझार, हिमशिखर। अजेय ज्वान,
पीलिया प्रलय वबा जड़ से उखाड़ देत।
कुचल कुचल फन, विष के उखाड़ दाँत,
शत्रु मुंडमालन करत गिरिराज भेंट।

लोथन से पाटत हैं क्षण में समर भूमि,
शत्रु को रक्त पीय नाचत हैं भूत प्रेत।
दहक दहाड़ से कँपाय शत्रु रोम-रोम,
बोल जयहिंद वीर भारती चुनौती देत।

कपट चढ़ाई कर भारत घुसे जो दस्यु,
गाजर की भाँति रण खेतन उखाड़ेंगे।
प्रलय पयोधि में डुबाय अभिमान शत्रु
कागज के शेरन को चीर-फार फाड़ेंगे।
कुटिल कमीन नीच चीन को गिराय कीच,
एक-एक चीनिया को भूमि भींच गाड़ेंगे।
चीनी के खिलौने भाँति खंडित करेंगे चीन,
मार-मार बूटन से नजर उतारेंगे।

ऐ रे शांति-शत्रु चीन, बढ़ा जो गुमान बल,
पेकिंग लौं तोहि को निकाल कर मानेंगे।
समर चढ़े हैं ज्वान भारत प्रतापी पूत,
क्षार क्षार तेरा इन्द्रजाल कर मानेंगे।
तेरे काल मेघन को वज्रन विदारि कर,
चीनियाँ चनों को दल दाल कर मानेंगे।
सिंह सिंहगढ़ के बढ़े हैं भीम छाती रण,
पीली नदिया को लाल लाल कर मानेंगे।

भारत के शंकर ने खोला है तृतीय नेत्र,
चीन बदकार को उखार क्षार करिहौं।
जल थल अंबर, त्रिलोक तीन खेद खेद,
गिरि श्रृंग वादी व पहार॰ फार लरिहौं।

चरन पखार मातु शत्रु के गरम रक्त,
चूर चूर चीन की दिवारद्वार करिहौं।
ऐरे दगादार तेरे पातक कपार तोहि,
हिम के कछार में पछार चार करिहौं।

आन के पुजारी वीर भारती करत वार,
हिम-गिरि शृंगन पै कूंद कूंद धाय धाय।
आँधी अधरत्तन में धावत पवन पूत,
औचक रहे हैं शत्रु ठाढ़े मुख बाय बाय।
खड़क खदेड़ें रिपु संगर पुरन्दर से,
नाचत पिशाची शत्रु भेजन को खाय खाय,
धमक धमक धम्म लोथन पै लोथ चढ़ें,
माओ करे म्याऊँ और चाऊ करे हाय हाय।

एक एक इंच भूमि वापस करेंगे हम,
बेड़ा रिपु डोब देंगे बीच मँझधार में।
कड़क कड़क धूम, धड़क धड़क धूम,
मीचन मरोरि देंगे आँधिया अँगार में।
सिक्त कर देंगे चीनी रकत समरभूमि,
लाल लाल खून बहे ह्वांगहो की धार में।
माओ मिल पाय नहीं म्याऊँ को ठौर जग,
होश रहे नाहिं चाऊ चुगद लबार में।

वज्र भांति टूट वीर भारती अजेय युग,
दगाबाज़ तेरी लौह परिघा गिरावेंगे।
तोपन पछाड़ कोप कोपन पछाड़ पुनि,
पौरुष बजार तेरी किस्मत गिरावेंगे।

आहुति हुंकार हांक खड्ग कृपाण कोप,
माटिन के मोल चाऊ-माऊ को बिकावेंगे ।
देहली की छाँह तक दाबन न देंगे नीच,
पेकिंग के घाट तेरी हिम्मत सिरावेंगे ।

खांडा प्रतिशोध वीर भारती प्रकोप ज्वाल,
नीच चीनियों को यम-द्वार लौं प्रताड़ेंगे ।
भागन न दैहैं, तोहे छोड़ के समर-भूमि,
जीवित ही नीच तोहि सिंह भांति फाड़ेंगे ।
नेफा व लद्दाख से निकाल कर कान खींच,
तिब्बत स्वतन्त्र कर ल्हासा में दहाड़ेंगे ।
माऊ को मलीदा कर, चाऊ चटनी सा पीस,
भाँति हनुमंत हम पेकिंग उजाड़ेंगे ।

विजय-वधू को बिन जीते न रहेंगे हम,
जाहिर जहान शौर्य भारत बढ़ाइयाँ ।
साँच पथ जाने हम अंबर पताल लोक,
नीची कर देत उच्च कठिन चढ़ाइयाँ ।
दंभ की चटानें कर देत हैं अभेद्य चूर,
छीन भुज-दंड लेत कपट कमाइयाँ ।
भारत पराक्रम प्रसिद्ध अविजेय जग,
रक्षक अमरनाथ साखी गुरु साइयाँ ।

# सिपाही देश के ! हिमालय छीन ले !

○

श्री वीरेन्द्र मिश्र

सिपाही देश के !
हिमालय छीन ले !
मुक्त देश पर फिर विदेश से आया संकट क्षण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
हिमगिरि अपना राजमुकुट है प्रहरी जीवनधन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

(१)

वही हिमालय जहाँ कि गंगा-यमुना का उद्गम
जहां हमारे वीर शेरपा नहीं किसी से कम
वही हमारी तपोभूमि है ऋषियों का आँगन
हिम-शिखरों पर मुक्ति देवता का है सिंहासन
उस सिंहासन पर है अब उस की छाया
छलती रही हमें जिस की चंचल माया,
जिस के लिए चले विपरीत बहावों में
पानी भरता गया हमारी नावों में ।
भाई समझा जिस को अपनाया हमने,
उस से ही विश्वासघात पाया हमने ।
और एक दिन विस्मित होकर देखा तो

लांघ गया वह अपनी लक्ष्मण-रेखा को
इतने छल से हुआ न होगा कोई अतिक्रमण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
चन्दन-वन को ही मिलना था विषधर का दंशन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

(२)

सौ फूलों का नारा देने वाले को क्या ज्ञात,
हमने उसकी गन्ध सराही और सराहा प्रात।
हम को खुशबू भली लगी पर तोड़ा कभी न फूल,
उस के मधुवन बस लें ऐसी तो की कभी न भूल।
हम गुलाब का सौदा करते नहीं कभी,
शांति चाहते लेकिन डरते नहीं कभी.
वीर सिपाही उसको यह बतला देना:
भारत की सारी जनता ही है सेना!
तू जिस बलिवेदी पर रक्त चढ़ाता है,
उसका हर नद्दी पर्वत से नाता है,
हर बहार तेरे ऊपर न्यौछावर है,
उत्तर ही क्यों दक्षिण का भी सागर है,
तेरे पीछे खड़े हुए सब भारत जन-गन-मन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
माता ने आशीश दिए हैं, बहनों ने कंगन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

(३)

ठंडी हवा अलकनन्दा की करतीं आंखें लाल,
विन्ध्याचल, सतपुड़ा, अर्वली आज हुए विकराल,
कभी नहीं देखा जो तूने आज वही तू देख
मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे का पंथ हुआ है एक ।
फिर सह्याद्रि श्रृंग से उठा मराठा है,
केरल से शंकराचार्य ने डाँटा है ।
है कैलाश प्रकंपित शिव के तांडव से,
कौरव फिर लड़ने आया है पांडव से !
धरती माता को छीना है रावण ने,
फिर आवाज़ लगाई युग के चारण ने :
जाग देश के प्रहरी सीमा टूटी है !
मधुर दिशा से खट्टी गोली छूटी है !
तन-मन दोनों से ही बौना है अपना दुश्मन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
चिन्ताओं ने घेरा संस्कृति का आनन्द-भवन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

(४)

मत उदास हो रण के इस दुर्गम-पथ में
तू कर शर-संधान, हाँकता हूं रथ में
तेरी जय आगे पीछे उसके साधन,
गीता भी है वहीं जहाँ है रामायण !
सेतु नहीं बँधना है, पर्वत चढ़ना है,
पवन-पुत्र को कुम्भकर्ण से लड़ना है !

हिमगिरि ज्वालागिरि होता है तो हो ल,
जो टकराएँ आठ-आठ आँसू रो लें !
यहाँ पुँछे सिन्दूर, वहाँ चूड़ी टूटे,
टुकड़े कर दे जो आरोप लगे झूठे,
शस्य-श्यामला भूमि नहीं है शबनम की !
चल न सकेगी यहाँ बन्दरों की धमकी !
भारत माता के हाथों में है रक्षा बन्धन !

सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
शोणित का सागर बन जाए, हो समुद्र-मंथन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

# उठो कि वक्ते जंग है

○

**श्री 'शहाब' लखनवी**

हिमालिया की चोटियों पै जंग की घटाएँ हैं ।
हमारी पाक सरहदों पै अनगिनत बलाएँ हैं ।।
अज़ल की सर्द घाटियों में बे-जली चिताएँ हैं ।
उदास सैंकड़ों घरों में बीवियाँ हैं, माएं हैं ।।
न ले जो इन्तकाम अब वो दिल नहीं है, संग है ।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है ।।

गिराँ बहुत है गो ये शब, सहर ज़रूर आएगी ।
हमें फरेब दे गई है दोस्तों की दुश्मनी ।।
वतन है अपना ज़ुद पे जब कहाँ की अम्न-दोस्ती ।
जहादो-काविशो-तअब है अब हमारी ज़िन्दगी ।।
लबों पे जंग का रजज़ दिलों में इक तरंग है ।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है ।।

खुदाये-ज़र ने भी लिए हैं बे-ज़रों से कुछ सबक ।
भरी है जिन के खून ने वतन की माँग में शफक ।।
गिरा है आज टूट के सिपहरे-ज़र तबक-तबक ।
हदीसे-इत्तिहाद है किताबे-दिल का हर वरक ।।
इस एकता पे चीन क्या, जहाने-अक्ल दंग है ।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है ।।

उड़ाओ परचमे-ज़फर, ज़मीं वतन की पाक हो ।
तुम्हारे अज़्मे बेमफ़र की दुश्मनों पे धाक हो ।।
तुम्हारी ज़र्ब से जिगर हिमालिया का चाक हो ।
उठो जो बाँध के कमर जहाने-ज़ुल्म खाक हो ।।

समझ लो साजे-जिन्दगी अजल की जलतरंग है।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है।।
चली है फौज सफ़शिकन बहादुरों की ईद है।
वो जाँ-फरोश बाँकपन जो अक्ल से बईद है।।
बराये मादरे-वतन जो जान दे, शहीद है।
बँधा है सर से यों कफन अजल भी महवे-दीद है।।
हरेक सीनए-तपाँ में जंग की उमंग है।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है।।
उलट दो चीन की सफें चखा दो ज़ुल्म का मज़ा।
बनें उदू की खंदकें उन्हीं की मरकदे जफ़ा।।
बहा है जो लद्दाख़ में वो खून रंग लाएगा।
हैं हेच सब मसर्रतें, है वक्त इन्तकाम का।।
हिमालिया की बर्फ भी तो आज सुर्ख रंग है।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है।।
उठाओ तेग हैदरी, चलाओ अर्जुनी कमाँ।
है नारए जवाहरी तुम्हारा मीरे कारवाँ।।
दिलों में आग लग चुकी, जला दो चीन का जहाँ।
हिमालिया पे फूट ही चुका नसीबे-दुश्मनाँ।।
बढ़ो कि चीनियों पै अरसए-हयात तंग है।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है।।
बहादुरो ज़बाँ पे बस सतेज़ ही का नाम हो।
मिटा दो चीन की हवस अजल का एहतमाम हो।।
जियो तो यूं कि हर नफस सकूने-दिल हराम हो।
चलो तो नग्मए-जरस सदाए-इन्तकाम हो।।
बता दो आज चीन को, कि जंग है तो जंग है।
उठो कि वक्ते-जंग है, उठो कि वक्ते-जंग है।।

# बादलों के पार से हिम पर्वतों ने फिर पुकारा

○

डा० शंभुनाथ सिंह

बादलों के पार से हिम-पर्वतों ने फिर पुकारा ।

मौन नीली घाटियाँ उत्तर दिशाकी हो गयी हैं,
घाटियों की तान अन्धी दस्तकों में खो गयी हैं ।
चीरती हिम-सागरों, आकाशकी गहराइयों को,
आ रही है दूरसे आवाज़ कोई बेसहारा ।।

जो वहन करती रही हैं देवताओं की ध्वजाएं,
उठ रहीं उन चोटियों से दर्दमें डूबी ऋचाएँ ।
देवदारु विशाल कम्पित हो जिसे दुहरा रहे हैं,
चीड़-वनमें गूँजता है फिर तुम्हारा नाम प्यारा ।।

याद फिर आने लगीं गन्धर्व-लोकों की कथाएँ,
नयनमें तिरने लगी हैं स्वप्न-पंखी अप्सराएँ ।
उठ रहीं इतिहास के उस पार जो अज्ञात ध्वनियाँ,
भर रहा उनकी प्रतिध्वनिसे समयका यह किनारा ।।

गीत अब झरते नहीं हैं किन्नरोंकी बाँसुरीसे ।
लौट आये मेघ यह सन्देश ले अलकापुरीसे--
स्वाधिकार-प्रमत्त मेरे यक्ष फिर तुम हो न जाना ।
झुक न जाये शीश यह, हिम का मुकुट जिस पर सँवारा ।

# फिर नए राष्ट्र ने भैरव राग गुंजाया है

**डा० शिव मंगल सिंह 'सुमन'**

आज़ाद देशकी प्रथम परीक्षा हुई शुरू,
कुरबानीका फिर नया ज़माना आया है।
फिर नयी चुनौती वहशी हूणोंकी आयी,
फिर नये राष्ट्र ने भैरवराग गुँजाया है।

हिमवान् हुआ घायल तो सागर हुंकारा
चालीस कोटि लहरोंसे फिर फुफकार उठी।
हर नौजवान सिर लेकर चला हथेलीपर,
बलिदानोंकी वेदीपर हवि धुधकार उठी।

घर-घरकी भट्ठीका ताप-क्रम तीव्र करो,
जिसमें तपकर सब भेदभावकी खोट गले।
फौलाद ढले! फैक्टरियोंसे फौलाद ढले!!

हर साल दिवालीपर मिट्टीके दीप जला,
हम अन्धकारसे लोहा लेते आये हैं।
इस साल जल उठे आहुतियोंके ज्योति-दीप,
घनघोर अमाके तार-तार थर्राये हैं।

हम कालकूट पीनेवाले प्रलयंकर हैं,
ताण्डवकी तालोंपर असुरोंको रौंदेंगे।
कल जिसको हमने दया-क्षमामय बुद्ध दिया,
उसको बम-बमकी गूँजोंमे थहरा देंगे।

हर भारतवासी जलती हुई मशाल बने,
हर कदम-कदमपर दुश्मनकी छाती दहले।
फौलाद ढले! फैक्टरियोंसे फौलाद ढले!!

माँ के लाडलो ! दूधकी कीमत अदा करो,
सिर पर केसरिया कफ़न बाँध झूमो, मचलो।
माताओ-बहनो ! दुर्गाचण्डी बनो आज,
महिषासुर के मद का मर्दन करने निकलो।

चामुण्डाके मुण्डों की माल अधूरी है,
काली के कर का खप्पर अब भी रीता है।
जो हौंस-हुमससे वरण मौत को करता है,
वह राष्ट्र अमर हो जाता, युग-युग जीता है।

हिमवान हिमालय के शीतल उच्छवासों में,
विस्फोटक ज्वालामुखी दग्ध-लावा उगले।
फौलाद ढले ! फैक्टरियोंसे फौलाद ढले !!

# करना है या मरना है

श्री शिव शास्त्री कानोडिया

देश प्रेम का दीप जलाओ, आज परीक्षा का दिन आया।
कफ़न बाँध कर बढ़े कारवाँ सब को खरा उतरना है।
करना है या मरना है।।

दुश्मन झाँक गया घर भीतर तोड़ हिमालय के द्वारे।
हम विदुला के बेटे! रानी झाँसी के साथी सारे।
जयमल, फत्ता, गोरा, बादल, गोबिन्द के पाँचों प्यारे।
ओ हमीर के हठी वंशजो! आओ सब मिल ललकारें।
बलिदानों को शीश झुकाओ, एक नया इतिहास बनाओ,
तूफ़ानों से टकरा कर भी आगे-आगे बढ़ना है—
पाँव न पीछे धरना है।

तुम निकलो तो सूरज निकले, हुंकारो डोले अम्बर।
तुम ठहरो तो सृष्टि साँस ले, भृकुटि तने तो प्रलयंकर।
जिधर बढ़ो तूफाँ शरमाये, झुक जाये पर्वत सागर।
शीश जहाँ अर्पण हो जाए, वहीं तीर्थ हो मंगलकर।
सिर देकर नव-तीर्थ बनाओ, आज रक्त का तिलक लगाओ,
त्याग वीरता से भारत का उपवन सुरभित करना है—
सब कुछ अर्पण करना है।

राणा सांगा, शिव, प्रताप का विक्रम भूल नहीं जाना।
झाला के अद्भुत सुत्याग को कभी न मन से बिसराना।

जिसका दुश्मन जीवित बैठा अच्छा उसका मर जाना।
सिर झुकने से सिर जाए, तो अच्छा है सिर का जाना।
गीता का सन्देश सुनाओ, घर-घर आल्हा-ऊदल गाओ।
बन कर के चाणक्य, शत्रु को हर चालों से छलना है--
वीरो हमें संभलना है!
शीश हथेली धरना है!
करना है या मरना है!

# छोड़ दो और बातें

○

**कुमारी शेफाली**

कवि-सम्मेलनों की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं हाथ बँटाने--
जहाँ नई इमारत बनानी है।

○

सभा में भाषणों की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं कारखाने में--
जहाँ उत्पादन बढ़ाना है।

○

शोक-सभाओं की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं शहीद के घर--
जहाँ मदद पहुंचानी है।

# हम भस्म तुम्हें कर डालेंगे, शोलों के पास नहीं आओ

○

श्री शेरजंग गर्ग

पावन भारत की सीमा पर,
बढ़ने वाले दुश्मन कायर,
तुम चूर-चूर हो जाओगे मत चट्टानों से टकराओ !

क्यों क्षुद्र दृष्टि से देख रहे भारत के मुकुट हिमालय को?
जीवन इतना बेमोल नहीं, पहले सोचो, फिर तनिक बढ़ो,
मरघट ही तुम्हें दिखाएगी, यह वीरों वाली पुण्य धरा,
इस धरती का कोई सपूत दुश्मन से पहले नहीं मरा,

सच अपनी जान बचा लो तुम,
है मरण-घड़ी यह, टालो तुम,
हम भस्म तुम्हें कर डालेंगे, शोलों के पास नहीं आओ !

क्या यही वीरता कहलाती, करके आलिंगन वार किया,
तुम ने भोले विश्वासों को लालच के कारण तोड़ दिया,
कर सके तनिक सन्तोष नहीं इस गुलशन की हरियाली पर,
क्या कभी उँड़ेला है तुम ने काजल उजली दीवाली पर,

यों तो हम सबके रक्षक हैं,
पर दुष्ट-जनों के भक्षक हैं,
अब तो कोई निस्तार नहीं अपनी करनी का फल पाओ !

यह राम कृष्ण की धरती है, शायद तुम भूल गए होंगे,
इस लिए अफीमी पीनक में अपने प्रतिकूल गए होंगे,
गांडीव उठाया अर्जुन ने दुर्गा ने भृकुटी तानी है,
भारत के बच्चे बच्चे में फिर जाग उठी कुर्बानी है,

उत्तर औ' दक्षिण जाग गए,
पूरब औ' पश्चिम जाग गए,
केवल तुम को ही सोना है, लो वार सहो औ' सो जाओ !
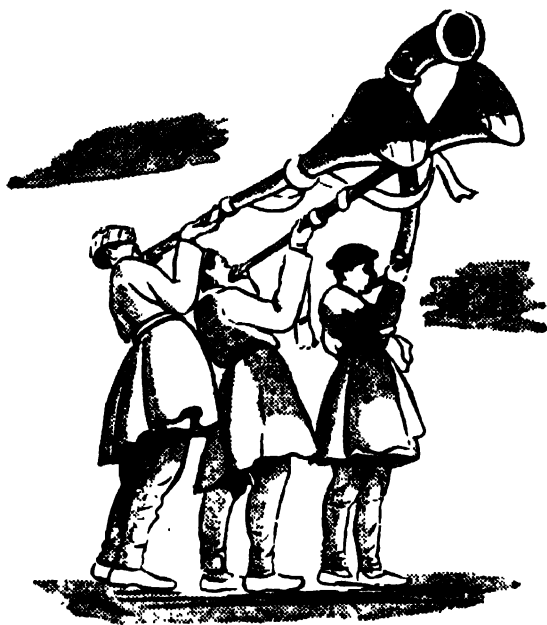
# स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा

श्री शैलेश मटियानी

अछोर-सिंधु-से बहो,
अडिग हिमाद्रि-से रहो,
अजेय आस्था लिए, अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा !

प्रतीक शौर्य का, तिरंग-ध्वज कभी झुके नहीं,
कीर्ति का उदीयमान् सूर्य-रथ रुके नहीं !
प्रशस्त वक्ष पर प्रचण्ड वज्र यदि गिरे, सहो—
मगर हरेक क्षण यही
अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा !

प्राण-मोह त्याग दो, स्वदेश की पुकार पर—
अभीत शीश दो, मगर अनेक सिर उतार कर !
बनो अदम्य अग्नि-ज्वाल, शत्रु-वंश को दहो !
दिशा-दिशा गुंजार दो,
अकम्प कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा,

अतीत कह रहा—भविष्य के सिंगार बन जियो !
महान् देश के महान् कर्णधार बन जियो !

शकारि देश के सपूत, शत्रु-दंश मत सहो !
अडोल एक लक्ष लो,
अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा ।

# यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है

O

**श्री श्याम बहादुर सिंह 'नम्र'**

'अरे चीनियो, सीमा छोड़ो', यही हमारा नारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

जाग रहा है सारा भारत जाग रहे सीमा के प्रहरी ;
जाग रहा नगराज हिमालय, जाग रही है गंगा-लहरी !
नैतिकता का खड्ग हाथ ले जाग रही है अब रणचण्डी,
जैसे तुम्हें निगल जानेको जाग रही है यमुना गहरी !
नागिन बन कर जाग उठी अब ब्रह्मपुत्र की धारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

कन्फ्यूशियस-मार्क्स की बातें भी तूने कर दीं अनजानी !
पंचशीलका गला घोंटना चाह रहा है तू अभिमानी !
जितने थे आदेश बुद्धके, तुमने सबको ठुकराया है !
आज सत्य के ऊपर तुमने फेर दिया धोखे का पानी !
अपने ही अतीत के आगे तेरा तो पौरुष हारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

सावधान लंकेश! राम फिर लेकर तीर-कमान जगे हैं !
अपना पीकिंग आज सम्हालो, पवनपुत्र हनुमान जगे हैं!
शंख-चक्र ले कृष्ण जगे हैं, भीम जगे हैं गदा सम्हाले !
रे दुर्योधन, गाण्डीव के अर्जुन के अभिमान जगे हैं !

शंकर ने अब नयन तीसरा अपना पुनः उघारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

राय पिथौरा भी ध्वनि-भेदी लिए तीर की धार जगे हैं।
अब फिर से राणा प्रताप लेकर अपनी तलवार जगे हैं।
युग-सीमा को तोड़ शिवाजी ने फिर से वाहिनी सँभाली।
रणचण्डी की पुत्री लक्ष्मीबाई के उद्गार जगे हैं।
जिनके वंशज पर अन्यायी ! तू ने प्रलय पुकारा है।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

भाई बनकर भी तूने भाई के ही घर तोड़ा ताला ।
भारत की हर उमर खौलती, नस-नस उगल रही है ज्वाला।
रिपु को सबक सिखा ही देंगे हम चोरी-सीनाज़ोरी का ।
दुश्मन का सिर काट काट कर गूंथेंगे चंडी की माला ।
जिसको मोम समझते हो वह एक तप्त अंगारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

जिस माटी में पल आज हम उसके हित सब कुछ झेलेंगे ।
अगर मौत आ जाए, तो उस से भी डट कर हम खेलेंगे ।
तुम सिक्किम, भूटान और आसाम हड़पना चाह रहे हो ।
सीमा तो सब ले ही लेंगे, तिब्बत को भी अब ले लेंगे ।
तुमने सत्य और मानवता के व्रत को ललकारा है !
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

# सिंहों की धरती

○

**श्री श्यामाचरण श्रीवास्तव**

यह अद्‌भुत धरती, सिंहों के शोणित से जिसका नाता है ।
हर कंकड़-पत्थर भी इसके वीरों की जय-जय गाता है ।।

आज यहां के शौर्य-सिन्धु में वीरों का तूफान उठा है ।
नाना-तांत्या-तुलाराम की रूहों का इन्सान उठा है ।।
बांध कफन हर नारी निकली, बनकर झांसी की मर्दानी ।
रूह फ़ूंकती निकल पड़ी ज्यों महाक्रांति की देवि भवानी ।।
रण-सिंहों के भैरव स्वर से गगनांचल गूंजा जाता है ।
यह अद्‌भुत धरती, सिंहों के शोणित से जिसका नाता है ।।

उमड़ पड़ा है ज्वार रोष का, उमड़ा ज्यों बादल अभिमानी ।
सैन्य सामने उमड़ा यौवन जैसे चढ़े नदी का पानी ।।
कसम शहीदों की खाकर जब भारत की उठ पड़ी जवानी ।
शत्रु न टिकने पाए भू पर, चीनी हो या पाकिस्तानी ।।
हर कलंक धोने को अपना यह शोणित बहता जाता है ।
यह अद्‌भुत धरती, सिंहों के शोणित से जिसका नाता है ।।

हम मर्यादा के पालक हैं, कभी कलंक न लगने देंगे ।
आंधी, बिजली, तूफानों में दुश्मन से हम लोहा लेंगे ।।
शौर्य हमारा देख समर में सिंहवाहिनी किलक उठेगी ।
और हमारी सिंह भुजाएं वज्र समान प्रहार करेंगी ।।
देख हमारा शक्ति-पुंज अब अरिदल भी कंप-कंप जाता है ।
यह अद्‌भुत धरती, सिंहों के शोणित से जिसका नाता है ।।

# मेरे हर बाँके जवान की तनी हुई संगीन है

○

श्री श्रीनिवास 'श्रीकान्त'

मैं भारत हूं मेरे पीछे सदियों का इतिहास है,
मुझको अपनी मंज़िल का, पूरा-पूरा अहसास है।

आर्यों से लेकर मुग़लों तक जो भी मुझपर आया है,
मेरे चेहरे पर उन सबके विश्वासों की छाया है।
जाने कैसा सागर है, मेरे मनकी गहराई में,
जो आता है, घुल जाता है, लहरों भरी इकाई में।
यह माना, मेरे स्वभाव की संस्कृति बड़ी पुरानी है,
यह माना, मेरा जीवन अब भूली हुई कहानी है ;
लेकिन मुझको अब भी अपनी सच्चाई पर मान है,
मुझे पता है, कौन आदमी और कौन शैतान है।

एक सत्य पर चार युगों का बोझ उठाता आया हूं,
जो भी मिला मुझे मैं उसको गले लगाता आया हूं।
कहने को धरती का टुकड़ा, समझो तो इन्सान हूं,
शान्ति चाहता हूं, शायद मैं इसी लिए 'नादान' हूं।
लेकिन यह मत समझो मेरी भुजा शक्ति से हीन है,
मेरे हर बाँके जवान की तनी हुई संगीन है !
मेरी नस-नस में बहता है गंगा-यमुना का पानी,
मेरी आंखों में नाचा करती है झाँसी की रानी।
फिर भी मुझ को गाँधी के आदर्शों पर विश्वास है,
मुझको अपनी मंज़िल का पूरा-पूरा अहसास है ।।

जिसने झेला हो न महाभारत के हाहाकार को,
वह क्या जाने इतिहासों की करुणाभरी पुकार को।
जिसने भुला दिया हो पिछले महायुद्ध की बात को,
जो न देख पाया हो आगे आने वाली रात को;
जिसके अन्दर सत्ता-लोलुप शैतानों का वास हो,
जिसके अधरों पर आदम की गुहा-मानवी प्यास हो।
जो इस युग में रह कर भी इन्सान न हो, हैवान हो,
वह चाहे 'हिटलर' हो कोई या चंगेजी-शान हो—
उसका झूठा दम्भ मिटाना, यही हमारा धर्म है,
उसके आगे शीश झुकाना सब से बड़ा अधर्म है।

साम्यवाद के खूनी बच्चो छोड़ो तुम अभिमान को,
तुम्हें समझना होगा पहले दुनिया में इन्सान को!
लड़ना है तो लड़ो भूख से कंगाली की आग से,
भला चाहते हो सबका तो बचो युद्ध की आग से!
अभी एशिया मुक्त हुआ है बरसों की बरबादी से,
तुम को क्या खतरा है बोलो, भारत की आज़ादी से?
'जिओ और जीने दो सबको' यही हमारा नारा है!
हमने हिम-गिरि के शिखरों से कितनी बारतपुकारा है!!

# मैं सैनिक बन जाऊंगा

○

श्रीमती सत्यव्रती शर्मा

सेनानी वर्दी पहनूंगा, बूट करेंगे ठक-ठक-ठक ।
कंधे से बंदूक लगेगी, मुन्नी देखेगी इक-टक ।
दुश्मन का मैं दमन करूंगा, जय की जोत जगाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

चुन्नू मुन्नू तुम भी आओ, सेना एक सजायेंगे ।
हिंद देश के प्रहरी हैं हम, सीमा पर डट जायेंगे ।
तुम रिपु-दल की थाह लगाना, मैं बंदूक चलाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

मुन्नी हमको तिलक करो तुम, आज जा रहे हम रण में ।
दुश्मन को पीछे पटका दें, यही लालसा है मन में ।
तन-मन का मैं अर्घ्य चढ़ा कर, माँ का मान बढ़ाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

हिम-मंडित यह शुभ्र हिमालय, ऊँचा भाल हमारा है ।
नीच शत्रु ने मलिन आँख से, इसको आज निहारा है ।
अरि मर्दन कर उसी रक्त से, माँ को तिलक चढ़ाऊँगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

# भारतसे टकराने वाला मिट्टी में मिल जाएगा

○

**श्री सरस्वती कुमार 'दीपक'**

हम सबको रक्षा करनी है, लड़ते हुए जवानों की;
और हमें रखवाली करनी, अन्न-भरे खलिहानों की;
तभी योजनाओं का रथ, आगे-आगे बढ़ पाएगा !
तभी मुक्ति-अभिमन्यु हमारा, विजयकेतु फहराएगा।
भूखे हाथों से मशीन का पहिया नहीं चला करता;
भूखे-प्यासे हाथों में हल, बार-बार उछला करता;
भूखे सैनिक के स्वर से, कब अरि का उर दहला करता !
भूखे देशों का अम्बर में केतु नहीं मचला करता।
हमको फसल नहीं कटवानी, सरहद पर इन्सानों की,
अग्नि-वृष्टि से हमें सृष्टि सुलगानी है शैतानों की——
तभी हमारी सत्यकथा को सारा जग पढ़ पाएगा !
देश हमारा गौरव के सोपानों पर चढ़ पाएगा।
संगीनों की नोक, कथाएँ कब लिखती अनुराग की;
हिम शिखरों पर चला बहाने दुश्मन सरिता आग की;
हम पद्मिनियों के बेटे हैं, आदत रण के फाग की!
अपनी धरती पर उगती है फसल हमेशा त्याग की।
कफन बाँध हम घर से निकले, होड़ लगी बलिदानों की;
जन्मभूमि हित तन, मन, धन देने वाले दीवानों की;
देखें कौन खोलकर सीना, भारत से भिड़ पाएगा।
हिमगिरि से टकराने वाला मिट्टी में मिल जाएगा।

○

# सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम !

श्री सागर निज़ामी

चलेगा तुम्हीं से शुजाअत का नाम, सलाम, ऐ शहीदाने-नेफा सलाम !

अमर है, अमर है तुम्हारा मुकाम, है कायम तुम्हींसे वफाका निजाम ।
हुए मौत से बढ़ के तुम हमकलाम, है जिन्दा तुम्हीं से शुजाअतका नाम ।
पिया तुमने हँसकर शहादत का जाम ।
सलाम, अर्द शहीदाने-नेफा सलाम ।।

वो लिपटी हुई बर्फ में चोटियाँ, वो संगीन खामोश ऊँचाइयाँ ।
वो पुरखार राहें वो पहनाइयाँ, रवाँ सरफरोशों का वह कारवाँ ।
न खुरशीदे-ताजा न माहे-तमाम ।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

वो हुब्बे वतन की दिलों में उमंग, शहादतका जज़्बा, वफाकी तरंग ।
जवानोंकी लाशें वो मैदाने-जंग, कफन बर्फकी चादरे आब रंग ।।
वो चारों तरफ वहशिये ज़र्दफाम ।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

वो हासिद, मुनाफ़िक वो कज्ज़ाके ज़र्द, हुए जिनके परतौ से आफाक ज़र्द ।
दरोबाम मेहराब औ' ताक जर्द, हुआ जिनके शोलों से चकमाक ज़र्द ।
गुलामी से बदतर है जिनका निज़ाम ।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

तुम अपने वतनपर फिदा हो गये, तुम अपने चमनपर फना हो गये।
जहां में शहीदे-वफ़ा हो गये, मिटे इस तरह रहनुमाँ हो गये।
कदम चूमती है बक़ा-ए-दवाम।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

जवानी के चेहरेकी तलअत थे तुम, मुहब्बत के फूलोंकी नक़हत थे तुम।
सरापा-ए-रूहे-शराफत थे तुम, बहादुर थे फ़ख़रे शुजाअत थे तुम ।।
चलेगा तुम्हीं से शुजाअत का नाम।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

है नेफा की धरती पै तुमसे शबाब, लहू से तुम्हारे है सहरा गुलाब।
जवानी है सौ रूप में बेनकाब, कभी है शफक औ' कभी माहताब ।।
छलक जाए जैसे मय-ए-लालाफाम ।
सलाम, अय शहीदान-नेफा सलाम ।।

तुम्हारी समाधि पे आकर बहार, करेंगी गुलों की जवानी निसार ।
लुटाएंगी किरनें चंबेली के हार, झुकाएगी सर अज़मते रोज़गार ।।
सितारों की चादर चढ़ायेगी शाम।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

तुम्हारे लहू से जो है गुलफिशाँ, न आएगी उस गुलसिताँ में खिज़ाँ ।
अबद तक रहेगा तुम्हारा निशाँ, अमर है वतन और तुम जा विदाँ ।।
अबद से भी आगे तुम्हारा मुकाम।
सलाम, अय शहीदाने-नेफा सलाम ।।

○

# वतन की आबरू खतरे में है, होशियार हो जाओ!

○

**श्री साहिर लुधियानवी**

वतन की आबरू खतरे में है, होशियार हो जाओ,
हमारे इम्तहाँ का वक्त है, तैयार हो जाओ !

हमारी सरहदों पर खून बहता है, जवानों का,
हुआ जाता है दिल छलनी हिमालय की चटानों का।
उठो रुख फेर दो दुश्मन की तोपोंके दहानोंका,
वतनकी सरहदों पर आहिनी दीवार हो जाओ ॥

वह जिनको सादगी में हमने आँखों पर बिठाया था,
वह जिनको भाई कह कर हमने सीने से लगाया था।
वह जिनकी गरदनों में हार बाहोंका पहनाया था,
अब उनकी गरदनोंके वास्ते तलवार हो जाओ ॥

न हम इस वक्त हिन्दू हैं, न मुस्लिम हैं, न ईसाई,
अगर कुछ हैं तो हैं इस देश, इस धरती के शैदाई।
इसीको ज़िन्दगी देंगे, इसी से ज़िन्दगी पाई,
लहूके रंग से लिक्खा हुआ इकरार हो जाओ ॥

खबर रखना, कोई ग़द्दार साज़िश कर नहीं पाये,
नज़र रखना, कोई ज़ालिम तिजोरी भर नहीं पाये।
हमारी कौम पर तारीख तोहमत धर नहीं पाये,
वतन-दुश्मन-दरिन्दों के लिए ललकार हो जाओ ॥

# लुटेरों और चोरों को सज़ा देने का वक्त आया

○

**श्री साहिर होशियारपुरी**

उदूये-अम्न को दरसे फना देनेका वक्त आया,
सितम ईजादकी हस्ती मिटा देनेका वक्त आया।

वतन पर जान की बाज़ी लगा देने का वक्त आया।
हमें लद्दाख में दादे-वफा देनेका वक्त आया।

जिसे अपना समझकर हमने शाने-ज़िन्दगी बख्शी,
उसीको बज़्मे हस्तीसे उठा देने का वक्त आया।

जो आँखें आतशे इब्लीसियतके तीर बरसायें,
उन आँखों को जहन्नुममें जला देने का वक्त आया।

जो दिल जंगो-जदलका अज़्म नाहंजार रखता हो,
उसे ख्वाबे-मुसलसल में सुला देने का वक्त आया।

जो गर्दन नश्शये-नख्वत में गर्दूं से भी टक्कर ले,
उसी गर्दनको कदमों पर झुका देने का वक्त आया।

जो ज़ालिम हैं, जो ग़ासिब हैं, जो मोहसिन-कुश जो कातिल हैं,
उन्हें रस्मे वफादारी सिखा देने का वक्त आया।

उठो ए हिन्दियो! इंसाफकी तलवार लहराकर,
लुटेरों और चोरों को सज़ा देने का वक्त आया।

जिसे सरपर चढ़ा रक्खा था हमने मिसले-गुल 'साहिर',
उसीको आज नज़रों से गिरा देने का वक्त आया।

# सुनें, सुनें, सब सुनें राष्ट्र-जन ऊंचा है भारत का भाल

○

**स्व० सियारामशरण गुप्त**

ऊँचा है नगराज हिमालय मानदंड पृथ्वीतल का,
ध्यान-समाधि-निलय मानो वह निम्न भूमि के चल जल का।
उद्यत था रावण कि उठा ले उसका शंभु शिखर कैलास,
आज आत्मरिपु कुछ वैसा ही बढ़-चढ़ कर कर रहा प्रयास।
स्वयं उसीके लिए विघातक यह दुष्कृत है निश्चय ही,
भारत के जन-जन में दीपित शिव-शंकर का नयन विभास।
ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में नव-जीवन जागा-छलका,
मन-मन में नगराज हिमालय मानदंड पृथ्वीतल का।
घात लगाये था चुप-चुप जो महा लोभ का जो विष व्याल,
सहसा अपना फन फैला कर झपटा हम पर कुटिल कराल।
डरते नहीं कदापि किसीसे, हम निर्वैर अमृतधारी,
सदा मंगलाकांक्षी सबके, नहीं किसीके अपकारी।
बन्धु हमारे देश-देश में, जन-जन में हैं सभी कहीं,
हम पर जो वह करे आक्रमण, उसके लिए भयंकारी।
आक्रामक कोई हों, देंगे यथायोग्य उत्तर तत्काल
घात लगाए था चुप-चुप जो महा लोभ का विषधर व्याल।
यह आघात उधर, तत्क्षण ही नव परिवर्तन हुआ इधर,
पुरुष सो रहा था जो हम में जाग्रत है—उद्यत उठ कर,।
अनुभव किया समग्र राष्ट्र ने किस भ्रम में हम थे जकड़े,
कहाँ गये वे जाति-धर्म-दल भाषा-भाषा के झगड़े।
भारत नहीं मृत्तिका का ही, एक भाव वह एक स्वरूप,
जितने अवयव, ये अथवा वे, आपस में नग-तुल्य ज।

चोट पड़ी, तल उपल टूटकर जल फूटा, उछला निर्झर,
यह आघात उधर, तत्क्षण ही नव परिवर्तन हुआ इधर।
मातृ-भाव का चिर साधक है यह गौतम-गांधी का देश,
नहीं वीर ही, महावीर भी बनना है इसका उद्देश्य।
फिर भी युद्ध चाहते हैं जो उन्हें युद्ध ही हम देंगे,
कायर बनकर कहीं पीठ पर घाव कदापि नहीं लेंगे।
शूर हमारे हिमगिरि पर वे जूझे अभी असम सम में,
श्रद्धा सुमन सदा निज पर के उन पर सन्तत बरसेंगे।
पद्म हमारे इस कर में है उसमें चक्र अमोघ अशेष,
मातृभाव का चिर साधक है यह गांधी गौतम का देश।
स्वयं प्राप्त इस ओर समर में भारत का यह है उद्घोष,
जूझेंगे विगतज्वर रहकर निस्संताप, बिना आक्रोश।
लेंगे नहीं किसी का कण भर, अपना रंच नहीं देंगे,
शौर्य हमारा क्रौर्य नहीं है, हो कोई कितना ही क्रूर।
जीवन के दोनों तट अपने, रक्खेंगे निर्मल निर्दोष,
स्वयं प्राप्त इस घोर समर में, भारत का है यह उद्घोष।
नहीं आक्रमण हिमगिरि पर यह, उसे निगलना शक्य किसे?
भारत में वह कौन, शत्रु ने किया नहीं आक्रान्त जिसे।
आज हमारे समर-क्षेत्र हैं, घर घर ग्रामनगर निःशेष,
लड़ना है जन-जन को बढ़ कर रहें न क्यों कितने ही क्लेश।
अपने खेत स्वेद के जल से, आज सींचने हैं हमको,
नहीं भोग का समय चाहिए आज उपार्जन ही सविशेष।
द्वार सभीके रण आ पहुँचा, दें स्वकर्म कौशल्य इसे,
भारत में वह कौन, शत्रु ने किया नहीं आक्रांत जिसे।
सावधान सुन लें सब सुन लें, झुक न जाय भारत का भाल,
कठिन काल सम्मुख है, दें हम उसके तांडव में द्रुत ताल।

# सीमा के सिपाही के नाम !

○

**श्री सुमनेश जोशी**

माँ का प्यार, बहिन की ममता,
शिशुओं का सुख छोड़ कर !
यौवन में यौवन के सपनों से
अपना मुख मोड़ कर !

आँधी सा चल पड़ा,
हिमानी घाटी में भूचाल सा !
तन कर खड़ा राष्ट्र-रक्षा को
तू फौलादी ढाल सा !

ऊबड़-खाबड़ पंथ राह का
तू अनजाना आज है
लाँघ रहा हिम-शिखर
हाथ में तेरे माँ की लाज है !
सर पर कफन, कफन वाला सर
लिए हथेली पर अपने
नेफा की धरती पर करने
चला सत्य माँ के सपने !

शोणित का अभिषेक आज
करने पर्वत कैलाश पर
प्रलयंकर को चला जगाने
मन के दृढ़ विश्वास पर !
बलि-पंथी ! तू आज प्रलय के
पर्दे स्वयं हटाता चल !
हिमगिरि के प्राणों में सोया
ज्वालामुखी जगाता चल !

(२)

अगर विरह की आग
भड़क कर जले उसे जल जाने दे ।
अगर मिलन की बेलाएं भी
टलें आज, टल जाने दे ।

आज गरजती तोपों से
करना तुझ को आलिंगन है ।
आगे बढ़कर महामृत्यु को
देना विष का चुम्बन है ।

आज मरण त्यौहार राष्ट्र ने
युग-युग बाद मनाया है !
आज जवानी को जौहर
दिखलाने का दिन आया है ।

(३)

मंजिल दूर, पंथ बीहड़ है
तू झंझा सा बढ़ता जा
मृत्युंजय तू ! आज
चीनियों की सेना पर
चढ़ता जा
तांडव कर नेफा के रण में
प्रलयंकर की तानों पर
तुझे रक्त से लिखना है
इतिहास श्वेत चट्टानों पर

प्रलय-पुत्र तू आज
उगलता चल
शोणित की ज्वाला को
भस्मसात् करता चल
पग पग पर चीनी
हैवानों को।

(४)

जूझ रहा तू—तेरे पीछे
पूरा हिन्दुस्तान है
तेरे दृढ़ निश्चय में ही
अगणित लोगों की तान है

राष्ट्र-धर्म की
अमर-ज्योति से
जग-मग पंथ तुम्हारा हो
विजय या कि फिर
बाण मृत्यु का
यही तुम्हारा नारा हो
खड़ा राष्ट्र कर रहा प्रतीक्षा
जयमाला पहनाने को
मरण-पर्व के बाद
विजय का उत्सव
नया मनाने को।
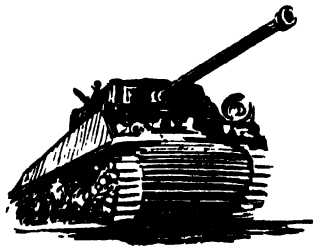
## यहां हर जन बलिदानी है

○

श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा

हमारी यही कहानी है,
राष्ट्र की यही कहानी है।

यहाँ हाथों में पलता त्याग,
हृदय से लुटता है अनुराग,
मरण का पर्व मनाते हम,
यहाँ हर जन बलिदानी है।

अहिंसा का ही शक्ति प्रसार,
सत्य का हम करते व्यवहार,
किन्तु यदि कोई दे व्यवधान
कला रण की भी जानी है।

साधना हम करते चुप-चाप,
छेड़ने पर देते हैं श्राप,
न सह सकते हम अत्याचार,
शीश देने की ठानी है।

देश की यही कहानी है!
यहाँ हर जन बलिदानी है, राष्ट्र की यही कहानी है।

○

# तेरे श्वासों में ज्वाला हो, अधरों में मधुमादन

○

**श्री सुमित्रानन्दन पन्त**

जागो, पंचशील की धरणी, जीवन शौर्य जगाओ।
भू की अपराजेय चेतने, नव युग चरण बढ़ाओ !

तेरे उन्मद पद चालन से कँपे मृत्यु, भय, संशय,
अंगभंगि से जीवन गरिमा फूटे चिर मंगलमय,
हाव-भाव से विजय हर्ष, नव जनोत्कर्ष बरसाओ !

तेरे श्वासों में ज्वाला हो, अधरों में मधुमादन,
भ्रूविलास बलिदान दीप्त चितवन हो नव संजीवन !
इंगित पर जन-शीश झुकें, जन-शीश उठें, हे गाओ !

तेरी हिंसा रहे अहिंसक जन-जीवन के रण में,
बजे सत्य की भेरी, दुविधा मानो चीर जन मन में,
मृत्यु भीति हर, आत्म तेज भर, जन मन दैन्य मिटाओ !

रूढ़ि रीति के मुण्ड हृदय में ज्योति खड्ग हो कर में,
पदतल पर नत युग-दानव हो अरि का रुधिर अधर में,
रक्त पात्र से फिर नव चेतन अमृत-ज्वाल छलकाओ !

युग-युग का नैष्कर्म्य, नियति भय, जीवन विरति तमस हर,
आत्मा का अमरत्व जगा फिर जीवन मन के भीतर,
हे युग-युग सम्भवे, विश्व को नव सन्देश सुनाओ !

देख रहा मैं काल ध्वंस, कट रहे युगों के बन्धन,
उर-उर में मच रहा महाभारत—यह युग परिवर्तन,
कोटि कण्ठ मिल कर 'वन्दे मातरम्' निनाद गुँजाओ !

कांप उठे युग-युग के भूधर डूब रहा तट सागर,
गरज उठा जन उर-अम्बर मृत्युंजय इच्छा से भर,
विद्युल्लासिनि उठो, इन्द्रधनु-प्रभ तिरंग फहराओ !

हिमगिरि तेरा अविजित प्रहरी भू इतिहास बताता,
अडिग बज्र प्राचीर तुल्य वह—दृढ़ भौगोलिक नाता,
धधका ज्वालामुखी सदृश अब वह हिम से भस्मावृत,

ताण्डव नृत्य निरत फिर शंकर जगा देश चिर निद्रित,
भारत की दुर्धर्ष शिखे, जन-जीवन-भीति भगाओ !
तुहिन शृंग बज उठे तूर्य बन, लो, भू-गगन निनादित,

बुद्धिहीन अरि फिर अंगद पण भारत से पद मर्दित !
स्त्री नर, तन मन धन यौवन की आहुति देने आओ,
रक्त दान का पुण्य पर्व यह भू की प्यास बुझाओ !

जागो, सहजीवन प्रिय धरणी, नवयुग चरण बढ़ाओ,
ओ जन भू की शान्ति पीठ, फिर जीवन शौर्य जगाओ !

# हिमालय से आ रही पुकार, रहो तैयार, रहो तैयार !

श्री सोहनलाल द्विवेदी

गूँजती है ध्वनि बारम्बार, रहो तैयार रहो तैयार !
कहीं लुट जाय न अपना ताज,
कहीं लुट जाय न अपना राज,
खुल गया दुनिया भर में राज़,
शत्रु है अपना धोखेबाज़ !
हिमालय से आ रही पुकार,
गूँजती है ध्वनि बारम्बार, रहो तैयार, रहो तैयार !

न चलने देना कोई चाल,
न गलने देना कोई दाल,
न झुकने देना माँ का भाल,
न चुकने देना माँ का ख्याल,
आज इस पार या कि उस पार,
हिमालय से आ रही पुकार, रहो तैयार, रहो तैयार !

हिमालय की मत भूलो आह,
हिमालय की मत भूलो दाह,
हिमालय से आ रही पुकार,
हिमालय की मत भूलो चाह,
न जब तक खुले विजय का द्वार
हिमालय की मत भूलो राह, रहो तैयार, रहो तैयार ।

# ढोल सिपाहिया वतन दी जित्त के आवीं जंग

○

**श्री हजारा सिंह मुश्ताक**

अज्ज डुब्बे चन्द पियार दे, वरत गया अंधेर
अज्ज ना अम्बर जापदा, फुल्लाँ भरी चंगेर
अज्ज फुल्लाँ दे कालजे, भखदे ज्यों अंगियार
अज्ज शिकारी वेख के, कलियाँ खावन खार
अज्ज इस चंचल पौन ने, छोए ने इयूं वैण
रोंदी वीर विछोड़ के, जिवें निकरमण भैण
अज्ज गंगा दी लहर चों, उट्ठी कूक पुकार
उट्ठे ! कोई गभरू, गावे नाल पियार
'मोहि मरन का चाऊ है, मराँ ताँ हर के दुआर
पतिहर पूछे कौण है, पड़ा हमारे बार ।'

अणखी उच्च हिमालिया, चिट्टी जिस दी पग्ग
चिट्टी जिस दी पग्ग नूँ, दाग न जाए लग्ग
चुक चुक अड्डियाँ वेखदा, अज परवत कैलाश
उट्ठे कोई भगत सिंह, उट्ठे कोई सुभाष
अज्ज चंगियाड़े छड्डदा, शिवजी दा तरशूल
मौत है जीवन वंडदी, जीवन दे अमकूल
दिल्ल ते सट्टाँ मारके, गैरत करे सुचेत
जीवन जोगे मरन दा, मर के दसदे भेत
'सूरा सो पहिचाणिए जो लड़े दीन के हेत,
पुरजा पुरजा कट मरे, कबहुँ न छाडे खेत'

सी तेल जिन्हां लई चोइग्रा, ग्रज जड़ीं तेल पए चोण
'हत्थीं बाज करारियां, वैरी मित्त न होण'
सिर ते सट्टाँ पैण ना, वाहो वाह जद तीक
किल्ल कदी ना बैठदा, ग्रापणी थाँ ते ठीक
गरम लोहे नूँ कुट्ट के, ग्रापनी मर्जी नाल
चाहे बणाए तेग कोई, चाहे बणाए ढाल
नूर पिता दी ग्रक्ख दा, माँ दा नींगर चन्द
हस्स हस्स साली मौत नूं इंज सुणाए छंद
'जिस मरणे ते जग डरे, मेरे मन ग्रानन्द
मरने ही ते पाइए, पूरण परमानन्द ।'

तोरन लई रण वीर नूँ, कट्ठा होया म्हैण
सुखणां सुक्ख सुक्ख वीर तों, मोती वारे भैण
सज्ज विग्राही नार नें, ग्राख्या लाह के संग
ढोल सिपाहिया वतन दी, जित्त के ग्रावीं जंग
माँ दी ममता दस्सेया, जीवन दा मज़मून
पुतरा मेरे दुद्ध दा, तूँ करीं न किधरे खून
किहा पिता ने पुत्त नूँ, ऐ जीवन दे नूर
दस्से शांति-पुंज ने, जीवन दे दसतूर
'जननी जने तो भगत जन, के दाता के सूर
नहीं तो जननी बाँझ रहे, काहे गवाए नूर ।'

# धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

उँगली पकड़ चलाया जिस को, पाल-पोष कर किया जवान।
वही चीन चढ़ कर आया है हितकारी के लेने प्राण।
पर यह भारत जीर्ण नहीं है, इस में भी है शौर्य महान्।
भारत की सीमा पर रिपु का रह न सकेगा नाम-निशान।
भारत समरभूमि में आया सज कर अब हथियारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

पता नहीं था भाई बन कर घुस आए जहरीले नाग।
प्रकट हुए प्रकृत-स्वरूप में कपट-केंचुली को अब त्याग।
गीत प्रीत के गाने वाले उगल रहे तोपों से आग।
हिमगिरि के शृंगों पर हम से खेल रहे लोहू की फाग।
हमें सुलाए रखा शत्रु ने कपट-भरे व्यवहारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

उपकारों का बदला उस ने दिया अचानक करके वार।
चढ़ा हमारी सीमा पर, ले अगणित सेना, शस्त्र अपार।
थे तैयार नहीं हम रण को पाई कुछ प्रारम्भिक हार।
कायर नहीं भारतीय हैं, देख चुका इस को संसार।
बदला लेगा निश्चय जानो, भारत इन हत्यारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

नए चीन को मित्र मान कर किया सतत ही हमने प्यार ।
शब्द हमारे गूंजे जग में बन कर उस के पैरोकार ।
गले लगाया हमने उस को शंकित था जिस से संसार ।
किसे पता था कभी डसेगा, विषधर बन कर, उर का हार ।
ऋणी चीन का रोम-रोम है, भारत के उपकारों से ।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से ।

टिड्डीदल की तरह हिमालय पर घँस आया कपटी चीन ।
माना केवल संख्या-बल से कई चौकियां ली थीं छीन ।
पर न करें प्रतिकार, नहीं हैं हम भी इतने साहसहीन ।
अपनी भूमि चीन से वापस छीनेगा भारत स्वाधीन ।
डरा नहीं सकता रिपु हम को टैंकों या बममारों से ।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से ।

राज-मुकुट भारत का हिमगिरि इस पर रखे चीन ने पाँव ।
चले गए हैं आज हाथ से कुछ छोटे-छोटे से गाँव ।
हुए हिंद के उर में इस से कभी न भरने वाले घाव ।
भारत के कोने-कोने में जागा प्रचुर समर का चाव ।
हिम्मत भारत हार न सकता कुछ प्रारंभिक हारों से ।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से ।

दिया प्रथम बलिदान जिन्होंने उन में थे दधीचि के प्राण ।
होगा उनकी अमर अस्थियों से अब वज्रों का निर्माण ।
भारत का संकल्प अड़ा है रिपु के सम्मुख बन चट्टान ।
क्रूर आसुरी बल पर विजयी होगा भारत का बलिदान ।
बढ़े कदम पीछे न हटेंगे रिपु के प्रबल प्रहारों से ।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से ।

भारत का पुरुषार्थ करवटें लेकर आज उठा है जाग।
भारत के प्रत्येक हृदय में धधक उठी है भीषण आग।
भारत के हर नगर-ग्राम में आज छिड़ा है रण का राग।
भारत के उज्ज्वल यश को हम लगने देंगे कभी न दाग।
कस कर कमर बढ़े रण-बाँके लड़ने इन बटमारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

सिंह समान उठा कर मस्तक भारत सहसा उठा दहाड़।
अब डालेगा पामर रिपु के दुस्साहस का सीना फाड़!
रोक न सकते इस की गति को नदी, घाटियाँ और पहाड़।
रिपु की राज्य-लालसा को अब देंगे हम धरती में गाड़।
मुक्त भूमि भारत की होगी रिपु के अत्याचारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

आज देश की जीवन-गति में नया सुनिश्चित आया मोड़।
समरभूमि में शौर्य प्रदर्शित करने की तरुणों में होड़।
लोहा लेने चले शत्रु से, जग की ममता-माया छोड़।
हिमगिरि के शिखरों पर गूंजे है प्रचंड तांडव के तोड़।
घाटी घाटी गूंज उठी है वीरों की हुंकारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

कायर नहीं देश भारत है, नहीं प्रलय से भी भयभीत।
उज्ज्वल इसका वर्तमान है, उज्ज्वल इसका रहा अतीत।
रोक नहीं सकते वीरों को आँधी, वर्षा, ज्वाला, शीत।
भारत के अदम्य पौरुष की निश्चय होगी अंतिम जीत।
ज्वार जोश का नहीं रुकेगा गोलों की बौछारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

# चल मर्दाने सीना ताने

○

डा० हरिवंश राय 'बच्चन'

चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाँव बढ़ाते, मन मुस्काते, गाते गीत।

एक हमारा देश, हमारा
वेष, हमारी क़ौम, हमारी
मंज़िल, हम किस से भयभीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाँव बढ़ाते, मन मुस्काते, गाते गीत।

हम भारत की अमर जवानी
सागर की लहरें लासानी
गंग-जमुन के निर्मल पानी
हिमगिरि की ऊँची पेशानी
सब के रक्षक सबके मीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाँव बढ़ाते, मन मुस्काते, गाते गीत।

जग के पथ पर जो न रुकेगा
जो न झुकेगा, जो न मुड़ेगा
उसका जीवन, उसकी जीत।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाँव बढ़ाते, मन मुस्काते, गाते गीत।

# यह हमारा देश है

○

श्री हेम बरुश्रा

पार करके काल का विस्तार
जिसके विभा-उज्ज्वल-भाल की किरनें कढ़ीं !
नदी वन पर्वत गुहाएं शिखर कितने लांघकर जिसने
गिरा ऐसी गढ़ी अपनी कि जैसे शंखध्वनि हो !
शंखध्वनि यह प्राण में गूँजी युगों के
जगा कर नित नया और महान् जीवन !
आज सुनता हूं उसी का कोटि प्राणों में
तरल झंकारवाही एक आंदोलन,
देखता हूं खून की दीवार ही जैसे खड़ी है एक
जिसकी ओट में निष्कंप दीपक जल रहा बलिदान का,
स्नेह जिस में तरल तेजस्-प्राण का, और सपना आँख में
स्वाधीनता का उच्च इतना
देश का सर्वस्व मेरा हिमालय है उच्च जितना !!
यह हमारा देश है—
मुक्त-ज्योति प्रभात की महिमा यहाँ
स्वर्ण-दीपित-ज्ञान की गरमा यहाँ : यहीं संस्कृति संगमों में स्नान कर
इतिहास मानव का हुआ है भास्वर !!
गगनचुम्बी महत् यह सपना, यह हिमालय का मुकुट अपना
ब्रह्मपुत्र प्रचंड, गंगा, सिन्धु जिसका सब समेटे
समय की प्राचीर को अपने प्रवाहों में लपेटे, गा रही हैं गीत—
यह हमारा देश है !

रक्त ग्राभा स्यमंतक मणि यह हमारी
इसे रंग कर प्राण के रंग से रखेंगे हम हृदय की कंदरा में !
यह हमारा देश है !
यह महामानव उदार्ध-हम गान जीवन के यहां पर गा रहे,
इस लहरते गीत के स्वर कोटि मानव-प्राण-मन पर छा रहे ।

यह हमारा देश है—
यह नदी ग्रपनी । इसी के तीर पर फूटी प्रभा विज्ञान की—
यह उषाधारा करे ग्रभिषिक्त
जीवन महासागर में भरे जागृति परम ग्रभिमान की;
जागे सँदेशा यह कि
"ग्रपने पास सूरज, चाँद, सागर क्या नहीं है ?
यदि कहीं है शान्त शक्ति-प्रचंड मानवता यहीं है ।"
हम प्रबल हैं, प्रेम हममें है, सत्य ग्रपनी ग्राँख में है प्रज्वलित
देखते हैं स्नेह भीगे स्वर्ण सपने हम
मानते हैं कष्ट जग के सदा ग्रपने हम
ग्राज सीमा पर हमारे सैनिकों के मन, विकल हैं जिस लिए
वही ग्राकांक्षा हमें भी देश भर व्याकुल किए !
यह हमारा देश है ! इसमें कभी जीवन न बुझने पाएगा
बादल निराशा का कभी इसमें न घिरने पाएगा
यह हमारा देश है ! इसका भविष्यत् ठीक है !
रक्त की गंगा बहा देना यहाँ की लीक है
इस महामानव उदधि में ग्राज बेशक ज्वार ग्राया है
किन्तु इसका मन नहीं उद्भ्रान्त है । युद्ध करते हुए भी यह शांत है
जप में निरत रुद्राक्ष की माला सरीखा
हवि समर्पित यज्ञ की ज्वाला सरीखा !
यह हमारा देश है !

रूपान्तरकार : श्री भवानी प्रसाद मिश्र